उपयोगी साहित्य-माला

महिलाएँ और ज्योतिष

ASTROLOGY FOR WOMEN

महिलाओं सम्बन्धी फलित ज्योतिष

सामयिक विषयों से परिपूर्ण

पुस्तक-परिचय

प्रस्तुत पुस्तक केवल महिलाओं के सम्वन्ध में ज्योतिष-साहित्य की एक मौलिक रचना है। पुरुष जातक के आधार पर महिलाओं की जन्म-कुण्डली का अध्ययन और निष्कर्ष सही नहीं होता।

पुस्तक में महिलाओं के सम्वन्ध में
रोचक और उपयोगी सामग्री

- ☐ **नारी-शरीर के शुभाशुभ लक्षण**
- ☐ **दाम्पत्य जीवन और प्रेम**
- ☐ **यौन-जीवन और परिवार**
- ☐ **सन्तानें और सुख-सम्पदा**

आप क्या वन सकती हैं–

अभिनेत्री, नेता, डाक्टर, नर्स, नर्तकी, प्रशासिका, समाजसेविका, अध्यापिका अथवा कुछ और भी !

चुनाव कीजिये और अपने जीवन–रहस्य को समझिये !

यह पुस्तक आपको जीवन का सही मार्ग दिखा सकेगी। यह महिला जातक पर फलित ज्योतिष की अनुपम पुस्तक है।

उपयोगी साहित्य माला-१०

महिलाएँ और ज्योतिष
[Astrology For Women]

लेखक—ज्योतिर्विद् परमानन्द शर्मा
संशोधक—डॉ. शुकदेव चतुर्वेदी

रंजन पब्लिकेशन्स
१६, अंसारी रोड, नई दिल्ली-११०००२

प्रकाशक :
रंजन पब्लिकेशन्स
१६, अंसारी-रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-११०००२
फोन : 278835

द्वितीय संशोधित संस्करण

मूल्य : रु० १०.००

मुद्रक
अमर प्रिंटिंग प्रेस,
८/२५, विजयनगर, दिल्ली-९

एक दृष्टि में

स्त्रियों की उत्पत्ति का पौराणिक आख्यान

शरीर लक्षण—	नेत्र, नासिका, केश, तिल और मस्से, सुलक्षणा स्त्री।
जन्मनक्षत्र और शुभता—	जन्मकालीन पाये बालारिष्ट, ग्रह-अरिष्ट, अरिष्ट समय।
स्वभाव और आकृति—	आठ व्यावहारिक नियम, शरीर भारी वा सामान्य, शारीरिक दशा सुन्दरता जानने का नवीन मत।
माता, पिता और भाई—	आपसी सम्बन्ध कैसे? भाई बहन संख्या विचार।
विवाह और यौन जीवन—	विवाह का समय, पति कैसा? वैवाहिक जीवन कैसा व्यतीत होगा?
जन्म कुण्डली और सन्तान—	संतान सुख, प्रथम पुत्र या पुत्री संतान के पारस्परिक सम्बन्ध।
आप क्या बन सकती हैं—	अभिनेत्री, गायिका, नर्तकी, लेखिका प्राध्यापिका, डाक्टर, उच्च पदाधिकारी।
भावफल विचार—	द्वादश भाव का विस्तृत विवेचन। दशाफल के अनुभूत नियम.
प्रकीर्ण अध्याय—	महिलाओं का प्रियरत्न-पुखराज प्रसिद्ध महिलाओं की कुण्डलियां।

दो शब्द

भारतीय समाज की प्राचीन परम्परा के अनुसार महिलाओं का जीवन परिवार की परिधि तक ही रहता आया है। सम्भवतः इसी कारण प्राचीन ज्योतिषाचार्यों ने जहाँ 'पुरुष-जातक' के जीवन में सम्भावित भूत, वर्तमान-तथा भविष्यत् काल की सभी घटनाओं के ज्योतिष के आधार पर विवेचन करने वाले अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थ रचे, वहां "स्त्री जातक" को साधारण चर्चा करके ही छोड़ दिया। महिला-जीवन का विवेचन वहीं तक किया जहां तक कि उसका सम्बन्ध उसके पिता, भाई, पति व प्रेमी के साथ था।

आज समाज में महिलाएँ पुरुष के समकक्ष खड़ी हैं। इस पुस्तक के लेखक को विश्वास है कि महिलाओं को आज अपने जीवन में स्वतन्त्र रूप से यह जानने का अधिकार है कि उसका भविष्य क्या है? इस विषयक साहित्य के अभाव की पूर्ति के लिए यह एक प्रयास है जो निश्चय ही किसी दैवज्ञ के अतिरिक्त साधारण पाठक-पाठिकाओं के लिए भी रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

आशा है कि विद्वत् समाज इस कृति का आदर करेगा।

—लेखक

ज्योतिष विद्वानों के लिए दुर्लभ ग्रन्थ

नष्ट-जातकम्

(NASHTA-JATAKAM)

मूल रचनाकार—आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ "पर्वतीय"

हिन्दी व्याख्याकार– डा० शुकदेव चतुर्वेदी

प्रस्तुत ग्रन्थ उत्तर भारत के ऋषितुल्य उद्भट विद्वान् आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ के जीवन की ५० वर्ष की साधना की अमूल्य देन है।

हमारे देश में ८० प्रतिशत से अधिक व्यक्तियों को अपने जन्म की ठीक-ठीक जानकारी नहीं होती। अधिकांश लोग केवल अनुमान मात्र से जन्मपत्री बनवा लेते हैं। इस प्रकार से बनी जन्मपत्रियों से अच्छे-अच्छे ज्योतिषी उनके जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का फल ठीक-ठीक नहीं बता पाते।

इस ग्रन्थ में मुख्य रूप से इस समस्या का समाधान प्राचीन ऋषि प्रणीत पद्धतियों एवं स्वंय अपनी शोध व अनुभव का समावेश करके आचार्यश्री ने विद्वान पाठकों के हितार्थ प्रस्तुत किया है।

ग्रन्थ ४ मुख्य अध्यायों में विभाजित है:—

१—वराहमिहिर, कल्याण वर्मा आदि युक्ति प्रकरणम्,
२—अमीरचन्द्र संग्रहस्य युक्ति प्रकरणम्,
३—केरलशास्त्रीये युक्ति प्रकरणम्,
३—लग्नभ्रांति निराकरण प्रकरणम्।

मूल संस्कृत श्लोक, संस्कृत व्याख्या एवं तुलनात्मक हिन्दी व्याख्या उदाहरण सहित, इस ग्रन्थ की विशेषता है।

ज्योतिष विद्वान् ग्रन्थ की उच्चता से प्रभावित होंगे।

मूल्य-२५.००

विषय-सूची

—०—

श्री गणेशाय नमः

मंगलाचरण

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्कर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ १ ॥

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली
भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दित शारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम् ॥ २ ।

[स्तो० र०]

कुन्द के फूल, चंद्रमा, वर्फ और हार के समान श्वेत, शुभ्र वस्त्र धारण किये हुए, उत्तम वीणा से सुशोभित हस्ता, श्वेत कमलासन पर विराजमान, ब्रह्मा, विष्णु-महेश आदि देवों द्वारा सदा वन्दिता सब प्रकार की जड़ता को दूर करने वाली भगवती सरस्वती मेरा पालन करें ।

हे कमलासीन सुन्दरि ! सरस्वती ! सब दिशाओं में पुञ्जीभूत हुई अपनी देहलता की आभा से ही क्षीर समुद्र को दास बनाने वाली और मन्द मुस्कान से शरद् ऋतु के चन्द्रमा को तिरस्कृत करने वाली तुमको मैं प्रणाम करता हूं ।

नारी और पुरुष

ब्रह्मा जी जब नारी की रचना करने बैठे, तब उन्होंने देखा कि उनका सारा मसाला पुरुष की रचना में ही समाप्त हो गया और कोई भी ठोस पदार्थ बाकी नहीं बचा। यह देखकर ब्रह्मा जी बड़े चक्कर में पड़े कि क्या करें? बहुत सोच-विचार के बाद अन्त में उन्होंने चन्द्रमा से गोलाई ली; लताओं से लिपटना लिया; नन्हीं-नन्हीं टहनियों से घुमाव लिया; दूर्वा दल से कम्पन लिया; नरकुल से क्षीणता ली; पुष्पों से खिलना लिया, पत्तियों से ताजगी ली; हाथी की सूँड़ से आकार लिया; हिरणी से दृष्टि ली; मधुमक्खियों की पंक्ति से चिपटना लिया; सूर्य-रश्मियों से प्रसन्नता भरी क्रीड़ा ली; मेघों से रुदन लिया; वायु से चंचलता ली, शशक से भयातुरता ली; मयूर से घमण्ड लिया; कमल से कोमलता ली; वज्र से कठोरता ली; मधु से मधुरता ली; बाघ से क्रूरता ली; अग्नि से ताप लिया; हिम से शीतलता ली; तोते से अनवरत टें-टें ली; कोयल से मधुर कूक ली; कौवे से मक्कारी ली और सारस से वफादारी ली। इन सब अमूर्त्त भावनाओं के समन्वय से नारी की रचना करके ब्रह्मा ने उसे पुरुष को सौंप दिया!

एक सप्ताह पश्चात् पुरुष लौटकर ब्रह्माजी के पास आया और बोला— "भगवन्! आपने मुझे जो जीव दिया है उसने तो मेरी जिन्दगी बवाल में डाल दी है। वह दिन भर लगातार बातें करती रहती है, मुझे इतना परेशान किया करती है कि सहन करना मुश्किल है। वह मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ती। उस पर मुझे हर घड़ी ध्यान देना पड़ता है। वह मेरा सारा समय ले लेती है। वह

बिन-बात रोती है, बिना- बात मुस्कराती और हर वक्त बेकार रहती है; इस लिए मैं उसके साथ नहीं रह सकता। आप ही ने उसे दिया, आप ही उसे वापिस ले लें।

ब्रह्मा जी ने कहा—"अच्छा" और नारी को वापिस ले लिया। एक सप्ताह व्यतीत हो जाने पर पुरुष फिर ब्रह्मा जी के पास पहुंचा और कहने लगा—"भगवन्! जब से मैंने उस जन्तु को लौटाया है तब से मुझे जीवन बहुत एकाकी और नीरस जान पड़ता है। रह-रह कर यह याद आती है कि वह मेरे लिए कैसी प्रसन्न होकर नाचती थी! कैसी मस्त होकर गाती थी! कनखियों से कैसी प्रेम भरी दृष्टि से देखती थी! वह मेरे साथ खेलती थी! मुझ से लिपट जाती थी! उसकी हँसी में संगीत भरा था! दर्शन में सौन्दर्य था स्पर्श में कोमलता थी। भगवन्! उसे फिर मुझे लौटा दीजिए।"

ब्रह्मा जी ने कहा—"अच्छा" और नारी को पुनः पुरुष को लौटा दिया।

केवल तीन ही दिन बीते थे कि मनुष्य फिर ब्रह्मा के पास आया और बोला—"भगवन्! मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि क्या होता है! फिर भी मैं इसी नतीजे पर पहुँचा हूं कि स्त्री मेरे लिए आनन्द की अपेक्षा दुःख की ही वस्तु है अतः उसे आप फिर वापस ले लीजिए।

इस बार ब्रह्मा जी ने बिगड़ कर कहा—"निकालो यहां से, भाग जाओ! जैसे तुमसे बने वैसे इसे संभालो। मैं अब ज्यादा तुम्हारी बात नहीं सुनूँगा।"

इस पर पुरुष बोला—"किन्तु मैं स्त्री के साथ नहीं रह सकता।"

ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—"लेकिन तुम उसके बिना भी तो नहीं रह सकते।" यह कहकर उन्होंने पुरुष को निकाल बाहर किया और अपने काम में लग गये।

पुरुष कहने लगा—"मैं न तो स्त्री के साथ ही रह सकता हूं और न स्त्री के बिना ही; फिर, क्या करूँ?" —श्री एफ० डब्ल्यू० बेन

: १ :

शरीर लक्षण : एक विवेचन

पादतल लक्षण; पादतल रेखा; पैर का अंगूठा; पैर की अंगुलियां; पाद-पृष्ठ-लक्षण; टखना-जंघा-जानु आदि का शुभाशुभ-विवेचन, जननेन्द्रिय का शुभाशुभ; नेत्र-शुभाशुभ विवेचन; रोम और भंवरी; मुद्रा-चिह्न; स्त्रियों के मस्से और तिल; सुलक्षणा स्त्री क्या करती है ?

अंग-प्रत्यंगों का अध्ययन

जन्म-कुण्डली का अध्ययन करने से पूर्व स्त्रियों के बाहरी अंग-प्रत्यंगों का अध्ययन कर, उनके शुभाशुभ का ज्ञान करना भी लाभ-प्रद है। विवाह के अवसर पर और व्यावहारिक जीवन में उससे बड़ी सहायता मिलती है।

पादतल-लक्षण—जिस स्त्री के पैर के तलुए चिकने, मुलायम, पुष्ट, सम, (न बहुत बड़े न छोटे) लाल, पसीने से रहित, गरम हों; वह सुख भोग करने वाली है। उसे अपने पति से अच्छा शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सुख मिलता है।

पादतल-रेखा—जिसके पैर में (तलुए में) शंख, स्वस्तिक, चक्र, कमल, ध्वज, मत्स्य, छाता के चिह्न हों तथा ऊर्ध्व रेखा लम्बी हो वह स्त्री किसी प्रसिद्ध मंत्री, नेता, व्यापारी या राजकीय अधिकारी की पत्नी होती है। वह स्वयं भी सरलता से प्रभावशाली शासिका हो सकती है। उसे पति का अच्छा सुख मिलता है। इसके विपरीत जिसके तलुए में साँप, चूहा, कौआ की आकृति के चिह्न हों वह दुःख भोगने वाली, धनहीना और अशुभ होती है।

अनुभवी सामुद्रिकाचार्य राज ज्योतिषी श्री लक्ष्मीनारायण

त्रिपाठी लिखते हैं—"जिस कन्या के पादतल में ध्वजा की रेखा हो, वह चक्रवर्ती पुरुष की महिषी होती है। जिसके पदातल में त्रिशूल रेखा हो, वह प्रधानमन्त्री या मुख्यमन्त्री की स्त्री होती है। जिसके पादतल में शंख रेखा हो वह योगिनी होती है। जिसके पादतल की अनामिका के नीचे स्वास्तिक हो, उसे व्यापार में अतुलित लाभ होता है। जिसकी एड़ी में अर्द्ध चन्द्राकार रेखा हो वह स्त्री कुल को कलंक लगाती है। जिस स्त्री की एड़ी पर त्रिकोण चिह्न हो वह चतुर और गुणों को सरलता से पहचानने वाली होती है। जिस स्त्री की एड़ी में डम्बल का चिह्न हो, वह पहले वैरागिनी बन, फिर गृहस्थ बनेगी। जिसकी एड़ी पर सर्पाकार रेखा हो, उसे समय-समय पर दैवी मदद मिलती रहती है।"

पैर का अंगूठा—ऊँचा, मांसल तथा गोल पैर का अंगूठा स्त्री के लिए सुखकारी है। उसे पति का पूरा प्यार और बच्चों का सुख मिलता है। धन की कोई कमी नहीं रहती। यौन-सुख अधिक आनन्ददायक रहता है। जिस स्त्री के पैर का अंगूठा टेढ़ा, छोटा या चपटा हो उसे अशुभ समझना चाहिए। सामान्यतया यह सुख-सौभाग्य नाशक लक्षण है। यदि किसी स्त्री के पैर का अंगूठा विशेष चौड़ा हो तो उस स्त्री के विधवा होने की बहुत प्रबल सम्भावना रहती है। जिस स्त्री के पैर का अंगूठा विशेष लम्बा हो वह प्रायः अभागिनी होती है। उसे न तो पीहर का सुख मिलता है और न ही सुसराल का।

पैर की अंगुलियाँ—जिस स्त्री के पैर की अंगुलियाँ कोमल, घनी, गोल और बड़ी तथा ऊँची होती हैं, वे अत्यन्त शुभफल देने वाली हैं। जिस स्त्री के पैर की अंगुलियां विशेष लम्बी होती है, वह कुलटा होती है। जिस स्त्री के पैर की अंगुलियाँ पतली हों उसे निर्धन समझना चाहिए। जिस स्त्री के पैर की अंगुलियाँ छोटी हों वह अल्पायु होती है। जिस स्त्री के पैर की अंगुलियाँ टेढ़ी हों उसका

व्यवहार कुटिल होता है, वह सदैव अपने पति को धोखे में रखना चाहती है। जिस स्त्री के पैर की अंगुलियाँ चपटी हों, वह निश्चय ही दासी होती है और उसे प्रायः दिन भर घूमना-फिरना पड़ता है। जिस स्त्री के पैर की अंगुलियां अलग-अलग हों, वह स्त्री दरिद्र होती है। अर्थाभाव के कारण सदैव उसके घर में कलह होता रहता है। जिस स्त्री के पैर की अंगुलियाँ परस्पर मिली हों वह अत्यन्त अशुभ फल देने वाली होती है। उससे सम्पर्क रखने वाला पुरुष या पति अल्पायु होता है। वह स्वयं भी अपने पति या प्रेमी की हत्या कर सकती है।

जिस स्त्री के मार्ग में चलने पर पर्याप्त धूल उड़ती हो, वह व्यभिचारिणी होकर तीनों कुलों को नष्ट करती हैं।

चलते समय जिस स्त्री को कनिष्ठका अंगुली भूमि को स्पर्श न करे, वह पति को मार कर दूसरा पति करती है। इससे तात्पर्य प्रायः विधवा-विवाह से है। जिस स्त्री की अनामिका अंगुली जमीन का स्पर्श न करे, वह दो पतियों को मारती है।

जिसकी मध्यमा अंगुली भूमि को नही छूती, वह तीन पतियों को मारती है। जिस स्त्री की अनामिका और मध्यमा दोनों अंगुलियां चलते समय भूमि न छुएं, वह भी पति को मारने वाली होती है।

जिसके पैर की तर्जनी अंगुली अंगूठे से बड़ी हो वह कुमारी अवस्था में ही संभोग-सुख प्राप्त कर लेती है। यदि सबसे छोटी अंगुली गोल और मोटी हो तो प्रायः उसके माता-पिता बचपन में मर जाते हैं।

जिस स्त्री के पैर की पीठ ऊंची हो वह राजकीय अधिकारी की पत्नी होती है।

विशेष—'पति मारने वाली' स्त्री से अभिप्राय केवल पति के लिए अशुभ मात्र समझना चाहिए।

पादनख लक्षण—

रक्ताः समुन्नताः स्निग्धाः वृत्ताः पादनखाः शुभाः ।
स्फुटिताः कृष्णवर्णाश्च ज्ञेया अशुभसूचकाः ॥ ७ ॥

(वृहत्पाराशरहोरा शास्त्रम्)

जिसके नाखून लाल, चिकने, ऊंचे और गोल हों वह सुख भोगने वाली; तथा फटे और काले हों तो दुःख भोगने वाली होती है ।

पाद पृष्ठ लक्षण - यदि किसी स्त्री के पैर की पीठ ऊंची, स्वेद-रहित, नस विहीन, चिकनी, कोमल और मांसल हो तो वह राजरानी होती है । जिस स्त्री के पैर की पीठ बीच में लम्बी हो, वह दरिद्र होती है । जिस स्त्री के पैर की पीठ नसों से व्याप्त हो, वह सदैव घूमने वाली होती है । जिस स्त्री के पैर की पीठ रोमयुक्त हो वह निश्चय ही दासी होती है । जिसके पैर की पीठ मांसरहित हो, वह अभागी होती है ।

टखना—यदि किसी स्त्री के टखने नसों से व्याप्त, छिपे और गोलाकार हों तो वे कल्याणकारी होते हैं । ऐसी स्त्री अपने पति के लिए सुख-सौभाग्य लाती है । यदि पैर के टखने नीचे की ओर ढीले से हों तो वे अशुभ माने गये हैं । वे दुर्भाग्य सूचित करते हैं । जिस स्त्री के पैर की एड़ियां सम हों, वे शुभकारक हैं । जिसकी एड़ी चौड़ी हो, वह दुर्भगा होती है । जिसकी एड़ी लम्बी हो, वह हतभागिनी होती है, तथा उसे अपने पति और पुत्रों का सुख नहीं मिलता ।

जंघा—जिस स्त्री की जांघें रोम रहित, सम, चिकनी, गोल, नस विहीन और मनोहर हों, वह राजपत्नी होती है । अपने पति को वह यौन-सुख से तृप्त कर देती है । जिसके रोमकूपों में एक ही रोम हो वह कल्याणदात्री होती है, उसका पति उच्च राजकीय अधिकारी होता है । जिसके रोम कूपों में दो-दो रोम हों वह भी सुख पाती है । जिसके रोमकूपों में तीन-तीन रोम हों वह अशुभ है । वह विधवा हो कर दुःख पाती है ।

जानु—जिस स्त्री के दोनों जानु (घुटने) गोल और माँसल हों, वह धनवान् हो सुख पाती है। उसे अपने पति से उत्तम यौन-आनन्द प्राप्त होता है। जिसके घुटने माँसरहित हों, वह स्वतन्त्र विहार करती है। उसके प्रेमियों की संख्या बहुत होती है। पुष्ट जानु वाली स्त्री दरिद्र होती है।

ऊरु—जिन स्त्रियों के उरु (जांघे) नस रहित, हाथी की सूँड के समान गोल, चिकनी, घनी और निर्लोम होती हैं, वे राजरानी होती हैं, उन्हें धन-धान्य की कोई कमी नहीं रहती। जिन स्त्रियों के ऊरु रोमयुक्त हों वे विधवा हो जाती हैं। जिनके ऊरु चपटे हों उन्हें अभागी समझना चाहिये, सुख और आनन्द उनके भाग्य में ही नहीं लिखा होता। जिन स्त्रियों के ऊरु के बीच नसों से गढ़ा-सा हो जाए, वे दुःख पाती हैं। जिनके ऊरुओं की (त्वचा) कठोर हो वे निश्चय ही दरिद्र होती हैं।

कटि—स्त्री की कटि (कमर) यदि प्रमाण में २८ अंगुल हो और ऊंचे नितब्ध वाली हो तो वह सुख-सौभाग्यप्रद होती है।

टेढ़ी, चपटी, लम्बी, मांसरहित, संकुचित, छोटी तथा रोम सहित कटि दुःख और वैधव्य की सूचक मानी गयी है।

नितब्ध—यदि किसी स्त्री का नितम्ब-मण्डल ऊंचा, मांसल और चौड़ा हो तो वह बड़ी भोगी होती है। उसे धन और पति का सुख अच्छा मिलता है। यदि किसी का नितम्ब इससे विपरीत हो तो वह अशुभ माना गया है।

यदि किसी स्त्री के कूल्हे कैथ की तरह गोल, कोमल, मांसल और घने हों तो वह विशेष रति सुख देने वाली होती है। उसका पति सदैव उसका दास रहता है।

जननेन्द्रीय— स्त्री का भग यदि छिपा हुआ मणि (ठिहुना) वाला

लाल वर्ण, कोमल मुलायम रोमों से युक्त, कछुए के पीठ की तरह, उच्च पीपल के पत्ते के सदृश आकृति का और चिकना हो तो शुभप्रद समझना चाहिये।

जिसकी योनि हिरन के खुर के या चूहे के उदर के समान हो अथवा कड़े रोमयुक्त और विस्तृत मुखी हो, साथ ही जिसमें नाक (मणि) दीख पड़ती हो वह दुःखप्रद होती है।

जिसकी योनि तीन रेखाओं से युक्त हो वह बांझ होती है।

जिसकी योनि खपरैल के आकार की हो वह दासी होती है।

जिसकी योनि बांई ओर ऊंची हो वह कन्यायें उत्पन्न करती है। और जिसकी योनि दाहिनी तरफ ऊंची हो वह पुत्रवती होती है।

जिसकी योनि बांस के पत्ते या वेतस-पत्र के समान हो और हाथी के से रोमों से युक्त हो, साथ ही जिसकी नासिका बड़ी हो और जो विकट या कुटिल आकृति या नीचे की ओर दीर्घ मुख वाली हो वह निश्चय ही अशुभ होती है।

शंख के समान आवर्त (वलय) योनि जिस स्त्री की हो, वह स्त्री गर्भ धारण नहीं करती।

वस्ति—वस्ति (नाभि से नीचाभाग) कोमल विस्तृत, थोड़ी ऊंची हो तो शुभप्रद समझना। यदि रोम से युत, शिरावाली, रेखा से युत वस्ति हो तो अशुभ समझना चाहिये।

नाभि—स्त्री की नाभि गहरी, दाहिने ओर घूमी हुई हो तो सब सुख देने वाली और अत्यन्त शुभ है। इसके विपरीत ऊपर को उठी, ग्रन्थि वाली तथा वामावर्त वाली नाभि निश्चय ही अशुभ फल देने वाली होती है।

कुक्षि—जिसकी कुक्षि (कोख-पेट) विस्तृत हो वह सुभगा (सौभाग्यशालिनी) और बहुत पुत्र वाली होती है। जिसका उदर मण्डक (मेंढ़क) के समान हो उसका पुत्र राजा होता है।

ऊंची कुक्षि वाली वन्ध्या, वलि युक्त कोख वाली संयासिनी तथा आवर्त (भंवर) युत कोख वाली नारी दासी होती है।

पार्श्व (पसली)—स्त्री की पसली (वगल) समान, पुष्ट और कोमल हो तो शुभप्रद और उठी हुई, रोम से युत वा शिरा से व्याप्त हो तो अशुभप्रद होती है।

हृदय—स्त्री का हृदय रोमरहित और समान हो तो शुभप्रद और बहु विस्तार तथा रोमयुक्त हो तो अशुभप्रद समझना।

स्तन—स्त्री के स्तन वरावर, पुष्ट, घने, गोल और दृढ़ हों तो शुभप्रद तथा अग्र भाग में मोटे और विरल (दोनों अलग-अलग) मांस हीन हों तो अशुभप्रद समझना चाहिये।

जिस स्त्री का दाहिना कुच ऊंचा हो तो वह पुत्रवती तथा वाम ऊंचा हो तो कन्या-सन्तान वाली होती है।

जिस स्त्री के दोनों स्तन रहट के समान हों वह वुरे स्वभाव की होती है। उसका चरित्र भी प्रशसंनीय नहीं होता।

जिन स्त्रियों के स्तनों के मुख मोटे हों, पर्याप्त अन्तर पर हों और किनारे पर चौड़े हों वे शुभप्रद नहीं होते।

जिन स्त्रियों के स्तन मूल में मोटे तथा क्रमशः पतले और अग्रभाग में तीखे हों वे पहले सुख भोग पीछे वड़ा ही दुःख भोगती हैं।

स्तनों के अग्र भाग (चूचुक) मजवूत, काले, वहुत गोल, शुभ-सूचक हैं। भीतर छिपे, दीर्घ और पतले स्तनों के अग्रभाग क्लेश-दायक होते हैं।

हंसुली—जिस स्त्री की हंसुली मोटी हो वह धन-धान्य की निधि होती है। पति के लिये अत्यन्त शुभ है। जिनकी हंसुलीयाँ ढीली हड्डियों वाली, गहरी और विषम हों वे निश्चय ही दरिद्र होती हैं।

अंस (कंधे)—स्त्री के कंधे सम, पुष्ट, छिपे हुये सन्धि वाले

शुभप्रद और रोम से युत, उठे हुए, टेढ़े, मांसहीन हों तो अशुभप्रद समझने चाहियें।

यदि किसी स्त्री के कंधे टेढ़े, मोटे और रोमयुक्त हों तो वे उसका दासी और विधवा होना सूचित करते हैं।

कक्ष या कांखें - पतले रोमों वाली, ऊंचो, चिकनी, मांसल कांखे शुभप्रद मानी गई हैं। इसके विपरीत गहरी नसों वाली, स्वेदयुक्त, चिकनी कांखें अशुभप्रद समझनी चाहियें।

भुजाएँ—यदि महिलाओं की भुजाएं छिपी हुई हड्डियों और गाठों वाली होकर कोमल हों, साथ ही नसों या रोमों से रहित और सीधी हों तो वे अत्यन्त शुभ होती हैं।

जिन स्त्रियों की भुजायें मोटे रोमों से युक्त हों वे विधवा होती हैं। उनका पारिवारिक जीवन अशांत रहता है। चरित्र पर कलंक लगने की नौवत भी आती है।

जिन स्त्रियों की भुजाएं छोटी हों वे अभागिनी होती हैं। उन्हें धन का सुख मुश्किल से मिलता है।

जिनकी भुजाएं चारों ओर से नसों से घिरी हों वे भी दुःख भोगती हैं।

कर-अंगुष्ठ—स्त्री के हाथ का अंगूठा कमल की कली की तरह हो तो शुभप्रद और मांसहीन टेढ़ा हो तो अशुभप्रद समझना चाहिये।

करतल (हथेली)—

> **स्त्रीणां करतलं रक्तं मध्योन्नतमरन्ध्रकम्।**
> **मृदुलं चाल्परेखाढ्यं ज्ञेयं सर्वसुखप्रदम्॥**
> **विधवा बहुरेखेण रेखाहीनेन निर्धना।**
> **भिक्षुका च शिराढयेन नारी करतलेन हि॥**

(वृ. पा. हो. ४२।४३)

स्त्री की हथेली लाल, मध्य में ऊंची, अंगुलियाँ मिलाने से छिद्र-हीन, कोमल, थोड़ी रेखा से युत हो तो सब सुख भोगने वाली और बहुत रेखा हो तो विधवा, रेखा से हीन हो तो दरिद्रा, शिरा से युत हथेली हो तो भीख मांगने वाली होती है।

कर पृष्ठ—स्त्री के हाथ के पृष्ठ भाग पुष्ट, कोमल और रोमहीन हों तो शुभ तथा शिरा और रोम से युत, गहरा हो तो अशुभ माना गया है।

करतल रेखायें—जिस स्त्री के करतल (हथेली) में स्पष्ट, लाल, गोल, चिकनी, पूर्ण और गहरी रेखायें हों वह सब सुख भोगने वाली होती हैं।

हथेली में मत्स्य (मछली) रेखा हो तो सौभाग्यवती, स्वस्तिक हो तो धनवती, कमल हो तो रानी और राजमाता होती है। इसी प्रकार शंख, छत्र या कछुआ-सदृश रेखा हो तो भी राजमाता समझना चाहिये। तात्पर्य यह है कि उसके पुत्र राजा के समान प्रभावशाली और धनी होते हैं।

जिसके वाम हाथ में तुला (तराजू) सदृश रेखा हो अथवा हाथी, घोड़े या बैल की तरह रेखा हो तो वह व्यवसायी की स्त्री होती है। तात्पर्य यह है कि उसका पति कुशल व्यापारी होता है। यदि वह स्वयं भी व्यापार का संचालन करें तो सफल हो सकती हैं।

जिस के हाथ में मकान, वज्र सदृश रेखा हो वह भाग्यशाली और शास्त्रज्ञ पुत्र को उत्पन्न करने वाली होती है। जिसके हाथ में गाड़ी, हल, जुआ सदृश रेखा हो वह खेती करने वाले की स्त्री होती है। चामर, अंकुश, धनुष, त्रिशूल, तलवार, गदा, शक्ति, दुन्दुभि सदृश रेखा हो वह रानी होती है।

अंगूठे के मूल से कनिष्ठा पर्यन्त रेखा गई हो तो वह स्त्री विधवा होती है। **ऐसी स्त्री से विवाह निश्चय ही अमंगलकारक है।**

जिस स्त्री के हाथ में कौआ, मेंढक, गीदड़, भेड़िया, बिच्छू, साँप,

गदहा, ऊंट और बिल्ली सदृश रेखा हो तो वह स्त्री दुःखभागिनी होती है।

अंगूठे के मूल में स्थित रेखा यदि काली और क्रम से पतली होती गयी हो तो वह बहन का नाश करती है।

जिसके करतल में अंगूठे के मूल से मध्य भाग तक चक्राकार मोटी रेखा हो वह स्त्री कुलटा, रुष्ट स्वभाव, परपुरुषों में आसक्त तथा स्वतंत्र होती है।

जिसके करतल में अनामिका स्थित रेखा छिन्न-भिन्न हो वह बड़ी कलहप्रिय होती है।

जिस स्त्री की मध्यमा स्थित रेखा कटी हो वह व्यभिचारिणी होती है। जिसकी तर्जनी स्थित रेखा टूटी हो वह विधवा होती है।

अंगुली—स्त्री के हाथ की अंगुलियां कोमल, सुन्दर पर्व से युत, लम्बी और क्रम से पतली, रोम रहित हों तो शुभप्रद समझना चाहिए। अत्यन्त छोटी, मांसहीन, टेढ़ी, छिद्र वाली, रोम से युत, अधिक पर्व वाली अथवा बिना पर्व (पोरुओं) की हों तो दुःखप्रद समझना चाहिए।

नख—स्त्री के नाखून लाल वर्ण, ऊंचे, शिखायुक्त शुभप्रद और गहरे मलिन या पीत वर्ण या श्वेत बिन्दु से युक्त अशुभप्रद होते हैं।

पीठ—स्त्री की पीठ छिपी हुई हड्डियों वाली, मांस से पुष्ट शुभ मानी गई है और शिरा या रोम से युक्त तथा टेढ़ी अशुभ होती है।

कण्ठ—स्त्री का कण्ठ ३ रेखा से युक्त, छिपे हुये हाड़ वाला, गोल पुष्ट और कोमल शुभप्रद होता है। मोटे कण्ठ वाली विधवा, टेढ़े कण्ठ वाली दासी, चिपटे कण्ठ वाली वन्ध्या और छोटे कण्ठ वाली स्त्री सन्तान हीना होती है।

ग्रीवा (गर्दन)—जो ग्रीवा तीन रेखाओं से अंकित हो और जिसकी

हड्डियां न दिखाई दें; अत्यन्त पुष्ट हो, वह शुभ मानी गई है। बहुत माँसल चपटी ,लम्बी या गहरी ग्रीवा अशुभ समझी जाती है।

जिस स्त्री की ग्रीवा मोटी हो वह विधवा होती है, टेढ़ी हो वह दासी होती है, यदि चपटी हो तो वह बांझ होती है, और यदि काफी छोटी हो तो वह सन्तान रहित होती है।

चिबुक—स्त्री की ठोडी लाल वर्ण, कोमल और पुष्ट हो तो शुभप्रद तथा चौड़ी, रोम से युत, मोटी और दो भाग वाली अशुभप्रद होती है।

कपोल—स्त्री के गाल उठे हुए, पुष्ट, गोल शुभप्रद, और रोम से युक्त, कठोर, मांसहीन हो तो अशुभप्रद होते हैं।

मुख—स्त्री का मुख समान (न बड़ा न छोटा) पुष्ट, गोल, सुगन्धि युक्त, चिक्कन और मनोहर हो तो सुख और सौभाग्यदायक होता है। इससे भिन्न अशुभ समझना चाहिए।

अधर—स्त्री का अधर (नीचे का ओठ) कमल पत्र सदृश लाल, चिक्कन, मध्य भाग में रेखा से विभाजित और मनोहर हो तो वह रानी होती है तथा मांसहीन, फटा हुआ लम्बा, रूखा, श्याम वर्ण हो तो क्लेश और वैधव्यसूचक होता है।

उत्तरोष्ठ—स्त्री के ऊपर का ओठ लाल, चिक्कन, कुछ मध्य भाग में उठा हुआ रोमहीन हो तो सब प्रकार से सुख और सौभाग्यप्रद होता है, इससे विपरीत अशुभ समझना चाहिये।

दन्त—स्त्री के दाँत चिकने, दूध के समान श्वेत संख्या में ३२, नीचे और ऊपर बराबर, थोड़े ऊंचे हों तो शुभप्रद होते हैं। यदि नीचे में अधिक संख्या हो, पीले, काले, लम्बे, पंक्ति में दो-दो दांत, विकट और अलग-अलग हों तो अशुभ समझना चाहिये।

जिह्वा—स्त्री की जीभ लाल कोमल हो तो वह अतुल भोगवती होती है। मध्य में संकुचित और अग्रभाग में विस्तार हो तो दुःख-

भागिनी समझना चाहिए। यदि स्त्री की जीभ पूर्णतया श्वेत वर्ण की हो तो जल में मरण, श्याम वर्ण हो तो कलहकारिणी, मोटी जीभ वाली धनहीना, लम्बी जीभ वाली अभक्ष्य भी भक्षण करने वाली, बड़ी और चौड़ी जीभ हो तो स्त्री बहुत अधिक आलसी होती है।

तालु—स्त्री का तालु चिकना, कमल के पत्र के समान और कोमल हो तो शुभ समझना चाहिए। श्वेत तालू वाली स्त्री विधवा होती है। यदि तालु का वर्ण पीला हो तो वह भरा-पूरा घर छोड़कर सन्यासिनी होती है, काला तालु हो तो स्त्री को सन्तानहीना और रूखा हो तो उसे बहुत परिवार वाली समझना चाहिए।

हास्य—जिस स्त्री का हंसते समय मुंह थोड़ा खुले, गण्ड स्थल थोड़ा विकसित हो, दांत न दिखाई पड़े, स्त्रियों की वह हंसी उत्तम और शुभ समझी जाती है। इसके विपरीत हंसते समय यदि कन्धे और हाथ फड़क उठें, आंखें बन्द हो जायें, मुंह बार-बार कांपे, तो वह हंसी अशुभ और निन्द्य है। जिस स्त्री के हंसते समय गाल में गढ़े पड़ जाये, वह भ्रष्ट होती है।

नासिका—स्त्री की नाक बराबर गोल, दोनों नथुने छोटे छेद-युक्त हों तो शुभ और अग्र भाग में मोटी या बीच में चिपटी नासा (नाक) हो तो अशुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री की नाक का अग्र भाग लाल या संकुचित हो वह विधवा, जिसकी नाक चपटी हो वह दासी और जिसकी नासा बहुत बड़ी या बहुत छोटी हो वह स्त्री निश्चय ही बहुत झगड़ालू होती है।

नेत्र—जिस स्त्री की आँखें गाय के दूध के समान श्वेत, निर्मल और अन्त में ललाई लिए हों तथा बीच की पुतली काली हो और बाहरी किनारे कान के पास तक लगे हुए हों, वह अत्यन्त शुभप्रद हैं। मधु समान पिंगल नेत्र वाली स्त्री सुख और सौभाग्यवती होती है।

ऊंची ग्राँख वाली (उन्नताक्षो) स्त्रो थोड़ी ग्रायु वाली ग्रौर गोल ग्रांखों वाली स्त्री कुलटा होती है।

जो स्त्री ग्रांख से कानी हो वह व्याभिचारिणी ग्रौर दाहिनी ग्राँख से कानी हो वह वांझ होती है।

कबूतर के समान ग्राँख वाली स्त्री को भ्रष्ट ग्रौर दुष्ट स्वभाव वाली कहा गया है एवं हाथी सदृश ग्राँख वाली स्त्री दुःख भोगने वाली होती है।

यदि स्त्री के दोनों नेत्र स्पष्ट पीले रंग के हों तो वह काफी कामुक होती है ग्रौर प्रायः ग्रपने निकटतम सम्बन्धियों से सम्बन्ध कायम कर लेती है।

जो स्त्री देखते समय ग्राँखें फाड़ती हो वह खोटे स्वभाव की होती है।

जिस स्त्रियों के नेत्र जल से सदा भरे हुए हों वे शुभ या उत्तम नहीं हैं।

जिस स्त्री के दोनों नेत्र लाल कमल के समान हों वह पर-पुरुष की कामना करती है।

जिन स्त्रियों के नेत्र बड़े-बड़े हों वे सहनशील, मितभाषिणी ग्रौर मित भोजी होती हैं।

पक्ष्म (पलक)—स्त्री के पलक कोमल, काले, घने ग्रौर सूक्ष्म हों तो वे सौभाग्यवती होती हैं ग्रौर विरले, कपिश वर्ण, मोटे हों तो दुःखभागिनी होती है।

भौंहें—स्त्री की भौंहे गोल, धनुष सदृश टेढ़ी, काली, परस्पर मिली न हों, कोमल रोम से युक्त हों तो वह सुख ग्रौर कीर्ति पाने वाली होती हैं।

बिखरे रोमों वाली, चौड़ी, विकीर्ण, सीधी या मिली तथा बड़े रोमों वाली पीली भौंहें ग्रशुभप्रद हैं।

जिसकी भौंहें मिली हों वह चित्रकला तथा गणित में अभिरुचि रखती है।

कर्ण—स्त्री के कान लम्बे, गुलाई के साथ घूमे हुए सन्तान और सुख देने वाले होते हैं तथा विस्तार रहित, अधिक नसों वाले, टेढ़े और अधिक पतले कान अशुभ माने गये हैं।

भाल (ललाट) जिस स्त्री का भाल नस से रहित, रोमहीन, अर्द्ध चंद्राकार, समान, लम्बाई में तीन अंगुल हो तो वह सदैव पति-पुत्रादि का सुख भोगने वाली होती है। यदि भाल में स्वस्तिक रेखा चिह्न स्पष्ट हो तो वह रानी होती है। अधिक लम्बा, रोम से युक्त और अधिक ऊँचा ललाट हो तो स्त्री दुःख भोगिनी होती है।

मस्तक—जिस स्त्री का मस्तक गज-मस्तक सदृश ऊंचा, गोल हो वह सुख भोगिनी, जिसका बहुत विशाल, लम्बा या टेढ़ा हो वह दुःख भोगिनी होती है।

केश—स्त्री के केश कोमल, काले, पतले, और लम्बे शुभप्रद तथा पीले, कठोर, रूखे, बिखरे हुए और छोटे अशुभप्रद होते हैं। इसके अतिरिक्त गौर वर्ण की स्त्री के पिंगल और श्याम वर्ण स्त्री के काले केश भी शुभप्रद माने गये हैं।

रोम और भंवरी—हृदय, नाभि, हाथ कान, पृष्ठ के दाहिने भाग और वस्ति में रोमावली का दक्षिणावर्त्त चक्र हो तो अतीव शुभप्रद और वामावर्त्त हो तो अशुभ समझना चाहिए।

कमर और गोप्य स्थान में रोमावर्त्त शुभ नहीं होता है। इसी प्रकार कण्ठ, ललाट, मांग या मस्तक के मध्य भाग में आवर्त्त हो तो अशुभ समझना चाहिए।

पेट पर आवर्त्त हो तो वह स्त्री विधवा, पीठ के मध्य भाग में हो तो व्यभिचारिणी होती है।

जिस स्त्री की योनि के ऊपर या नीचे के भाग में रोमों या

रेखाओं का छकड़े वाला चिन्ह हो वह बहुत सम्मान और सुख भोगती है।

यदि किसी स्त्री की गुदा का आवर्त्त गुदा को वेधकर उदर पर्यन्त आकर कमर तक आया हो तो वह स्त्री अपने पति और संतानों के लिए अत्यन्त अशुभ है।

जिस स्त्री की कमर में आवर्त्त रेखा हो वह व्यभिचारिणी होती है। जिसकी नाभि में आवर्त रेखा हो वह पतिव्रता होती है। जिसकी पीठ में आवर्त्त रेखा हो वह पति का विनाश करती है अथवा वेश्या हो जाती है। जिसके हाथ के रोम दक्षिणावर्त्त हों वह धर्मशील होती है। यदि हाथों में रोमों का वामावर्त हो तो वह स्त्री शुभदायक नहीं होती।

मुद्रा चिन्ह—जिसके करतल म एक मुद्रा हो वह राजरानी होती है जिसके करतल में दस मुद्रायें हों उसके पास अतुल सम्पत्ति रहती है। जिसका करतल मुद्रा-रहित हो वह अभागी और दुःखी होती है। जिसके एक करतल में दो और दूसरे में तीन मुद्रायें दीख पड़ें वह भी शुभ नहीं है। तीन मुद्रायें जिसके करतल में हों वह सदैव रोग से कष्ट पाती रहती है। बहुत-सी मुद्राओं वाली स्त्री अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है और सरलता से लोकसभा और विधान सभा का चुनाव जीत सकती हैं।

मस्से और तिल—भौंहों के बीच या ललाट में मस्से का चिन्ह अत्यन्त शुभ है। यह राजसूचक है।

बायें गाल पर लाल मस्सा सदैव मीठे पदार्थों का भोजन करवाता है।

हृदय पर तिल स्त्री के लिए सौभाग्यदायक होता है।

जिस स्त्री के दाहिने स्तन पर लाल तिल हो वह पहले चार कन्यायें और वाद में तीन पुत्र उत्पन्न करती है। इसी प्रकार जिसके

बांयें कुच पर लाल तिल हो वह पहले एक पुत्र को उत्पन्न कर विधवा हो जाती है।

जिस स्त्री की गुदा की दाहिनी ओर तिल का चिन्ह हो वह राजरानी या राजपुत्र की माँ होती है।

जिस स्त्री की नासिका के अग्र भाग में लाल मस्से का चिन्ह हो वह अत्यन्त प्रभावशाली और धनी होती है। इसके विपरीत अगर नासिका के अग्र भाग में काला तिल हो तो वह पति के लिए अत्यन्त अशुभ है। वह विधवा होकर व्यभिचारिणी वन जाती है।

स्त्रियों की नाभि के नीचे तिल या मस्सा हो तो वह शुभप्रद होता है।

जिस स्त्री के टखनों पर मस्सा या तिल हो वह सदैव गरीवी में रहती है। आर्थिक चिन्तायें उसके पारिवारिक जीवन के आनन्द को नष्ट कर देती हैं।

जिसके हाथ, कान, कपाल या कण्ठ के बाँयी ओर मस्सा या तिल हो उसके पहले गर्भ से ही पुत्ररत्न उत्पन्न होता है।

यदि किसी स्त्री के कान के ऊपरी भाग में तिल हो तो उसके पेट के वाम भाग पर भी तिल-चिन्ह पाया जाता है। ऐसी स्त्री के प्रथम गर्भ से कन्या होती है।

जिस स्त्री के भाल में त्रिशूल का चिन्ह हो वह हजारों स्त्रियों की स्वामिनी होती है। धन-दौलत की कोई कमी उसके जीवन में नहीं रहती और चुनाव जीतना तो उसके बांयें हाथ का खेल होता है।

जिसके पार्श्व देश या वांयें हाथ में चिकना और दीर्घाकार तिल हो वह सुयोग्य पति पाकर कई पुत्र उत्पन्न करती है। पौत्रों का सुख भी उसे अच्छा प्राप्त होता है।

जिस स्त्री के गाल, ओष्ठ, हाथ, कान या गला, इनके भाग में मस्सा या तिल हो वह सदैव सुख पाती है।

सुलक्षणा स्त्री—सुलक्षणा स्त्री अल्पायु पति को भी दीर्घायु और सुखी बना देती है। भाग्यहीन व्यक्तियों का सुलक्षणा स्त्री के साथ विवाह होने से भाग्योदय भी हो जाता। कहा भी है: —

सुलक्षणाः सुचरिता अपि मन्दायुषं पतिम्।
दीर्घायुषं प्रकुर्वन्ति प्रमदाश्च मुदास्पदम्॥

: २ :

जन्म-नक्षत्र और शुभाशुभ विवेचन

जन्मकालिक नक्षत्रों के आधार पर बालिका का शुभाशुभ फल विवेचन; किस पाये में बालिका का जन्म हुआ है ?; परिवार के लिए शुभाशुभ; बालारिष्ट विचार; गण्ड-अरिष्टादि; ग्रह-अरिष्ट विचार; अरिष्ट समय का अनुमान; अरिष्ट भंग योग।

जन्म नक्षत्र के अनुसार

कई ताराओं के समुदाय को नक्षत्र कहते हैं। आकाश मण्डल में असंख्यात तारिकाओं से कहीं अश्व, शकट, सर्प हाथ आदि जो आकृ-तियाँ बन जाती हैं, वे ही नक्षत्र कहलाते हैं। लोक व्यवहार में स्थल की दूरी जिस प्रकार किलोमीटर से मापी जाती है, उसी प्रकार आकाश-मण्डल में ग्रहों आदि की दूरी नक्षत्रों से ज्ञात की जाती है। जन्मकालिक नक्षत्र का बालिका के लिए विशेष महत्त्व है। राशि भी इन्हीं नक्षत्रों पर आधारित रहती है। नक्षत्रों की जानकारी पंचांग से सरलता से हो सकती है। आगे हम विभिन्न नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाली बालिकाओं के गुण स्वभाव प्राचीन भारतीय ज्योतिष के आधार पर प्रस्तुत कर रहे हैं।

(१) **अश्विनी**—अश्विनी नक्षत्रोत्पन्न स्त्री गृह कार्यों में कुशल, सुन्दरी, सौभाग्यवती, पतिव्रता, धनवती, उत्तम संतान वाली, अपने परिवार के लोगों द्वारा आदरणीया, स्थूल-देहा और पति की प्रिया होती है।

(२) **भरणी**—भरणी नक्षत्र में जन्म लेने वाली बालिका रोग-रहिता, नियम पालने वाली, धन-पुत्र और सुख से युक्ता, सुन्दरी और सत्यभाषिणी होती है। प्रायः इस नक्षत्र में उत्पन्न स्त्री को संतान-सुख अच्छा नहीं मिलता, गर्भपात आदि की भी संभावना रहती है।

(३) **कृत्तिका**—कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न महिला क्षुधा से आतुर रहने वाली, बहुत खाने वाली, दुःशीला, कृपणा और अन्य पुरुष-गामिनी होती है। ग्रन्थान्तर के अनुसार दुर्बल शरीर वाली, बांझ, गर्भपात की बीमारी से युक्त या मृतक शिशुओं को जन्म देने वाली होती है।

(४) **रोहिणी**—रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाली स्त्री सुशीला, सत्य बोलने वाली, सुन्दरी, स्थिर बुद्धि, धन-धान्य-सहिता, देवताओं की पूजा करने वाली, उत्तम संतानों को जन्म देने वाली और पति-प्रिया होती है। इस नक्षत्र में उत्पन्न स्त्री निश्चित ही सिद्धान्तवादी होती है।

(५) **मृगशिरा**—मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न हुई नारी सुरूपवती, मानयुक्ता, प्रसन्नचित्त, प्रिय वाक्य बोलने वाली आभूषणों की शौकीन, अनेक विद्याओं और शास्त्रों को जानने वाली, धर्मकार्य में सदैव तत्पर और श्रेष्ठ पुत्रों से युक्त होती है। प्रायः ऐसी स्त्री की प्रकृति चंचल और उसका स्वास्थ्य खराब रहता है; अतः सदैव थकावट महसूस करती है।

(६) **आर्द्रा**—आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाली कठोर हृदया, गर्व-युक्ता, उपकार न मानने वाली, पापिनी और झगड़ालू होती है। वह दूसरों के कार्यों को सदैव बुराई करती रहती है एवं स्वयं भी कफ और पित्त रोग से ग्रस्त रहती है। कहा भी है:—

पाप कर्म प्रसक्ता च कुरूपा कलहप्रिया।
कन्यका दृढ़वैरा च जायते रौद्र दैवते॥

(७) **पुनर्वसु**—पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न होने वाली नारी अभिमान रहिता, अच्छी स्मरणशक्ति वाली पुण्यवती, सौभाग्यवती परिवार में पूजनीया, धर्म का मर्म समझने वाली, रूप और सुख से युक्त होती है। ऐसी स्त्री के संतान कई होती हैं और वह अस्वस्थ भी रहती हैं।

(८) **पुष्य**—पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न स्त्री सौभाग्य-धन-धर्म और पुत्र से युक्ता, पण्डिता, शान्त हृदया और गृहकार्य में कुशल होती है। सुन्दर शरीर वाली ऐसी स्त्री को मकान और भाइयों का सुख विशेष रूप से मिलता है।

(९) **आश्लेषा**—आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाली बालिका अभक्ष्य को खाने वाली, कुरूपा, चंचला, कपटिनी, उपकार न मानने वाली, हिंसा करने में आनन्द समझने वाली और अनेक व्यसनों से युक्त होती है। प्रो. वी. सूर्यनारायण के अनुसार:—Fond of other Persons, servile, irritable, unsympathetic, disagreeable, liar, with undesirable issues,

(१०) **मघा**—मघा नक्षत्र में उत्पन्न बालिका धर्मशीला. माता-पिता एवं पति में भक्ति रखने वाली, धनवती, बहुत नौकर-नौकरानियों वाली, बहुत उद्योग करने वाली, राज्य के उच्च अधिकारियों की पत्नी होती है। इसका शरीर दुबला होता है और यह संगीत की शौकीन होती है।

(११) **पूर्वाफाल्गुनी**—पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न बालिका भाग्यवती, उत्तम पुत्रों वाली उपकार मानने वाली, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाली। मधुरभाषिणी, राजा की पत्नी, सुन्दरी, चंचल प्रकृति और दान करने वाली होती है।

(१२) **उत्तराफाल्गुनी**—उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाली कन्या सौभाग्यवती, धन, पुत्र, विद्या और सुख से युक्ता, गृहकार्य में कुशल, स्वस्थ और पति की प्यारी होती है।

(१३) **हस्त**—हस्त नक्षत्र में उत्पन्न कन्या अत्यन्त सुन्दरी, क्षमा-युक्ता, शीलवती, धनवती यशस्विनी, अच्छे स्वभाव की, आराम-दायक जीवन व्यतीत करने वाली और वैज्ञानिक दृष्टि से सोचने वाली होती है। यहाँ मतान्तर भी है:—

हस्तोऽद्भूवाङ्गना धृष्टा निर्दया पानतत्परा।
उत्साहिनी सुरूपा च चौर्यकर्मपरायणा॥

(स्त्री जातकम् श्लो० १३)

तीक्ष्णा च दृढ़कामा च परद्रव्यापहारिणी।
स्वकर्म कुशला कन्या जायते चार्कदैवते॥

(१४) **चित्रा**—चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाली बालिका सच्चरित्रा, सुलोचना, अनेक प्रकार के आभूषण और वस्त्रादि रखने वाली और पति की प्यारी होती है।

विशेष—(i) यदि इसी नक्षत्र में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्म हो तो बालिका विष कन्या होती है।

(ii) शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के चित्रा नक्षत्र में जन्म हो तो वह नारी दरिद्रा और पापिनी होती है।

सारांश—चित्रा नक्षत्र में जन्म लेना शुभ है, लेकिन उस दिन चतुर्दशी नहीं होनी चाहिए।

(१५) **स्वाती**—स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न कन्या बहुत मित्रों और

सहेलियों वाली, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाली, किसी के वश में न होने वाली, व्यसनशीला, कीर्तियुक्ता, संतान-सुख से सुखी और साहस रखने वाली होती है। यह सेल्स गर्ल का कार्य कुशलता से कर सकती है।

(१६) **विशाखा**—विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या सुन्दरी, बोलने में चतुर, ईर्ष्या-लोभ से युक्ता, भाइयों की प्रिया, तीर्थ यात्रा की शौकीन और धर्म-परायणा होती है।

(१७) **अनुराधा**—अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या अच्छे मित्रों वाली, स्वार्थरहिता, सुशीला, दयावती, प्रिय-भाषिणी, अधिक क्षुधा वाली, घूमने वाली, धनवती और परदेश में रहने वाले की पत्नी होती है।

(१८) **ज्येष्ठा**—ज्येष्ठा नक्षत्र में पदा होने वाली कन्या सुन्दरी, निर्भय वाक्य बोलने वाली, श्रेष्ठ भाग्य वाली, क्रोध युक्ता, धर्म के प्रति आस्था रखने वाली, धनवती, पुत्र-सुख से युक्त और भाइयों की प्यारी होती है।

(१९) **मूल**—मूल नक्षत्र में उत्पन्न कन्या थोड़े सुख वाली, विधवा, दरिद्रा, रोगयुक्त, बे-समझ, बंधुजनों से हीन, दूसरों के आश्रय में रहने वाली, नीच कार्यों में रत, अभिमानिनी और शत्रुओं से युक्त होती है। समान्यतया मूल नक्षत्र के प्रथम तीन चरणों में अशुभ फल और चतुर्थ चरण में शुभ फल होता है।

(२०) **पूर्वाषाढ़ा**—पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या पवित्रा, उत्तम पति-धन-पुत्रादि के सुख से युक्ता, धीरा, उत्तम वस्त्र और भूषण वाली होती है। ऐसी बालिका की आँखें बड़ी होती हैं और वह शुभ कार्यों को करने वाली, बंधु जनों में मुख्य, धार्मिक कार्यों की नेत्री और उत्तम यश वाली होती है।

(२१) **उत्तराषाढा**—उत्तराषाढा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाली नारी

मन की बात समझने वाली, अनेक प्रकार के सुखों का भोग करने वाली, विनय युक्ता और धर्म वाली, उपकार मानने वाली, सौभाग्य, पुत्र और मित्र जनों से युक्ता होती है।

(२२) **श्रवण** – श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न कन्या बहुत से विषयों को जानने वाली, लोकविश्रुता, धन-पुत्र-सुरुप-सुशीलयुक्ता-नम्र, परोपकारिणी, सदा दान में तत्पर और उदार पुरुष की प्रिय पत्नी होती है।

(२३) **धनिष्ठा**— धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न नारी कहानी और संगीत की शोकीन, सौभाग्यवती, वाहन-सुख प्राप्त करने वाली, दान देने में तत्पर, धैर्यवती, और उत्तम वस्त्र पहनने वाली होती है। ऐसी स्त्री का स्वभाव और चरित्र अत्यन्त श्रेष्ठ होता है।

(२४) **शतभिषा**—शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या अपने परिवार में पूज्या, देवताओं का पूजन करने वाली, शत्रु को जीतने वाली, स्पष्ट बात कहने वाली, कुछ व्यसनशीला और साहसी होती है।

(२५) **पूर्वाभाद्रपदा**—पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या दु:खित-चित्ता, पति को वश में रखने वाली, पण्डिता, धन रहते हुए भी कृपणा, साधुओं का आदर करने वाली, विद्याओं को जानने वाली और बच्चों से प्रेम रखने वाली होती है।

अन्यच्च—

"पाप कर्मरता नित्यं कन्यका सर्वभक्षिणी।
मायाविनी देवभक्ता जायते जैकपादभे॥"

(२६) **उत्तरा भाद्रपदा** – उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाली कन्या सदैव अपने पति का हित करने में तत्परा, क्षमाशीला, को बड़े-बूढ़ों में प्रीति रखने वाली, उत्तम पुत्रों के सुख से सुखी, शत्रु को जीतने वाली, बोलने में चतुरा और धनवती होती है।

(२७) **रेवती**—रेवती नक्षत्र में उत्पन्न कन्या लोक में मान्या, धन-धान्य-सौभाग्य और पुत्रों से युक्ता, अपने सम्पूर्ण अंगों से सुन्दरी, पुष्ट शरीर वाली, बहुत-सी उत्तम सहेलियों वाली, वाहन सुखों का सेवन करने वाली और व्रत-तप का पालन करने वाली होती है।

जन्मकालीन पाये के अनुसार

प्रायः समस्त राजस्थान में और कुछ अन्य प्रदेशों में भी यह प्रथा प्रचलित है कि जन्मनाम के साथ ही साथ बालक या बालिका किस पाये में उत्पन्न हुई है, यह भी बता दिया जाता है। बाद में इसके आधार पर शुभाशुभ निश्चित किया जाता है।

जिस तरह पलंग के चार पाये होते हैं—उसी प्रकार जन्म-कुण्डली के द्वादश भावों को ४ भागों में विभक्त कर तीन-तीन भावों का एक-एक पाया निम्नलिखित प्रकार से निश्चित किया गया है:—

(१) प्रथम भाव, छठा भाव, एकादश भाव—इनका नाम रखा गया है—**सुवर्ण पाद** (सोने का पाया);

(२) द्वितीय भाव, पंचम भाव, नवम भाव—इनका नाम रखा गया है—**रजत पाद** (चांदी का पाया);

(३) तृतीय भाव, सप्तम भाव, दशम भाव—इसका नाम रखा गया है—**ताम्र पाद**—(तांबे का पाया);

(४) चतुर्थ भाव, अष्टम भाव, द्वादश भाव—इनका नाम रखा गया है—**लौह पाद** (लोहे का पाया)।

जन्म लग्न से जिस भाव में चन्द्रमा हो उस भाव के अनुसार पाया निर्धारित किया जाता है।

कुण्डली संख्या १
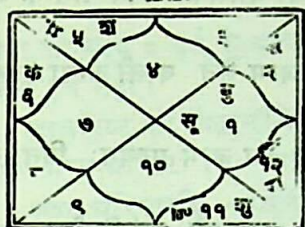
उदाहरण के लिए कुण्डली संख्या १ की बालिका के चन्द्रमा एकादश भाव में हैं अतः नियमानुसार बालिका का जन्म सुवर्णपाद में कहा जायेगा। यदि चन्द्रमा द्वादश भाव में होता तो लौहपाद बताया जाता।

शुभाशुभ की दृष्टि से प्रायः चांदी का पाया सर्वश्रेष्ठ माना जाता है; उसके पश्चात् "तांबे का पाया" समझा जाता है। सुवर्ण का पाया तृतीय श्रेणी का और चतुर्थ 'लौहपाद' निकृष्ट समझा जाता है।

मतान्तर से ज्योतिर्विद् नक्षत्रों के आधार पर भी पाद निश्चित करते हैं। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा नक्षत्रों में जन्म चांदी के पाये में कहा जाता है और यह शुभ एवं श्रेष्ठ माना गया है। ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, नक्षत्रों में जन्म तांबे के पाये में कहा जाता है; यह द्वितीय श्रेणी का श्रेष्ठ होता है। रेवती, अश्विनी, भरणी नक्षत्रों में जन्म सुवर्ण के पाद में कहा जाता है जो मध्यम माना गया है। इनके अतिरिक्त शेष नक्षत्रों में जन्म लोहे के पाद में मानते हैं तथा वह नेष्ट एवं धन-हानिकारक होता है।

परिवार के लिये शुभाशुभ

(१) आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाली कन्या अपनी सास का नाश करने वाली होती है।

(२) विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या देवर के लिये अशुभ फलदायी होती है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पैदा होने वाली बालिका अपने पति के बड़े भाई का नाश करने वाली होती है।

(४) मूल के प्रथम तीन चरणों में जन्म लेने वाली कन्या श्वसुर के लिए मारक सिद्ध होती है।

(५) अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण का जन्म मुख्यतः पिता को भय एवं कष्टकारक है।

(६) मघा के प्रथम चरण का जन्म माता को एवं द्वितीय चरण का पिता को नेष्ट माना गया है किन्तु तृतीय और चतुर्थ चरण का जन्म शुभ होता है।

(७) रेवती नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण में जन्म हो तो शुभ किन्तु चतुर्थ चरण में यदि जन्म हो तो अशुभ एवं कष्ट-कारक सिद्ध होता है।

बालारिष्ट विचार

हम अपने दैनिक जीवन में देखते आये हैं कि बालक-बालिकाओं की मृत्यु उनकी शैशवावस्था में बहुत अधिक होती है। वैद्यों और आधुनिक चिकित्सकों का अध्ययन भी यही बताता है। भारतीय ज्योतिष में भी 'बालारिष्ट' का विशेष विवरण मिलता है जिसके आधार पर यह ज्ञात किया जा सकता है कि नवजात शिशु दीर्घजीवी होगा या नहीं। महर्षि पाराशर बालारिष्ट-विचार की आवश्यकता बताते हुए कहते हैं—

चतुर्विंशतिवर्षाणि यावद् गच्छन्ति जन्मतः।
जन्मारिष्टं तु तावत् स्यादायुर्दायं न चिन्तयेत् ॥

(वृ० पा० होरा ६।२)

महर्षि पाराशर ने जहाँ २४ वर्ष तक बालारिष्ट का प्रभाव माना है वहाँ बाद के महर्षियों और ज्योतिर्विदों ने केवल ८ वर्ष तक ही बालारिष्ट का विशेष प्रभाव स्वीकार किया है। हमारे विचार से भी

शिशु की आयु ८ वर्ष के बाद ही गणित से निश्चित करनी चाहिए, इससे पूर्व नहीं।

बालरिष्ट को विद्वानों ने तीन भागों में विभक्त किया है:—
(१) गण्ड-अरिष्ट (२) ग्रह-अरिष्ट और (३) पताकी-अरिष्ट।

गण्ड अरिष्टादि--आश्लेषा के अन्त और मघा के आदि के दोष युक्त काल को रात्रि गण्ड, ज्येष्ठा और मूल के दोषयुक्त काल को दिवागण्ड एवं रेवती और अश्विनी के दोषयुक्त काल को संध्यागण्ड कहते हैं। तात्पर्य यह है कि आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र की अंतिम चार घड़ियाँ तथा मघा, मूल और अश्विनी नक्षत्र के आदि की चार घडियाँ गण्डदोष युक्त मानी गयी हैं। इस कालावधि में उत्पन्न कन्याओं को अरिष्ट होता है। मतान्तर से ज्येष्ठा के अन्त की एक घड़ी और मूल के आदि की दो घड़ियों को अयुक्त मूल कहा गया है। इन तीन घड़ियों के भीतर जन्म लेने वाली बालिकाओं को भी विशेष अरिष्ट होता है।

अश्विनी का गण्डदोष रहने से १६ वर्ष, मघा का ८ वर्ष, मूला का ४ वर्ष, आश्लेषा का २ वर्ष, ज्येष्ठा का १ वर्ष और रेवती का भी १ वर्ष पर्यन्त अनिष्ट फल का भय रहता है।

गण्ड-अरिष्ट मे दो बातें विशेष विचारणीय हैं--प्रथम यह कि दिन में जन्म होने से रात्रि-गण्ड और रात में जन्म होने से दिवागण्ड अरिष्टकारी नहीं होता है। द्वितीय यह कि दिवागण्ड में कन्या का जन्म होने से कई आचार्यों के मत से गण्डदोष नहीं लगता है।

दोनों पक्षों की पंचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या के अन्तिम गण्ड में जन्म होना भी अनिष्टकारी माना गया है। प्रायः कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को किसी भी अंश में बालिका का जन्म होने पर कोई न कोई अनिष्ट अवश्य होता है।

ग्रह अरिष्ट विचार

निम्नलिखित योगों में अरिष्ट होता है; जब—

(१) लग्न में चन्द्रमा, बारहवें भाव में शनि, नौवें घर में सूर्य और अष्टम में मंगल हो;

(२) पापग्रह लग्न एवं सप्तम स्थान में हों; चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त हो एवं शुभ ग्रह से दृष्ट न हो;

(३) क्षीण चन्द्रमा व्ययस्थान (१२ वें भाव) में हो, लग्न एवं अष्टम स्थान में पाप ग्रह हो तथा किसी भी केन्द्र स्थान में शुभ ग्रह न हों;

(४) लग्न में क्षीण चन्द्रमा एवं अष्टम तथा केन्द्र स्थान में पाप ग्रह हो;

(५) लग्न अथवा चन्द्रमा के दोनों ओर क्रूर पाप ग्रह हो;

(६) शनि राहु के साथ, चन्द्रमा लग्नस्थ तथा मंगल अष्टम स्थान में हो;

(७) लग्नेश अष्टम स्थान में ओर अष्टमेश लग्न में हो;

(८) नवें, पाँचवें, सातवें और आठवें भाव में पाप ग्रह स्थित हो तथा चन्द्रमा को शनि एवं मंगल देखते हों;

(९) चन्द्रमा छटे, आटवें या बारहवें भाव में हो और उस पर राहु की दृष्टि हो;

(१०) लग्ने भास्करपुत्रश्च निधने चन्द्रमा यदि ।
तृतीयस्थो यदा जोवः स याति यममन्दिरम् ॥

अर्थात्, लग्न मे शनि, अष्टम में चन्द्रमा और तृतीय भाव में गुरु हो तो मरणप्रद होता है।

(११) होरायां नवमे सूर्यः सप्तमस्थः शनैश्चरः ।
एकादशे गुरुः शुक्रो मासमेकं स जोवति ॥

अर्थात् लग्न या नवम में सूर्य, सप्तम में शनि और एकादश भाव में गुरु, शुक्र हो तो एक मास में मरण होता है।

अरिष्ट समय का अनुमान —

(१) अरिष्टकारी ग्रहों में से सबसे बली ग्रह जिस राशि में हो उस राशि में जब जन्म के बाद गोचर का चन्द्रमा जाता है तो उस समय अरिष्ट होता है।

(२) जन्म-समय का चन्द्रमा जिस राशि में हो, उस राशि में जब गोचर का चन्द्रमा जाता है तो उस समय अरिष्ट होता है।

(३) जन्म के बाद जब गोचर का चन्द्रमा जन्म लग्न राशि में जाता है तो अरिष्ट का समय होता है।

विशेष—गोचर का चन्द्रमा एक राशि पर वर्ष भर में लगभग तेरह बार आता है। उपर्युक्त योगों के अनुसार वर्ष में अधिक से अधिक १३×३=३६ बार चन्द्रमा अरिष्ट काल बनाता है। इन सब अवसरों में जिस किसी बार चन्द्रमा क्षीण; षष्ठेश और अष्टमेश होगा और पाप ग्रहों की दृष्टि से युक्त होगा तभी विशेष अरिष्टकारी होगा।

अरिष्ट-भंग-योग—बालारिष्ट का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि प्रायः सभी कुण्डलियों में एक न एक योग विद्यमान मिलेगा। अतः अरिष्ट योगों के साथ ही साथ अरिष्ट भंग योगों की जानकारी भी आवश्यक है। इन योगों की उपस्थिति होने पर जातक का कुछ नहीं बिगड़ता। कतिपय अरिष्ट भंग-योग इस प्रकार हैं:—

(१) यदि बुध, गुरु और शुक्र—इनमें से एक भी केन्द्र में हो तो सब अरिष्टों को नाश कर देता है।

(२) एक एव बली जीवो लग्नस्थोऽ रिष्टंसंचयम्।
हन्ति पापक्षयं भक्त्या प्रणाम इव शूलिनः॥

अर्थात् अकेला गुरु भी लग्न में हो तो सब अरिष्टों का उसी प्रकार नाश कर देता है जिस प्रकार भक्तिपूर्वक महादेव को किया गया एक ही प्रणाम समस्त पापों का नाश कर देता है।

(३) यदि लग्नेश वली होकर अकेला भी केन्द्र में हो तो भी सब अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं।

(४) मंगल यदि गुरु से युत या दृष्ट हो तो समस्त अरिष्ट नष्ट होते हैं ।

(५) मंगल, राहु और शनि ३,६,११ स्थानों में हो तो अरिष्ट-नाशक होते हैं ।

(६) चन्द्रमा जब अपनी राशि, उच्च राशि तथा मित्र के गृह में स्थित हो तो सर्वारिष्ट नष्ट करता है ।

निम्नलिखित अवस्थाओं में भी अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं:—

(७) जब मेष अथवा कर्क-राशिगत राहु लग्न में बैठा हो;

(८) जब जन्म के समय कई ग्रह उच्च हों और शेष स्वगृही हों,

(९) जब राहु तृतीय, षष्ठ अथवा एकादश स्थान में बैठा हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती हो;

(१०) जब चन्द्र राशि का स्वामी लग्नगत हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो;

(११) जब समस्त ग्रह शीर्षोदय में हों ।

: ३ : स्वभाव और आकृति ज्ञान

स्त्री का स्वभाव और आकृति, शरीर की पुष्टि और निर्बलता, आठ व्यावहारिक नियम, सुन्दरता जानने के लिए एक नवीन मत, वर्ण(रंग) की जानकारी, शारीरिक सुख-दुखः ।

स्वभाव और आकृति

(१) जन्म लग्न और चन्द्र राशि से स्त्री के शरीर और उसकी आकृति का विचार करना चाहिये । जिस स्त्री के जन्मकाल में लग्न और चन्द्रमा सम राशियों (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और

मीन) में से किसी भी राशि में बैठे हों, वह स्त्री, स्त्रियोचित स्वभाव और आकृति वाली होती है।

(२) लग्न और चन्द्रमा, दोनों शुभग्रहों से दृष्ट-युत हों तो अच्छे स्वभाव और अनेक भूषणों से युत समझना चाहिये।

(३) यदि लग्न और चन्द्रमा दोनों विषम राशियों में से किसी भी राशि में स्थित हों तो वह कन्या पुरुष के-से आकार की और वैसे स्वभाव की होती है। अंग्रेजी में ऐसी स्त्री के लिये 'He woman' (ही वुमैन) शब्द का प्रयोग होता है।

(४) लग्न और चन्द्रमा पाप ग्रह से युत, या दृष्ट हों तो स्त्री पाप-स्वभाव वाली और अच्छे गुणों से हीन होती है।

(५, यदि लग्न और चन्द्रमा दोनों में से कोई एक विषम राशि में और दूसरा सम राशि में बैठा हो तो स्त्री मध्यम स्वभाव की और मध्यम आकृति की होती है। इसी प्रकार यदि लग्न और चन्द्रमा में से कोई एक तो पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो और दूसरा शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री को मध्यम स्वभाव और आकृति से युक्त जानना चाहिये।

(६) जिस स्त्री के चन्द्रमा, बुध और शुक्र निर्बल हों और शेष ग्रह बलवान् हों, शनि सम राशि में स्थित हो और लग्न विषम राशि का हो तो वह स्त्री पुरुष के समान स्वभाव और शरीर वाली होती है।

(७) जिस स्त्री का शुक्र और पूर्ण बली चन्द्रमा लग्न में हो वह स्त्री सुन्दर आकृति और उत्तम आभूषणों से युक्त होती है।

(८) जिस स्त्री के चन्द्रमा और बुध लग्न मे हों उसको सामान्यतया सुन्दरी, गुणवती और अनेक कलाओं में चतुर समझना चाहिये।

शरीर की पुष्टता और निर्बलता—स्त्री शरीर की पुष्टता और निर्बलता के लिये विभिन्न ग्रहों और राशियों के तत्त्वों आदि की जानकारी आवश्यक है। अतएव इस सम्वन्ध में आवश्यक जानकारी प्रस्तुत की जा रही है:—

सूर्य	शुष्क ग्रह	अग्नि तत्त्व
चन्द्र	जल ग्रह	जल तत्त्व
मंगल	शुष्क ग्रह	अग्नि तत्त्व
बुध	जल ग्रह	पृथ्वी तत्त्व
वृहस्पति	जल ग्रह	आकाश या तेज तत्त्व
शुक्र	जल ग्रह	जल तत्त्व
शनि	शुष्क ग्रह	वायु तत्त्व
×	×	×

मेष	अग्नि	पादजल	(१।४)
वृष	पृथ्वी	अर्द्धजल	(१।२)
मिथुन	वायु	निर्जल	(०)
कर्क	जल	पूर्ण जल	(१)
सिंह	अग्नि	निर्जल	(०)
कन्या	पृथ्वी	निर्जल	(०)
तुला	वायु	पाद जल	(१।४)
वृश्चिक	जल	पाद जल	(१।४)
धनु	अग्नि	अर्द्धजल	(१।२)
मकर	पृथ्वी	पूर्णजल	(१)
कुम्भ	वायु	अर्द्धजल	(१।२)
मीन	जल	पूर्ण जल	(१)

कतिपय नियम :—

(१) यदि लग्न जल राशि हो और उसमें जल ग्रह की स्थिति भी हो तो स्त्री का शरीर अवश्य मोटा होता है।

(२) लग्न और लग्नाधिपति जल राशिगत होने से प्रायः स्त्री का शरीर खूब स्थूल होता है।

(३) यदि लग्न पृथ्वी राशि हो और पृथ्वी ग्रह की उसमें स्थिति हो तो स्त्री प्रायः नाटी परन्तु दृढ़काया होती है।

(४) यदि शुष्क ग्रह (सू० श० मं०) लग्न में हो तो शरीर कृश तथा दुर्बल होता है।

(५) यदि लग्न निर्जल राशि में हो तो स्त्री का शरीर प्रायः कृश होता है। यदि चन्द्रमा भी निर्जल राशि में गया हो तो इस योग को विशेष बलवान् समझना चाहिए।

(६) यदि लग्न जलराशि हो और उसमें शुभ ग्रह स्थित हो तो शरीर स्थूल होता है।

(७) लग्न में बृहस्पति के रहने से या उसकी पूर्ण दृष्टि पड़ने पर शरीर के स्थूल होने में और सहायता मिलती है।

(८) लग्नेश शुष्क ग्रह के साथ हो अथवा निर्जल राशि में हो तो स्त्री का शरीर दुबला-पतला रहता है।

आठ व्यावहारिक नियम

(१) पहली बात यह देखनी चाहिए कि लग्न राशि कैसी है।

(२) चन्द्र राशि कैसी है ?

(३) लग्न में यदि ग्रह है तो वह कैसा है ?

(४) लग्नेश कैसा ग्रह है और किस राशि में है ?

(५) लग्नेश के साथ कैसे ग्रह हैं ?

(६) लग्न पर किसकी दृष्टि है ?

(७) लग्नेश अष्टम या द्वादश भावगत तो नहीं हैं ?

(८) बृहस्पति लग्न में है अथवा लग्न को देखता है और कैसी राशि में बृहस्पति की स्थिति है ?

उदाहरण- स्वर्गीय महारानी विक्टोरियो की कुण्डली देखने से उपर्युक्त आठ नियमों के अनुसार फल इस प्रकार होता है:—

(१) लग्न राशि वृष पृथ्वी और अर्द्धजल राशि है।

(२) चन्द्र राशि भी वृष है जो पृथ्वी और अर्द्धजल राशि है।

(३) लग्न में दो ग्रह हैं— सूर्य और चन्द्रमा। सूर्य शुष्क ग्रह और अग्नि तत्त्व वाला है; इसके विपरीत चन्द्रमा जल ग्रह और जल तत्त्व वाला है। अन्य एक विशेष बात ध्यान देने योग्य यह है कि चन्द्रमा यहाँ अपनी उच्च राशि का है।

(४) लग्नेश शुक्र जलग्रह है और पाद जल राशि मेष में गया है।

(५) लग्नेश शुक्र के साथ बुध है। बुध जल ग्रह है।

(६) लग्न पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि है। बृहस्पति जल ग्रह है।

(७) लग्नेश द्वादश भाव में गया है।

(८) बृहस्पति लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। बृहस्पति मकर राशि में बैठा है जो कि पृथ्वी तत्व वाली पूर्ण जल राशि है।

परिणाम - इन सब बातों पर ध्यान देने से महारानी के शरीर में जल तत्त्व की अधिकता विशेष रूप से प्रतीत होती है और साथ ही स्थूलता प्रदर्शित करने वाले अन्य नियम भी लागू हैं; अतएव कहना होगा कि महारानी विक्टोरिया शरीर से मोटी थीं। यथार्थत: सारा विश्व उनकी स्थूलता से परिचित है। ध्यान रहे—कि जल भाग की अधिकता से मोटेपन की संभावना होती है। वायु राशि, अग्नि राशि और शुष्क ग्रह के आधिपत्य में स्त्री के शरीर में कृशता तथा दुर्बलता की उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार पृथ्वी तत्त्व शरीर को दृढ़ता प्रदान करता है।

सुन्दरता जानने के लिये एक नवीन मत

ज्योतिष शिरोमणि श्री मनुभाई शाह ने लिखा है कि महिलाओं की कुण्डली में उनकी सुन्दरता निम्नलिखित दो नियमों आधार पर तय करनी चाहिये ।

(१) अगर सूर्य, चन्द्रमा, बुध, गुरु या शुक्र (इनमें से कोई भी) का सम्बन्ध प्रथम भाव से हो या जन्म लग्न में सिंह, कर्क, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, वृष और तुला राशियाँ (इनमें कोई भी) हो तो स्त्री (पुरुष भी) सुन्दर होती है ।

(२) अगर सूर्य, चन्द्रमा, बुध, गुरु या शुक्र (इनमें से कोई भी) का सम्बन्ध लग्नेश से हो या लग्नेश सिंह, कर्क, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, वृष और तुला राशियों में से किसी एक में स्थित हो तो हम स्त्री के सुन्दर होने का अनुमान लगा सकते हैं ।

विशेष—सम्बन्ध ग्रहों के मेल या दृष्टि से होता है ।

उदाहरण--कुण्डली संख्या ३
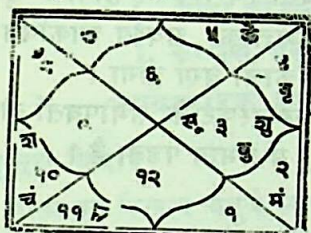
यह कुण्डली ईरान की भूतपूर्व मलिका सुरैया की है। सुन्दरता की इस देवी पर उक्त नियमों को लागू करके जाँचिये ।

(१) प्रथम भाव में कन्या राशि है ।

(२) लग्नेश (बुध) मिथुन राशि में ही गया है जो उसकी अपनी राशि भी है ।

(३) इस प्रकार लग्नेश का सम्बन्ध शुक्र और बुध से है । शनि का सम्बन्ध लग्न या लग्नेश से नहीं है ।

वर्ण (रंग) की जानकारी

स्त्री शरीर का रंग चन्द्रमा के नवांश के अनुसार होता है

चन्द्रमा जिस नवाँश में गया हो, उसके अधिपति के अनुसार रंग का विचार करना चाहिए।

चन्द्रमा यदि सूर्य के नवांश में हो तो स्त्री का रंग श्याम वर्ण होगा पर चन्द्रमा यदि चन्द्रमा के ही नवांश में हो तो गौर-वर्ण होगा। चन्द्रमा यदि मंगल के नवांश में हो तो स्त्री को रक्त गौर वर्ण (लाली लिए गोराई) वाली समझना चाहिए। चन्द्रमा यदि बुध के नवांश में हो तो वर्ण श्याम होगा। बृहस्पति के नवांश में तप्तकांचन वर्ण होता है। शुक्र के नवांश में चन्द्रमा के होने पर स्त्री का वर्ण श्याम लेकिन चित्ताकर्षक होता है। शनि के नवांश में स्थित चन्द्रमा से काला रंग समझना चाहिए।

सूर्य लग्न में हो स्त्री ताम्रवर्ण वाली होगी। चन्द्रमा लग्न में रहने से गौर वर्ण होगा। मंगल लग्न में हो तो रक्त गौर वर्ण होगा। बुध लग्न में हो तो साफ श्याम वर्ण होगा। वृहस्पति लग्न मे हो तो स्त्री का रंग कांचनवर्ण और अत्यन्त चित्ताकर्षक होगा। शुक्र लग्न में हो तो रंग गोरा न होगा पर चित्त को अवश्य आकर्षित करने वाला होगा। शनि लग्न में हो तो काला वर्ण होगा।

इसके अतिरिक्त जो ग्रह ठीक लग्नस्फुट के समीपवर्ती हो, उसके अनुसार भी स्त्री के रंग निर्धारण में प्रभाव पड़ता है।

शारीरिक सुख-दुःख

(१) लग्न राशि और लग्नेश के वली होने पर स्त्री जीवन-पर्यन्त सुखी (शारीरिक दृष्टि से) रहती है।

(२) ६ठे, ८वें और १२वें भाव के स्वामी यदि लग्न में निर्बल होकर वैठे हों तो शरीर सुख में साधारण कमी करते हैं।

(३) छठे और वारहवें घर के स्वामी यदि स्वगृही हों तो भी शरीर सुख में कुछ कमी लाते हैं।

(४) लग्नेश के निर्वल होने पर शरीर सुख नहीं होता।

(५) लग्न में सूर्य+बुध यदि एक साथ हों तो शरीर सुख में कमी नहीं पड़ती ।

(६) स्वगृही लग्नेश, भले ही पाप ग्रह ही क्यों न हो, शरीर-सुख में कमी नहीं करता ।

(७) यदि लग्नेश मंगल छठे भाव में स्थित हो तो शरीरसुख का अभाव नहीं करता क्योंकि वह अपनी आठवीं पूर्ण दृष्टि से लग्न को देखता रहता है ।

: ४ : मातृ-पितृ-भ्रातृ-सुखासुख-विवेचन

मातृ-सुख विचार, मातृ-प्रेम विचार, बाल्यकाल में माता की मृत्यु, माता की मृत्यु के समय का विचार, पितृ-सुख-विचार, अल्प-पितृ-सुख-योग, पिता की मृत्यु के समय का विचार, भाई-बहिन का सुख, अनुज-उत्पत्ति योग, भ्रातृ संख्या विचार ।

व्यवहारिक कुण्डलियों का अध्ययन

मातृ-सुख-विचार

माता का विचार चतुर्थ स्थान से, चतुर्थ स्थान के स्वामी से और चन्द्रमा से होता है । यदि कन्या का जन्म दिन के समय हो तो शुक्र से भी माता का विचार किया जाता है । निम्नलिखित अवस्थाओं में माता दीर्घायु होती है और बालिका को मातृ-सुख अच्छा प्राप्त होता है.—

(१) यदि चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश उच्चराशि में हों और मातृकारक ग्रह बलवान् हों;

(२) मातृकारक ग्रह शुभ ग्रहों के साथ हो और मातृ-भावेश वलवान् हो;

(३) चन्द्रमा अथवा शुक्र केन्द्र में हों और चतुर्थ भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो;

(४) चन्द्रमा अथवा शुक्र नवांश कुण्डली में वलवान् हो ;

मातृ-प्रेम-विचार—

(१) यदि लग्नेश और चतुर्थेश की आपस में मित्रता हो और ये शुभ ग्रहों के साथ हों अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो माता और पुत्री में प्रेम भाव रहता है।

(२) यदि चतुर्थ भाव का स्वामी केन्द्र में हो और उस पर लग्नेश की दृष्टि हो तो माता और कन्या में निश्चय ही परस्पर प्रेम रहता है।

कन्या के बाल्यकाल में माता की मृत्यु होती है—

(१) यदि चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ और दो पाप ग्रहों के मध्य में हो;

(२) यदि चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो;

(३) चन्द्रमा सूर्य, मंगल अथवा शनि को साथ लेकर छठे स्थान में बैठा हो;

(४) यदि मंगल अथवा शनि चतुर्थ स्थान में हो और पाप ग्रहों से देखे जाते हों;

(५) यदि लग्न और चन्द्रमा पाप ग्रहों से देखे जाते हों, शुभ ग्रहों के साथ न हों, लग्नेश निर्वल हो;

(६) यदि संयोग से कन्या ने अपनी माता के जन्म-नक्षत्र में ही जन्म लिया हो।

माता की मृत्यु का समय

(१) यदि शनि और मंगल चन्द्रमा से सप्तम स्थान में हों तो माता की मृत्यु सात या आठ मास के अभ्यन्तर ही हो जाती है।

(२) क्षीण चन्द्रमा से त्रिकोण में पाप ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो छह मास में ही माता मर जाती है।

(३) यदि पंचमेश बली हो और लग्नेश, चतुथश और चन्द्रमा निर्बल हो तो उस बालिका की माता दूसरे प्रसव के समय मरती है।

(४) पंचमेश दशमेश और एकादशेश की दशा-अन्तर्दशा में भी माता की मृत्यु होते देखी गयी है।

(५) सूर्य स्पष्ट में से चन्द्र स्पष्ट घटाइये। जो राशि शेष रहे उस राशि में अथवा उस राशि से त्रिकोण में अथवा उस राशि के नवांश में जब गोचर के शनि और बृहस्पति जाते हैं तो उस समय माता की मृत्यु की सम्भावना होती है।

(६) यदि चतुर्थेश के साथ अष्टमेश हो ता चतुर्थेश की दशा में मातृ-मरण होता है।

(७) चन्द्रमा, चन्द्रमा के साथ वाला ग्रह, चतुर्थेश और उसके साथ वाला ग्रह चतुर्थ भाव में बैठा ग्रह, और चतुर्थ भाव को देखने वाला ग्रह, इन सबके बीच में जो सबसे अधिक अनिष्टकारी ग्रह हो, उसी ग्रह की दशा अन्तर्दशा में माता की मृत्यु होती है।

(८) चन्द्र राशि और चन्द्र-नवांश में से जो अधिक बलवान् हो उस राशि में जब गोचर का सूर्य जाता है, तब माता की मृत्यु के मास का ज्ञान होता है। मृत्यु तभी होगी जब अनिष्टकर ग्रहों की दशा अन्तर्दशा भी उस मास में चालू होगी।

(९) सूर्य का नवांश ज्ञात करिये। उस नवाँश का स्वामी जिस

नवांश में हो उसमें जब गोचर का चन्द्रमा जाता है, तब माता का मृत्यु-दिवस ज्ञात होता है।

पितृ-सुख विचार

कन्या के पितृ-सुख का विचार दशम स्थान, दशमेश और सूर्य से करना चाहिए। यदि रात्रि का जन्म हो तो मतान्तर से शनि से भी पिता का विचार किया जाता है। '**फलित सूत्र**' के अनुभवी लेखक की सम्मति में यदि दशम स्थान में विषम राशि हो तो इस भाव से पितृ-सुख का विचार किया जाना चाहिए। सम राशि की अवस्था में चतुर्थ भाव से उक्त विचार करना उत्तम रहता है। संक्षेप में—

निम्नलिखित अवस्थाओं में जातक को पितृ सुख उत्तम मिलता है:—

(१) दशमेश शुभ ग्रह हो और वह शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो।
(२) दशमेश बृहस्पति शुक्र से युक्त हो।
(३) नवमेश उच्च और परम उच्च का हो।
(४) चन्द्र कुण्डली में केन्द्र स्थान में शुक्र गया हो।
(५) दशमेश शुभ ग्रहों के मध्य में हो।

अल्प पितृ-सुख योग निम्नलिखित हैं—

(१) सूर्य, मंगल दसवें या नौवें भाव में हो;
(२) पाप ग्रह से युत सूर्य सातवें भाव में गया हो,
(३) सातवें स्थान में सूर्य, दसवें स्थान में मंगल और बारहवें भाव में राहु गया हो,
(४) चतुर्थेश ६।८।१२ वें भाव में गया हो,
(५) दशमेश सूर्य मंगल से युत हो,
(६) दशम भाव में दशमेश की शत्रु राशि का ग्रह हो।

पितृ- मृत्यु का समय—

(१) यदि सूर्य और शनि बारहवें भाव में हों और क्षीण चन्द्रमा

सप्तमस्थ हो तो पिता की मृत्यु शीघ्र होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों के द्वारा देखा जाता हो तो मृत्यु तीन वर्षों के अभ्यन्तर होती है।

(२) यदि मंगल और सूर्य साथ हों और उन पर शनि की दृष्टि पड़ती हो तो पिता की मृत्यु एक वर्ष के भीतर होती है।

(३) यदि राहु नवम भाव में हो और उस पर सूर्य, मंगल अथवा शनि की दृष्टि पड़ती हो तो बालिका के जन्म से एक सप्ताह के भीतर पिता को कोई विशेष अरिष्ट होता है।

(४) दशम स्थान में यदि मंगल शत्रु राशि का हो तो पिता की मृत्यु शीघ्र होती है।

(५) यदि सूर्य, शनि और मंगल तीनों एक साथ होकर किसी स्थान में बैठें हों तो बालिका के जन्म के पूर्व ही पिता की मृत्यु होती है।

(६) यदि जन्मकालीन सूर्य और शुक्र चर राशिगत हों और मंगल से दृष्ट अथवा युत हों तो बालक के पिता की मृत्यु जन्म के पूर्व ही परदेश में हो गयी होगी— ऐसा समझना चाहिये।

(७) लग्न से एकादशस्थ अथवा नवमस्थ शनि, मंगल और राहु अपनी दशा अन्तर्दशा में पिता के लिये मारक होते हैं।

(८) यदि नवमेश के साथ अष्टमेश हो अथवा अष्टमेश की नवमेश पर दृष्टि हो तो नवमेश की दशा में पिता की मृत्यु हो सकती है।

(९) जो जो पाप ग्रह सूर्य से द्वितीय और द्वादश में हों और जिस-जिस पाप ग्रह के साथ सूर्य हो अथवा जिस जिस पाप ग्रह से सूर्य सातवें भाव में गया हो, वही-वही ग्रह पिता के लिए अपनी दशा अन्तर्दशा में दुःखदायी अथवा मृत्युकारक होते हैं।

(१०) यदि लग्न में बृहस्पति और द्वितीय भाव में सूर्य, शनि, मंगल और बुध हो तो बालिका के विवाह के समय उसके पिता की मृत्यु होती है।

(११) यदि लग्न में अथवा चतुर्थ भाव में राहु हो और शत्रु राशि में बृहस्पति गया हो तो पिता की मृत्यु बालिका के २३वें वर्ष के लगभग होती है।

(१२) भाग्येश व्ययभाव में और व्ययेश भाग्य भाव में हो तो ४४ वर्ष की आयु में पिता की मृत्यु होती है।

(१३) दशम स्थान का स्वामी सूर्य, चन्द्र, मंगल से युत हो तो ५० वर्ष की आयु में पिता का मरण कहना चाहिए।

(१४) धन भाव में शनि और आठवें भाव में सूर्य गया हो तो २१वें, २६वें अथवा ३०वें वर्ष में पिता का स्वर्गवास होता है।

(१५) भाग्येश नीच राशि में गया हो, उस नीच राशि का स्वामी नवम भाव में गया हो तो २८वें या ३५वें वर्ष में पिता का मरण होता है।

(१६) सूर्य जिस राशि अथवा नवांश में रहे, उसमें से बलवान् राशि के त्रिकोण में गोचर का सूर्य जाने से पिता की मृत्यु के मास का ज्ञान होता है।

(१७) यदि रवि अथवा चन्द्रमा केन्द्रस्थ चर राशिगत हो तो ऐसी बालिका अन्तिम समय में पिता के पास नहीं रहती। उसे कई कारणों से अन्य मृतक संस्कारों में भी उपस्थित होने में बाधा उत्पन्न होती रहती है।

भाई-बहन का सुख

तृतीय स्थान से विशेष रूप से भाई और बहन का विचार होता है। परन्तु बड़े भाई और बड़ी बहन का विचार एकादश भाव से करना चाहिए। भ्रातृ शब्द से तात्पर्य भाई और बहिन दोनों से होता है। तृतीय भाव, एकादश भाव, तृतीयस्थ ग्रह, एकादशस्थ ग्रह और भ्रातृ-कारक ग्रह (मंगल) से भ्रातृ-सुख-दु:ख का अध्ययन करना चाहिए। इन अवस्थाओं में बालिका को भाई-बहिनों का सुख होता है:—

(१) तृतीय स्थान में शुभ ग्रह के रहने से,

(२) तृतीय भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि रहने से,

(३) तृतीयेश के वलि होने पर,

(४) तृतीय भाव के दोनों ओर शुभ ग्रहों के रहने से,

(५) तृतीयेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ने पर,

(६) तृतीयेश के साथ शुभ ग्रहों के रहने पर,

(७) एकादश भाव में शुभ ग्रह हों और एकादशेश ६-८-१२ वें भाव में नहीं हो तो ज्येष्ठ भ्राता का सुख होता है और वे लोग सुखी भी रहते हैं।

(८) यदि तृतीयेश लग्न में अथवा लग्नेश के साथ हो तो वालिका छोटे भाई-वहिनों के सुख से युक्त होती है।

अनुज-उत्पत्ति-योग

(१) यदि तृतीय स्थान में पुरुष ग्रह बैठा हो तो वालिका का पृष्ठज भाई होता है।

(२) यदि तृतीयेश और चतुर्थेश मंगल के साथ शुभ प्रभाव में हो तो वालिका को छोटे भाई का योग होता है।

(३) 'जातक तत्त्व' में लिखा है कि लग्न और वारहवें भाव में पाप ग्रह होने से अनुज-उत्पत्ति-योग होता है।

(४) तृतीय स्थान से केन्द्र अथवा त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तो छोटे भाइयों की वृद्धि होती है।

(५) यदि तृतीय भाव में स्त्री ग्रह बैठा हो तो वालिका के एक छोटी वहन होती है।

भ्रातृ-सुख-अभाव-योग

(१) तृतीय भाव में पाप ग्रह हो अथवा पापग्रह से दृष्ट हो तो सामान्यतया भ्रातृ-हानि करने वाला योग होता है।

(२) भ्रातृ-कारक ग्रह मंगल पापग्रहों के बीच में हो और साथ

ही तीसरे भाव पर पाप ग्रहों की पूर्ण दृष्टि हो तो भाई का अभाव सूचित होता है।

(३) द्वितीय और चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तो भाई-वहिन की मृत्यु होती है।

(४) तृतीयेश राहु या केतु के साथ छठे, आठवें और वारहवें भाव में हो तो भ्रातृ-सुख का अभाव होता है।

(५) तृतीयेश या मंगल ३-६-११ वें भाव में हो और शुभ ग्रह से नहीं देखा जाता हो तो भाई का सुख नहीं होता।

(६) ग्यारहवें स्थान का स्वामी पाप ग्रह हो या उस भाव में पाप ग्रह बैठा हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट नहीं हो तो वड़े भाई का सुख नहीं होता।

(७) यदि तृतीय स्थान में सूर्य हो तो वड़े भाई का नाश होता है। शनि होने से पृष्ठज का और मंगल होने पर अग्रज व पृष्ठज दोनों का नाश होता है। यदि इस योग के साथ-साथ तृतीय भाव पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो निश्चय ही योग लागू होता है।

(८) यदि तृतीय स्थान से केन्द्र अथवा त्रिकोण में कोई पाप ग्रह गया हो तो वालिका के पृष्ठज का नाश होता है।

भ्रातृ-संख्या विचार

(१) द्वितीय और तृतीय भाव में जितने ग्रह रहें उतने अनुज और एकादश तथा द्वादश स्थानों में जितने ग्रह हों उतने ज्येष्ठ भ्राता होते हैं। यदि इन स्थानों पर ग्रह न हो तो इन स्थानों पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो उतने ही अग्रज और अनुजों का अनुमान करना चाहिये। यह एक सामान्य नियम है और इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि स्वक्षेत्री ग्रहों के रहने पर अथवा उन भावों पर अपने स्वामियों की दृष्टि पड़ने पर भ्रातृ-संख्या में वृद्धि होती है।

(२) जितने ग्रह तृतीयेश के साथ हों, भ्रातृकारक मंगल के साथ हों, तृतीयेश पर दृष्टि रखने वाले हों और तृतीयस्थ हों उतनी ही भ्रातृ-संख्या होती है। यदि उपर्युक्त ग्रह शत्रु-ग्रही, नीच और अस्तंगत हों तो भाई अल्पायु होते हैं। यदि ये ग्रह मित्र-ग्रही, उच्च या मूल त्रिकोण के हों तो दीर्घायु होते हैं।

(३) जिस स्त्री की कुण्डली में तृतीयेश अथवा मंगल युग्म राशियों (२-४-६-८-१०-१२) में हो तो उस स्त्री के बहुत-सी बहनों के होने की सभावना होती है।

(४) लग्न और लग्नेश से ३।११ वें स्थानों में केतु स्थित हो तो बहिनें अधिक होती हैं।

(५) लग्न और लग्नेश से ३।११ वें स्थानों में बुध, चन्द्र, मंगल और बृहस्पति स्थित हो तो अधिक भाई होते हैं।

(६) तृतीयेश शुभ ग्रहों से युक्त केन्द्र में (१-४-७-१०) गया हो तो प्रायः भाई अधिक होते हैं।

(७) चन्द्रमा तीसरे घर में हो तो ५ भाई-बहिन होते हैं।

(८) तृतीयेश जितनी संख्यक राशि के नवांश में गया हो उतनी ही भाई-बहिनों की संख्या होती है।

(९) 'भारतीय ज्योतिष' में लिखा है कि नवम भाव में जितने स्त्री-ग्रह हों उतनी बहिनें और जितने पुरुष ग्रह हों उतने ही भाई होते हैं।

(१०) तृतीय भाव में गये हुए ग्रह के नवांश की संख्या के अनुसार भाई-बहिन जानने चाहिये।

भ्रातृ-प्रेम विचार—भ्रातृ भाव में यह एक विचारणीय बात है कि भाई-बहिनों में परस्पर प्रेम रहेगा या नहीं ? यदि उनमें परस्पर प्रेम नहीं हो तो बालिका का जीवन भाइयों से दुःखी ही रहता है, सुखी नहीं।

(१) 'सर्वार्थ चिन्तामणि' में लिखा है कि लग्नेश और तृतीयेश

परस्पर मित्र हों तो भाई-वहिनों में प्रेम रहता है और यदि वे आपस में शत्रु हों तो उनमें परस्पर शत्रुता रहती है। यहाँ विचारणीय वात यह है कि नैसर्गिक मैत्री में लग्नेश और तृतीयेश में मित्रता होना सम्भव नहीं है, अतः यहाँ मित्र-शत्रु का विचार पंचधा मैत्री से करना चाहिये।

(२) यदि लग्नेश से तृतीयेश केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो या तृतीयेश से लग्नेश केन्द्रवर्ती या त्रिकोणवर्ती हो तो भाई-वहिनों में परस्पर प्रेम रहता है।

(३) परस्पर अशुभ स्थानों (६-८-१२ वें) में पड़े लग्नेश और तृतीयेश भाइयों और वहिनों मे परस्पर शत्रुता के सूचक है।

(४) यदि वहिन का जन्म लग्न अपने भाई के जन्म लग्न से षष्ठ, अष्टम और द्वादश राशि में हो तो परस्पर शत्रुता रहती है।

(५) यदि तृतीयेश लग्नेश के साथ हो तो निश्चय ही भाई-वहिनों में वहुत प्रेम रहता है।

(६) यदि लग्नेश और तृतीयेश निर्बल हो, मंगल ६-८-१२ वें भाव में हो तो भाई-बहिनों में विरोध रहता है।

भ्रातृ-जन्म का समय—भ्रातृ-जन्म के समय की भविष्यवाणी करने से पूर्व यह देख लेना आवश्यक है कि स्त्री के माता-पिता जीवित हैं या नहीं और उनकी अवस्था कितनी हैं ?

(१) तृतीयेश, द्वितीयेश, नवमेश और सप्तमेश की दशा अन्तर्दशा में भ्राता के जन्म की संम्भावना होती है।

(२) तृतीयेश, तृतीय भाव में बैठा ग्रह, तृतीयेश जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी— इन तीनों में जो वली ग्रह होगा उसकी दशा में भ्रातृ-जन्म होता है।

(३) यदि मंगल के साथ कोई बलवान् ग्रह बैठा हो तो उसकी दशा में भाई की प्राप्ति होती है।

(४) लग्न स्फुट में दशम भाव के स्फुट को जोड़ें। जो राशि-अंश आये, उस राशि में गोचर का वृहस्पति आने पर भाई या बहिन का जन्म होता है।

(५) तृतीय भाव से, मंगल से अथवा तृतीयेश से नवें और पाँचवें स्थान में जब गोचर का वृहस्पति आता है तो उस समय भाई का लाभ होता है।

भ्रातृ-मृत्यु का समय—

(१) तृतीयेश, तृतीय स्थान में गया हुआ ग्रह और मंगल—इन तीनों में से जो ग्रह नीच राशि का हो, शत्रु राशि में गया हो,, अस्त हो पाप ग्रह के साथ गया हो, ६ठे-८वें और १२वें भाव में स्थित हो, पाप ग्रहों से देखा जाता हो, निर्बली हो—उसकी दशा-अन्तर्दशा में भ्राता की मृत्यु होती है।

(२) स्पष्ट मंगल से स्पष्ट राहु घटाओ। जो राशि-अंश बाकी रहें, उससे नवीं-पांचवी राशि में जब गोचर का वृहस्पति आता है तब छोटे भाई की मृत्यु होती है। उदाहरण के लिए स्पष्ट मंगल ८।२०।४०।५० है और स्पष्ट राहु २।१०।३०।२० है तो घटाने पर ६।१०।१०।३० आयेंगे। इसका मतलब है तुला राशि। अतः तुला से पाँचवी कुम्भ राशि और तुला से नवीं मिथुन राशि में गोचर का गुरु छोटे भाई अथवा छोटी बहिन के लिए अरिष्ट कारक होगा।

(३) भ्रातृ-भाव से केन्द्र और त्रिकोण भाव में यदि पाप ग्रह बैठे हों तो उन पाप ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में भाई-बहिनों को अरिष्ट होता है।

(४) लग्नेश स्फुट से तृतीयेश के स्फुट घटाओ। शेष में से दशमेश और मंगल के स्फुट घटाइये। अब शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है, तब भ्राताओं को अरिष्ट होता है।

(५) यदि तृतीयेश राहु अथवा केतु के साथ होकर ६, ८, १२वें

स्थान में गया हो तो बाल्यावस्था में ही भाइयों का नाश होता है।

भ्रातृ-सम्बन्धी-अन्य बातें—

(१) यदि तृतीय भाव का स्वामी दूसरे भाव में हो तो अनुज के लिए अरिष्ट होता है।

(२) यदि तृतीय भाव का स्वामी वलवान् होकर चौथे भाव में वैठा हो और लग्न तथा नवम भाव के निर्वल हों तो वालिका के भाई, उससे दीर्घ काल तक जीते हैं।

(३) यदि उक्त योग में नवम भाव का स्वामी वलमान् हो तो सौतेले भाई का सुख होता है।

(४) यदि तृतीयेश पंचम भाव में वलवान् होकर स्थित हो तो वालिका को भाइयों से पर्याप्त लाभ मिलता है।

(५) तृतीय भाव का स्वामी वलवान् होकर छठे भाव में गया हो तो छोटा भाई फौज में भरती होता है। वालिका का एक अन्य भाई सफल वैद्य होता है।

(६) यदि पुरुष ग्रह छठे भाव में हो तो भ्राता धनवान् हो।

(७) यदि बृहस्पति तृतीय भावस्थ हो तो भाग्यवान् भाई का सुख होता है।

(८) यदि तृतीयेश पंचमस्थ, पंचमेश से युक्त हो तो वालिका का भाई निश्चय ही उच्चपद पर होता है।

(९) तृतीयेश सप्तम भाव में सप्तमेश के साथ चर राशि में हो तो भाई प्रवासी होता है।

कुछ उदाहरण—

निर्दिष्ट कुण्डली एक ऐसी महिला की है जिसने अपनी आयु के ५० वर्षों तक अपनी माता का सुख प्राप्त किया। देखिये—

(१) चतुर्थ भाव में शुभ राशि धनु है। इस पर बुध और बृहस्पति दोनों की दृष्टि है। दोनों शुभ ग्रह हैं।

कुण्डली सं० ४
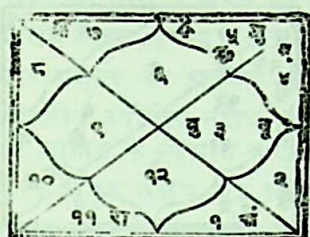
(२) चतुर्थेश वृहस्पति केन्द्र में गया है। बुध साथ है। बुध लग्नेश है।

(३) नवांश कुण्डली में भी वृहस्पति मिथुन राशि में ही गया है।

(४) मातृकारक चन्द्रमा यद्यपि आठवें भाव में गया है लेकिन वह चतुर्थ से पाँचवें स्थान में है। उसे उच्च का शनि देख रहा है। इस प्रकार चन्द्र का दुश्प्रभाव कम हो गया है।

कुण्डली सं० ५
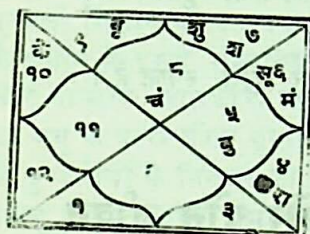
इस कुण्ड़ली वाली जातिका के केवल एक वड़ी वहिन मात्र है। कुण्ड़ली में यह तथ्य स्पष्ट है :—

(१) तीसरे भाव में पापी केतु शत्रु राशि में है।

(२) तीसरे भाव का स्वामी शनि वारहवें भाव में गया है।

(३) मातृकारक मंगल एकादश भाव में क्रूर ग्रह सूर्य के साथ है।

(४) तृतीय भाव पर राहु की दृष्टि है।

(५) तृतीय स्थान से केन्द्र और त्रिकोण में पाप ग्रह गये हैं।

(६) तृतीयेश से केन्द्र स्थान में पाप ग्रह गये हैं।

(७) चन्द्र कुण्डली सं० ६ से उपरोक्त सभी वातें दोहराई गई है।

कुण्डली सं ६ वालो जातिका के कुल ६ वहिन और ३ भाई थे। जिनमें तीन वड़ी वहिनें एवं एक वड़ा भाई जीवित हैं। शेष की मृत्यु वाल्यावस्था में हो गई। अध्ययन करिये—

(१) तीसरे भाव में दो शुभ ग्रह शुक्र और वृहस्पति स्थित हैं।

(२) तृतीयेश शनि नवम भाव में गया है जिसके साथ पंचमेश और द्वादशेश मंगल बैठा है ।

(३) तीसरे भाव पर मंगल और शनि की दृष्टि है ।

(४) तृतीयेश पर शुक्र और बृहस्पति की भी पूर्ण दृष्टि है ।

कुण्डली सं० ६

(५) तीसरे भाव में केन्द्र से शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह गये हैं ।

(६) चन्द्र कुण्डली से तृतीयेश लग्न में उच्च का है ।

(७) गुरु की शुभ दृष्टि तृतीयेश शनि तथा तृतीय भाव मंगल दोनों पर है ।

इस प्रकार भाई-बहिनों की वृद्धि और ह्रास स्पष्ट है ।

: ५ :

विवाह और यौन जीवन

भारतीय समाज और विवाह, मांगलिक दोष विचार, कुण्डली-मिलान और गुण, किस दिशा में विवाह होगा, सुसराल दूर होगी या निकट? विवाह का समय, कैसा पति मिलेगा, वैधव्य-योग, विषकन्या-योग, वैधव्य और विषकन्या परिहार, यौन जीवन का विवेचन; व्यावहारिक कुण्डलियों का अध्ययन ।

भारतीय समाज में विवाह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण धार्मिक एवं आवश्यक संस्कार है । बहुत प्राचीन समय से विवाह के लिए कुण्ड-

लियों का मिलान करने की प्रथा चली आ रही है। इस प्रथा का आशय केवल परम्परा का निर्वाह ही नहीं है अपितु गुण-धर्म-स्वभाव और प्रकृति के अनुरूप उपयुक्त जीवन साथी की खोज भी है। भारतीय ज्योतिष नक्षत्र, योग, ग्रह, राशि आदि तत्वों के आधार पर व्यक्ति के स्वभाव व गुण का निश्चय करता है और यह बतलाता है कि अमुक नक्षत्र, ग्रह और राशि के प्रभाव में उत्पन्न पुरुष का अमुक नक्षत्र, ग्रह और राशि के प्रभाव में उत्पन्न नारी के साथ सम्बन्ध करना अनुकूल है। इस प्रकार कुण्डलियों के मिलान की यह प्रथा वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि से अत्यन्त उपयुक्त और प्रभावशाली है।

भारतीय ज्योतिष में जन्म नक्षत्र के चरणों के आधार पर कुण्डली मिलान की परम्परा चली आ रही है। हर प्रांत और भाषा के पंचांग में इससे सम्बन्धित चक्र और सारणियाँ बनी होती हैं और सामान्य जानकारी रखने वाले ज्योतिष-प्रेमी भी सरलता से वर-वधू के पारस्परिक गुणों का पता लगा सकते हैं। प्रस्तुत अध्याय में कुण्डलियों के मिलान की उस प्रथा के साथ-साथ कुछ अन्य सरल, परन्तु अनुभूत और प्रभावशाली बातों का विवेचन भी किया जा रहा है।

पहली और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमें वर और वधू की अलग-अलग विशेषताओं की जांच उनकी कुण्डलियों के आधार पर करनी चाहिए। पुरुष की कुण्डली में उसकी आयु, उस का सातवां भाव एवं विवाह और उसके बाद में आने वाली दशा-अन्तर्दशा का अध्ययन आवश्यक है। आयु के लिए ग्रह-योग और दशा दोनों प्रकार से विचार करना चाहिए। अकाल मृत्यु, दुर्घटनायें, हृदयावरोध आदि अशुभ घटनायें अशुभ और मारक दशाओं में ही घटित होती हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रन्थों में 'कलत्र दोष' के योग मिलते हैं, पुरुष की कुण्डली में उनका परिहार आवश्यक है।

पुरुषों की कुण्डलियों में सातवें भाव का स्वामी बहुत वलवान् ग्रौर पाप ग्रहों से ग्रदृष्ट होना चाहिए। सातवें भाव या सातवें भाव के स्वामी से केन्द्र स्थान में कोई ग्रग्नि तत्व वाला ग्रह नहीं होना चाहिए। सातवें भाव का कारक शुक्र भी पाप ग्रहों से दृष्ट एवं मंगल या शनि से युक्त नहीं होना चाहिए। शुक्र का दोनों ग्रोर वलवान् पाप ग्रहों से घिरा रहना भी सुखी विवाहित जीवन की दृष्टि से ठीक नहीं।

शुक्र का सातवें भाव के स्वामी के साथ होना सुखी विवाहित जीवन प्रकट करता है, लेकिन यहाँ ग्रगर सप्तम भाव का स्वामी सूर्य, मंगल ग्रौर शनि हो तो यह वात पूर्णतया लागू नहीं होगी, वल्कि वैवाहिक जीवन दुःखपूर्ण भी हो सकता है।

चन्द्रमा मन का स्वामी है; वह सुखी ग्रौर दुःखी विवाहित जीवन जानने में वहुत सहायता करता है। चन्द्रमा का विचार उसके स्वामित्व से करना चाहिए। यदि चन्द्रमा सप्तमेश या शुक्र के साथ किसी धनु लग्न वाली कुण्डली में स्थित हो तो सुखी विवाह के लिए वहुत हानिप्रद है। ग्रनुभवी पाठक इसका कारण समझ गये होंगे इस लग्न में (धनु में) चन्द्रमा ग्रशुभ भाव ग्राठवें का स्वामी होता है एवं उसके साथ बैठा शुक्र भी छठे भाव का स्वामी वनता है।

वुध भी विवाह के मामले में चुप नहीं है। श्री एच. भूतलिंगम ने ग्रपने एक लेख में लिखा है कि यदि बुध सातवें भाव में गुलिक के साथ बैठा हुग्रा हो एवं उसे शनि ग्रौर मंगल देखते हों तो जातक ग्रथवा जातिका का विवाहित जीवन वहुत दुःखी होता है। यदि इस विशेष योग में बुध वाधकाधिपति भी हो तो यह योग ग्रौर भी भयंकर हो जाता है। ऐसी ग्रवस्था में एक साथी (स्त्री या पुरुष) बीमारी ग्रौर दुःख के कारण पागल तक हो जाता है।

महिलाग्रों की कुण्डली में ग्राठवें भाव, उसके स्वामी की स्थिति,

कारक शुक्र आदि के बलाबल का विचार करना चाहिए। उनकी लग्न का बलवान् होना एवं जल तत्त्व की राशि का होना उपयुक्त होता है। 'कुल दोष' के अलावा उनकी कुण्डलियों में द्वितीय स्थान (लग्न से), शुक्र से द्वितीय स्थान, चन्द्रमा से द्वितीय स्थान एवं सप्तमेश से द्वितीय स्थान में पाप ग्रह नहीं होने चाहियें।

किस दिशा में विवाह होगा ?

(१) शुक्र से सप्तमेश की जो दिशा हो उसी दिशा में प्रायः वर का घर होता है। जैसे शुक्र से सप्तम कन्या राशि का भाव हो तो सप्तमेश बुध हुआ। बुध की दिशा उत्तर है। अतः उत्तर दिशा की ओर विवाह होने की संभावना है, ऐसा कहना चाहिए।

(२) यदि सप्तम स्थान में कोई ग्रह हो तो उस स्थान की राशि की जो दिशा हो अथवा सप्तम स्थान पर जिन ग्रहों की दृष्टि पड़ती हो उन ग्रहों की राशिस्थ दिशाओं में वर का घर समझना चाहिए।

ससुराल दूर होगी या निकट ?

(१) यदि सप्तम भाव में स्थिर राशि हो तो कन्या या वर का घर विशेष दूर नहीं होता अर्थात् ससुराल निकट ही है, ऐसा समझना चाहिए। सप्तम भाव में चर राशि होने पर ससुराल दूर होती हैं।

(२) सप्तमेश या सप्तम भाव का कारक गुरु क्रूर ग्रह से युक्त होकर नवें अथवा पांचवें भाव में गया हो तो दूर देश में विवाह होता है।

(३) यदि पतिकारक (गुरु) पाप ग्रह से युक्त होकर द्वितीय स्थान में अथवा दशम स्थान में हो तो दूर देश में विवाह करना चाहिए।

(४) यदि दशम, द्वितीय, नवम या सप्तम भाव पाप ग्रह से युक्त हो और उक्त भावों में पाप ग्रह का नवांश हो या वे पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो दूर देश में विवाह करना चाहिए।

(५) रवि, चन्द्र, शुक्र व सप्तमेश यदि जन्मकुण्डली में लग्न से सप्तम भाव तक स्थित हों तो वर का घर कन्या के निवास स्थान से दूर नहीं होता परन्तु ८ से १२वें भाव तक यह ग्रह स्थित हों तो स्थान का दूर होना निश्चित है, यह समझना।

(६) इसी प्रकार रवि, चन्द्र, शुक्र व सप्तमेश लग्न से चतुर्थ भाव तक स्थित हो तो उसी शहर में वर-वधू का स्थान समझना चाहिए।

(७) ऊपर लिखे ग्रह यदि ५-८-९वें भाव में हों तो ५०-६० किलो मीटर के अन्दर वर का निवास स्थान समझना चाहिए।

विवाह कितनी आयु में ?

(१) सप्तमेश शुभ ग्रह की राशि में हो, गुरु अपने उच्च या ग्रह में हो तो छोटी आयु में विवाह योग होता है। वर्तमान समय में यह योग पूर्णतया लागू नहीं होगा। राजस्थान और अन्य प्रांतों की ग्रामीण कन्याओं के साथ अवश्य इस प्रकार के योग लागू होते देखे गए हैं।

(२) सप्तम भाव में सूर्य हो और सप्तमेश गुरु के साथ हो तो प्रायः ७वें या ११वें वर्ष में विवाह होता है।

(३) गुरु द्वितीय भाव में और सप्तमेश ११वें में हो तो १०वें अथवा १६वे वर्ष में विवाह होता है।

(४) गुरु लग्न से केन्द्र में हो, लग्नेश शनि की राशि में हो तो ११वें वर्ष में विवाह होता है।

(५) लग्न से केन्द्र में शुक्र और शुक्र से ७वें में शनि हो तो १२वें या १९वें वर्ष में विवाह होता है।

(६) चन्द्रमा से ७वें शुक्र और शुक्र से सातवें शनि हो तो १८वें वर्ष में विवाह होता है।

(७) द्वितीयेश ११वें और लग्नेश १०वें में हो तो १५वें वर्ष में विवाह होता है।

(८) द्वितीयेश ११वें भाव में और लाभेश द्वितीयभाव में हो तो १३वें वर्ष में विवाह होता है।

(९) अष्टम भाव से ७वें शुक्र और अष्टमेश मंगल से युक्त हो तो २२वें या २७वें वर्ष में विवाह होता है।

(१०) लग्नेश यदि सप्तमेश के नवमांश में हो और सप्तमेश १२वें भाव में हो तो १३ या २६वें वर्ष में विवाह होता है।

(११) यदि अष्टमेश सप्तम भाव में लग्न के नवमांश में शुक्र से युत हो तो २५ या ३३वें वर्ष में विवाह होता है।

(१२) नवम भाव से ९वें में शुक्र हो, उन दोनों में से किसी एक में राहु हो तो ३१ या ३३ वर्ष में विवाह होता है।

(१३) भाग्य भाव से ७वें शुक्र और शुक्र से सातवें सप्तमेश हो तो ३० या २७ वर्ष में विवाह होता है।

(१४) लग्नेश और सप्तमेश के स्फुट को जोड़ देने से कोई राश्यादि प्राप्त होगी। उस राश्यादि में जब गोचर का बृहस्पति आएगा (उचित दशा-अन्तर्दशा के समय) तभी जातिका का विवाह सम्भव होगा।

(१५) जन्म-समय का चन्द्रमा जिस राशि मे हो उसके स्वामी के स्फुट को अष्टमेश के स्फुट में जोड़ने पर जो राशि-अंश प्राप्त हो उसमें गोचर के बृहस्पति के आने पर विवाह होता है।

(१६) एक विशेष नियम यह भी है कि शुक्र और चन्द्रमा में जो बली हो उस बली ग्रह की महादशा में बृहस्पति का उपयुक्त गोचर आता है तो वह समय विवाह का होता है।

(१७) दक्षिण भारत के प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ फलदीपिका के अनुसार निम्न तीन स्थितियों में विवाह सम्भव होता है—

(अ) जब लग्नेश गोचरानुसार सप्तमस्थ राशि में जाता है।

(ब) जब गोचर का शुक्र या सप्तमेश लग्नेश की राशि या लग्नेश के नवांश से त्रिकोण में जाता है।

(स) सप्तमस्थ ग्रह या सप्तम पर दृष्टि डालने वाले ग्रह की दशा में विवाह सम्भव होता है।

(१८) यदि सप्तमेश शुक्र के साथ बैठा हो तो सप्तमेश की दशा अथवा अन्तर्दशा में विवाह सम्भव होता है। यदि किसी कारण से यह सम्भव नहीं हो तो द्वितीयेश जिस राशि में बैठा हो उस राशि के स्वामी की दशा या अन्तर्दशा में विवाह कहना चाहिए।

(१९) शुक्र, चन्द्रमा और लग्न से सप्तमाधिपति की दशा में भी विवाह होना सम्भव होता है।

(२०) किसी आचार्य का यह भी मत है कि लग्नेश जिस नवांश में हो उसका स्वामी जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय स्थान में जब गोचर का चन्द्रमा और बृहस्पति आता है, तो विवाह होना संभव होता है।

(२१) मेष से गिनने के उपरान्त सप्तमस्थ राशि की जो संख्या हो (जैसे सिंह राशि की संख्या ५, तुला की ७ आदि) उस संख्या में यदि ८ जोड़ दें तो विवाह-वर्ष की संख्या ज्ञात हो जाती है।

(२२) यदि लग्न, द्वितीय और सप्तम में शुभ ग्रह बैठा हो अथवा शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कम उम्र में विवाह होता है।

कन्या को कैसा पति मिलेगा ?

(१) यदि जन्म कुण्डली के सातवें घर में सूर्य गया हो तो प्रायः पति गौर वर्ण का, सुन्दर सेक्स को महत्व देने वाला और कुछ क्रोधी होता है।

(२) चन्द्रमा सातवें भाव में हो तो आकर्षक, कमजोर शरीर

वाला, सदैव यौन तृप्ति के लिए लालायित, और विभिन्न रोगों से परेशान पति मिलता है।

(३) सातवें भाव में मंगल बैठा हो तो कन्या का पति प्रायः लाली लिये गोरे रंग का, बातचीत में अत्यन्त चतुर, कुछ दुष्ट प्रकृति वाला, झगड़ालू और आलसी होता है।

(४) बुध के सातवें भाव में जाने पर कन्या के पति को विद्या-बुद्धि में बढ़ा-चढ़ा, सब कार्यों में कुशल, गुणवान्, धनवान् और सामान्य स्वास्थ्य वाला समझना चाहिए।

(५) सातवें भाव में बलवान् बृहस्पति हो तो कन्या को निश्चय ही आकर्षक व्यक्तित्व वाला, उच्च राजकीय अधिकारी और धनवान् पति मिलता है। प्रायः उसे साहित्य और कविता का विशेष शौक होता है।

(६) सातवें भाव में शुक्र स्थित हो तो जातिका का पति अत्यन्त सुन्दर, अच्छी वेश-भूषा का शौकीन, स्त्रियों का प्रिय, सेक्स को ही सब कुछ समझने वाला, मनोरंजन में समय व्यतीत करने वाला और धनवान् होता है।

(७) यदि शनि सातवें भाव में हो तो कन्या का पति बूढ़ा, अत्यन्त कमजोर, काले वर्ण का और पापी होता है।

(८) यदि राहु या केतु पति भाव में गये हों तो भी पति को मलिन बुद्धि वाला, नीच और बुरे कर्मों में रत समझना चाहिये।

(९) यदि सातवें भाव में शुभ ग्रह की सम राशि (२, ४, ६, १२) हो, साथ ही वह भाव शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो उस नारी का पति प्रभावशाली राजकीय अधिकारी अथवा धन-कुबेर होता है। कहा भी है:-

सम राशिगते तत्र सप्तमे शुभ संयुते ।
शुभग्रहैस्तथा दृष्टे राजपूज्यः पतिर्भवेत् ॥

(१०) जिस स्त्री के जन्मकाल में लग्न या चन्द्रमा से सप्तम स्थान ग्रह से रहित हो अथवा किसी शुभ ग्रह से न देखा जाता हो तो उस स्त्री का स्वामी कापुरुष (निन्दित कर्म करने वाला) होता है ।

(११) जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तम स्थान में बुध, शनि स्थित हो, उस स्त्री का पति नपुंसक या नपुंसक के समान होता है ।

(१२) जिस कन्या के जन्मकाल में लग्न से सातवें स्थान में चर राशि (१, ४, ७, १०) होवे और सप्तम भाव का स्वामी भी चर राशि के नवांश में स्थित होवे तो उसका पति हमेशा परदेश में रहता है ।

(१३) लग्न में राहु हो तो पति कम्बख्त, नीच, बुरे दिमाग वाला होता है ।

(१४) शनि आठवें भाव में गया हो तो पति सत्यवक्ता होता है ।

वैधव्य योग

(१) जिस स्त्री के जन्मकाल में लग्न या चन्द्रमा से सप्तम स्थान में पाप ग्रह स्थित हो वह विधवा होती है ।

(२) यदि उक्त सप्तम स्थान में पाप ग्रह और शुभ ग्रह दोनों स्थित हों तो जिसका पाणिग्रहण किया गया है, उसको छोड़कर दूसरे की स्त्री होती है ।

(३) सप्तम भाव में मंगल हो और पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो बाल विधवा का योग होता है ।

(४) लग्न या चन्द्रमा से अष्टम भाव में यदि तीन चार पाप ग्रह गये हों तो स्त्री विधवा होती है ।

(५) मंगल की राशि में स्थित राहु पाप ग्रह से युत् होकर ८वें या १२वें भाव में गया हो तो स्त्री विधवा होती है।

(६) चन्द्रमा से सातवें आठवें, या बारहवें भाव में शनि+मंगल का योग हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो स्त्री विवाह के बाद जल्दी ही विधवा होती है।

(७) षष्ठेश और अष्टमेश ६।१२वें भाव में पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो तो वैधव्य योग होता है।

(८) अष्टमेश सप्तम भाव में और सप्तमेश अष्टम भाव में हो और दोनों या एक स्थान पापग्रहों से देखा जाता हो तो वैधव्य योग समझना चाहिए।

विषकन्या योग

(१) द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, शनिवार--इस योग में उत्पन्न कन्या विषकन्या होती है।

(२) सप्तमी तिथि, शतभिषा नक्षत्र और मंगलवार--यह विष-कन्या का दूसरा योग है।

(३) द्वादशी तिथि, कृतिका नक्षत्र और रविवार में उत्पन्न लड़की विषकन्या होती है।

(४) जिसके जन्मकाल में नवम स्थान में मंगल और लग्न में शनि तथा पंचम भाव में सूर्य गया हो तो स्त्री विषकन्या होती है।

वैधव्य और विषकन्या परिहार

(१) स्त्री की कुण्डली में लग्न अथवा चन्द्रमा के साथ शुभ ग्रह हो अथवा सप्तमेश सप्तम भाव में बैठा हो तो विधवा दोष, निःसंतान दोष और विषकन्या दोष दूर होते हैं।

(२) लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भाव में बलवान् शुभ ग्रह बैठा हो तो उपरोक्त दोष दूर होते हैं।

(३) **सावित्र्याश्च व्रतं कृत्वा वैधव्यविनिवृत्तये ।**
अश्वत्थादिभिरुद्वाह्य दद्यात्तां चिरजीविने ॥

(मुहूर्तगणपति)

भावार्थ यह है कि जिस स्त्री के जन्मकाल में विधवा या विषांगना दोष हो तो उस कन्या को सावित्री का व्रत करना चाहिए एवं उसके माता-पिता को चाहिए कि उसका विवाह करने से पूर्व पीपल वृक्ष, शालिग्राम या विष्णुमूर्ति के साथ विवाह करके दीर्घजीवी वर को कन्यादान करे ।

वैधव्य का समय

(१) यदि अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो अष्टमेश जिस ग्रह के नवांश में हो उसकी दशा-अन्तर्दशा में वह स्त्री विधवा होती है ।

यौन जीवन का विवेचन

(१) यदि सप्तम भाव में चन्द्र, मंगल, शुक्र हो तो वह स्त्री अपनी यौन क्षुधा दूसरे पुरुषों से शांत कराती है, और उसका पति उसे इस बात की अनुमति देता है । सम्भवतया इसका कारण पति की यौन दुर्बलता, लकवा जैसी बीमारियाँ या संतानोत्पादक शक्ति का अभाव होगा ।

(२) लग्न १-८-१०-११ राशि में चन्द्र, शुक्र से युक्त हो व पाप ग्रह की दृष्टि हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ।

(३) लग्न या चन्द्रमा के द्वितीय व द्वादश स्थान में पापग्रह हो व शुभ ग्रह से दृष्ट न हो, पापग्रह से दृष्ट हो तो वह अपने पिता व श्वसुर कुल को अपने चरित्र के कारण कलंकित करती है ।

(४) सप्तम भाव में शुक्र हो व पापग्रहों से दृष्ट हो या कर्क राशि का मंगल हो तो वह स्त्री स्वेच्छा से घर छोड़कर जारकर्म करने लगती है ।

(५) अष्टम भाव में गया हुआ मंगल स्त्री को व्यभिचारिणी वनाता है। यदि अष्टम भाव में राहु हो तो भी स्त्री परपुरुषों से प्रेम करती है।

(६) जिस स्त्री के जन्मकाल में शनि मध्यवली हो, चन्द्रमा, शुक्र और बुध निर्वल हों, सूर्य मंगल और वृहस्पति वली हों तथा विषम राशियों (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ) में से कोई राशि लग्न में हो तो वह स्त्री वहुत पुरुषों के साथ सम्भोग करने वाली होती है।

(७) किसी राशि में स्थित होकर शुक्र और मंगल परस्पर नवांश में स्थित हों अर्थात् शुक्र मंगल के नवांश में हो और मंगल शुक्र के नवांश में वैठा हो तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

(८) जिस स्त्री के जन्मकाल में शुक्र और शनि दोनों परस्पर नवांश में हों और परस्पर एक-दूसरे से दृष्ट हों जैसे शुक्र शनि के नवांश में स्थित होकर शनि से देखा जाता हो और शुक्र के नवांश में स्थित होकर शनि शुक्र से देखा जाता हो तो वह स्त्री समयौन प्रेमी होती है और कृत्रिम शिस्न का उपयोग करती है।

(९) अथवा शुक्र की राशियों (वृष और तुला) में से कोई राशि लग्न में स्थित हो और उसमें कुम्भ राशि के नवांश का उदय हो तो भी उपर्युक्त योग के समान ही स्त्री समयौन प्रेमी होती है।

(१०) जिस स्त्री के जन्म काल में लग्न, चन्द्रमा दोनों मंगल की राशि (मेष, वृश्चिक) में स्थित होकर मंगल के त्रिशांश में हों तो वह कन्या विना विवाह के ही पुरुष संभोग से दूषित होती है।

(११) इसी प्रकार यदि लग्न, चन्द्रमा भौम की राशि में स्थित होकर शुक्र के त्रिशांश में हो तो भी स्त्री का चरित्र निन्दनीय समझना चाहिए।

(१२) इसी प्रकार जिस स्त्री के जन्मकाल में लग्न, चन्द्रमा दोनों बुध के ग्रहों (मिथुन-कन्या) में से किसी में स्थित होकर शनि के

त्रिशांश में हो तो वह स्त्री कामशीतल होती है अर्थात् उसे संभोग आदि यौन कार्यों में बिल्कुल आनन्द नहीं आता।

(१३) यदि लग्न और चंद्रमा दोनों बुध के ग्रहों में स्थित होकर शुक्र के त्रिशांश में हो तो स्त्री को व्यभिचारिणी समझना चाहिए।

(१४) जिस स्त्री के जन्म काल में लग्न, चंद्रमा दोनों रवि की राशि में स्थित होकर शनि के त्रिशांश में हो तो वह व्यभिचारिणी होती है और अगर शुक्र के त्रिशांश में हो तो अगम्य पुरुषों से संभोग करने वाली होती है।

(१५) यदि लग्न और चन्द्रमा दोनों मकर या कुम्भ राशियों में स्थित होकर शनि के त्रिशांश में बैठे हों तो वह स्त्री नीच कर्म करने वाले पुरुषों के साथ रमण करती है।

विशेष निवेदन—उपरोक्त योगों के आधार पर किसी परिचित स्त्री के चरित्र पर पूर्ण संदेह कर बैठना या पति द्वारा अपनी स्त्री को चरित्रभ्रष्ट मान लेना अनुचित होगा। प्रस्तुत योग लेखक ने पाठकों की ज्ञान वृद्धि और अनुसंधान के लिए लिखे हैं और इनका इसी दृष्टि से उपयोग होना चाहिए।

उदाहरण स्वरूप कुछ कुण्डलियाँ

(१) यह महारानी मैसूर की जन्मकुण्डली है। इस कुन्डली में मंगल के चतुर्थ स्थान में होने के कारण कुजदोष स्पष्ट है।

कु० सं० ७
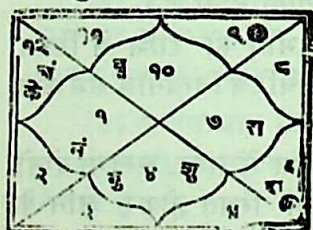
(२) शनि पर मंगल की पूर्ण दृष्टि है।

(३) शनि सातवें भाव को भी अपनी दसवीं पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

(४) सप्तमेश चंद्रमा पापग्रह केतु के साथ है।

(५) बृहस्पति की दृष्टि सप्तम

स्थान पर अवश्य है, पर बृहस्पति नीच का है अतः प्रभावहीन है ।

उपर्युक्त कारणों से वैधव्य योग स्पष्ट है । महारानी साहिबा को लगभग २८ वर्ष की अवस्था में वैधव्य का असह्य दुःख उठाना पड़ा ।

इसके अतिरिक्त महाराजा की कुण्डली में चंद्रमा अग्नितत्व का है जिसके विपरीत महारानी के चंद्रमा जलतत्व का है । अग्नि एवं जल में वैर स्पष्ट है अतः दोनों में वास्तविक प्रेम बहुत नहीं था । इसी कारण बी. सूर्यनारायण राव साहब ने अपनी पुस्तक में लिखा था—During the time cf her husband she does not seem to have been very happy.

उक्त कुण्डली में राजयोग भी स्पष्ट देखिये:—

(शुक्र केन्द्रेश(दशमेश) और त्रिकोणेश (पंचमेश) होकर सप्तम भाव (पतिगृह) में बैठा है ।

(२) नवमेश बुध तथा दशमेश शुक्रका योग है ।

(३) पंचमेश शुक्र पर केन्द्रेश शनि की भी पूर्ण दृष्टि है ।

(४) नवमेश बुध तथा लग्नेश शनि का परस्पर प्रभाव है ।

तीन प्रकार से राजयोग पड़ने के कारण तथा राजयोग के पति-स्थान में स्थित रहने के कारण महाराजा की मृत्यु के बाद कई वर्षों तक राज्य करती रही ।

यह एक कुलीन ब्रह्मण महिला की कुण्डली है । प्रारम्भ में सगाई एवं विवाह में कई प्रकार की बाधायें आयीं । बड़ी मुश्किल से २१ वर्ष की आयु में विवाह हुआ । सास के कारण ससुराल का पूरा वातावरण विषाक्त है । तीन लड़कियां हैं । पति से बहुत मन मुटाव रहता है ।

कु० सं० ८
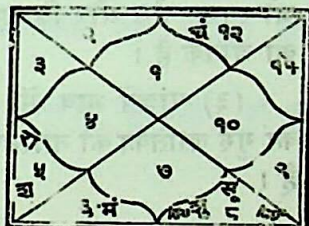
कम से कम तीन बार आत्महत्या का प्रयास कर चुकी। कुण्डली का अध्ययन करिये:—

(१) सप्तम भाव का स्वामी शुक्र आठवें भाव में गया है जो कि बहुत अशुभ है।

(२) शुक्र अपनी शुक्रराशि में गया है।

(३) वृहस्पति भी अष्टम भाव में गया है।

(४) शनि की सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि है।

(५) पंचम भाव में राहु-शनि पुत्र-सुख को विगाड़ते हैं। पति के लिए भी अशुभ है।

(६) वारहवें भाव में चंद्र का जाना घरेलू जीवन के लिए बहुत हानिकारक है।

(७) नवांश में मंगल की सप्तम भाव पर दृष्टि है।

यह एक लेक्चरर महिला की कुण्डली है। इसने प्रेम विवाह किया। अभी विवाह को पूरे पांच साल भी नहीं बीते हैं कि यह तलाक के लिए प्रार्थनापत्र दे चुकी हैं। संतान इस अवधि में नहीं हुई है। देखिये:—

(१) पतिभाव का स्वामी तथा कारक वृहस्पति नीच राशि में गया है।

(२) सप्तमभाव में शनि बैठा है जो स्पष्ट प्रेम और विजातीय विवाह का द्योतक है।

(३) पांचवें भाव में मकर राशि का गुरु जातिका को नास्तिक भी बनाता है।

कु० सं० ६
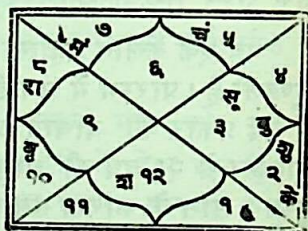
जन्मकुण्डली और संतान

: ६ :

प्रजनन शक्ति की जानकारी, सन्तान सुखयोग, प्रथम सन्तान पुत्र होगा या पुत्री ?, सन्तान संख्या-विचार, सन्तान की मृत्यु, माता और पुत्र का पारस्परिक सम्बन्ध, सन्तान-सम्बन्धी विशिष्ट योग, व्यावहारिक कुण्डलियों का अध्ययन।

सन्तान का विचार लग्न से पंचम स्थान, जन्मस्थ चन्द्रमा से पंचम स्थान और बृहस्पति से करना चाहिए। पुत्र के सुख-दुःखादि का विचार करते समय सप्तमेश, नवमेश, पंचमेश और बृहस्पति का अध्ययन भी करना चाहिए।

प्रजनन शक्ति

जातिका के जन्म समय का बृहस्पति, चन्द्रमा एवं मंगल के स्फुटों को जोड़ कर जो योगफल आवे (यदि १२ से अधिक राशि हो तो १२ से भाग देकर जो शेष बचेगा वही राशि होगी और अंशादि पूर्ववत् रहेंगे) यदि वह सम राशि हो और नवांश विषम राशि का हो तो कहना होगा कि स्त्री की प्रजनन शक्ति अच्छी है। परन्तु यदि इसके विपरीत हो अर्थात् राशि विषम और नवांश सम हो तो ऐसी स्त्री की प्रजनन शक्ति को दूषित मानना होगा अर्थात् उपचार और औषधादि के प्रयोग के उपरान्त ही सन्तान होगी।

सन्तान-सुख-योग

(१) पंचम भाव, पंचमेश अथवा बृहस्पति शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो पुत्र प्राप्ति होती है।

(२) लग्नेश पंचम भाव में हो और साथ ही बृहस्पति भी बलवान् हो तो निश्चय ही पुत्र होता है।

(३) पंचम भाव और पंचमेश दोनों शुभग्रहों के साथ हों अथवा उनके द्वारा देखे जाते हों तो निश्चय ही प्रवल सन्तान-योग होता है।

(४) यदि लग्नेश और पंचमेश शुभ ग्रह के साथ होकर केन्द्रगत हों और द्वितीयेश वली हो तो सन्तान-योग होता है।

(५) यदि लग्नेश और नवमेश दोनों सप्तमस्थ हों तो सन्तान-योग समझना चाहिए।

(६) द्वितीय भाव का स्वामी लग्न में हो तो भी सन्तान-योग वनता है।

(७) वलवान् वृहस्पति लग्नेश द्वारा देखा जाता हो तो प्रवल सन्तान-योग होता है।

(८) लग्नेश और पंचमेश एक साथ हों या परस्पर दृष्ट हों अथवा दोनों स्वगृही, मित्रग्रही या उच्च के हों तो प्रवल सन्तान-योग होता है।

(९) केन्द्र-त्रिकोणाधिपति शुभ ग्रह हों और उनमें से पंचम में कोई ग्रह अवश्य हो तथा पंचमेश ६।८।१२ वें भाव में न हो, पाप-युक्त, अस्त एवं शत्रु राशिगत न हो तो सन्तान-सुख होता है।

सन्तान-अभाव योग

(१) तृतीयेश और चन्द्रमा १-४-७-१०-५-९वें स्थानों में नहीं हो तो सन्तान नहीं होती।

(२) पंचम भाव में सिंह राशि हो, शनि और मंगल स्थित हों और साथ ही पंचमेश छठे भाव में गया हो तो सन्तान नहीं होती।

(३) यदि लग्नेश, सप्तमेश, पंचमेश और बृहस्पति सभी निर्बल हो तो जातक सन्तानहीन होता है। यदि नवमेश भी कमजोर हो तो योग और भी अधिक प्रवल हो जाता है।

(४) यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो और पंचमेश नीच राशि में गया हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो जातिका सन्तान

हीन होती है ।

(५) यदि बृहस्पति से पंचम स्थान और लग्न से पंचम स्थान और चन्द्रमा से पंचम स्थान में पापग्रह बैठे हों और वे शुभ ग्रहों की दृष्टि से रहित हो तो निश्चय ही जातिका निःसन्तान होती है ।

(६) सांतवें भाव में शुक्र, दसवें भाव में चन्द्रमा और चतुर्थ भाव में तीन-चार पापग्रह स्थित हों तो सन्तान-प्रतिबन्धक योग होता है ।

(७) लग्न में मंगल, आंठवें भाव में शनि और पाँचवें भाव में सूर्य के होने से भी सन्तान उत्पन्न नहीं होती ।

विलम्ब से सन्तान-प्राप्ति योग

(१) लग्नेश, पंचमेश और नवमेश, तोनों ग्रह शुभ ग्रहों से युत होकर ६।८।१२वें भाव में गए हों तो विलम्ब से सन्तान होती है ।

(२) दशम भाव में सभी शुभ ग्रह और पंचम भाव में सभी पाप ग्रह हों तो भी सन्तान विलम्ब से होती है ।

(३) पाप ग्रह चतुर्थ या पंचम भाव में गए हों अथवा अकेला बृहस्पति पंचम भाव में गया हो और साथ हो अष्टम भाव में चन्द्रमा हो तो तीस वर्ष की आयु में सन्तान होती है ।

(४) लग्न पाप राशिगत हो और उसमें पाप ग्रह स्थित हों, सूर्य निर्बल हो और मंगल सम राशि (२-४-६-८-१०-१२) में गया हो तो तीस वर्ष की आयु के बाद सन्तान होती है ।

(५) कर्क राशि में गया हुआ चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो और सूर्य को शनि देखता हो तो ६०वें वर्ष के लगभग पुत्र की प्राप्ति होती है ।

(६) एकादश भाव में गया हुआ राहु वृद्धावस्था में पुत्र देता है ।

(७) पंचम भाव में बृहस्पति हो एवं पंचम भाव का स्वामी शुक्र के साथ हो तो ३२ या ३३ वर्ष की आयु में पुत्र होता है ।

(८) पंचमेश और बृहस्पति १-४-७-१० स्थानों में हो तो ३६ वर्ष की आयु में सन्तान होती है।

(९) नवम भाव में बृहस्पति हो और बृहस्पति से नवम भाव में शुक्र लग्नेश से युत हो तो ४० वर्ष की अवस्था में पुत्र होता है।

प्रथम सन्तान पुत्र होगा या पुत्री ?

(१) लग्नेश लग्न में अथवा दूसरे या तीसरे भाव में गया हो तो प्रथम सन्तान पुत्र होता है।

(२) चन्द्र, मंगल और शुक्र द्विस्वशाव राशि में गए हों तो प्रथम पुत्र ही होगा।

(३) पंचमेश पुरुष ग्रह हो और पुरुष राशि में (१-३-५-७-९-११) ही गया तो प्रथम पुत्र होता है। यदि पंचमेश पुरुष राशि के नवांश में गया हो तो भी उक्त योग लागू होता है।

(४) पुरुष ग्रह बलवान् होकर ५वें अथवा ७वें भाव में गया हो तो प्रथम पुत्र की उत्पत्ति होती है।

(५) जन्म लग्न से पाँचवें अथवा सातवें स्थान में वलवान सूर्य शनि से युत हो तो प्रथम सन्तान पुत्र और दूसरी सन्तान कन्या होती है।

(६) पंचमेश लग्नेश को देखता हो तो प्रथम पुत्र सन्तान हो, पंचमेश पुरुषग्रह होना चाहिए।

(७) बली लग्नेश ५।९।७।११वें भावों में बैठा हो तो प्रथम संतान कन्या होती है।

(८) पंचम भाव में कर्क, वृश्चिक और मीन राशि हो तो प्रथम सन्तान कन्या होती है। इस योग में राशि का बलवान् होना आवश्यक है।

(९) पंचमेश सप्तम भाव में हो तो प्रथम सन्तान कन्या होती है। लेखक के विचार से इस स्थिति में सप्तम भाव में स्त्री राशि होनी चाहिए।

(१०) सप्तम भाव का स्वामी पंचम भाव में गया हो तो प्रथम सन्तान कन्या होने का योग बनता है ।

(११) पंचमेश स्त्री ग्रह हो और स्त्री ग्रह की राशि में अथवा उसके नवांश में बैठा हो तो प्रथम सन्तान कन्या होती है ।

(१२) एकादश भाव में पाप ग्रह हो और पांचवें भाव में चन्द्र+शुक्र का योग हो तो प्रथम कन्या होती है ।

(१३) स्त्री ग्रह बलवान् होकर पाँचवें अथवा सातव भाव में जाए तो प्रथम कन्या उत्पन्न होती है ।

(१४) 'फलित सूत्र' के अनुसार निम्नलिखित तीन योगों में प्रथम सन्तान कन्या होती है और वह जीवित नहीं रहती । पुत्र के जीने की तो बिल्कुल सम्भावना नहीं है। चन्द्रमा-सूर्य दोनों से ये योग एक साथ बनते हैं—

(अ) चन्द्रमा से पाँचवें, दसवें अथवा बारहवें भाव में सूर्य गया हो।

(ब) सूर्य चन्द्रमा को देखता हो ।

(स) सूर्य चन्द्रमा के साथ बैठा हो ।

सन्तान-संख्या-विचार

(१) पंचम भाव में जितने ग्रह हों और इस स्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो उतनी ही संख्या सन्तान की समझनी चाहिए। पुरुष ग्रहों के योग से और दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहों के योग अथवा दृष्टि से कन्या सन्तान का अनुमान करना चाहिए ।

(२) तुला या वृष राशि का चन्द्रमा ५वें, ९वें भाव में गया हो तो एक पुत्र होता है ।

(३) पंचम भाव में राहु या केतु हो तो भी एक पुत्र होता है ।

(४) पंचम भाव में सूर्य शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो तीन पुत्र होते हैं ।

पांचवें भाव में बृहस्पती हो, सूर्य स्वगृही हो, पंचमेश पंचम में हो तो पाँच सन्तानें होती हैं।

(६) कुम्भ राशि का शनि पाँचवें भाव में गया हो तो ५ पुत्र होते हैं यदि मकर राशि के ६ अंश ४० कला के भीतर का शनि हो तो ३ पुत्र होते हैं। लेखक के अनुभव के अनुसार इस स्थिति में केवल एक पुत्र ही जीवित रहता है और सात कन्या तक उत्पन्न हो सकती हैं।

(७) यदि बुध तीसरे भाव में गए हो तो २ पुत्र और ३ कन्यायें उत्पन्न होने का अनुमान करना चाहिए।

(८) यदि राहु तीसरे भाव में गया हो तो भी २ पुत्र और ३ कन्या होती हैं।

(९) जन्म लग्न से पंचम स्थान का स्वामी सूर्य हो तो एक पुत्र, बृहस्पति हो तो ५ पुत्र, मंगल हो तो ३ पुत्र, शनि हो तो ७ कन्या, शुक्र हो तो ६ कन्या और चन्द्रमा हो तो २ कन्या होती हैं। स्वामी ग्रह का वली होना आवश्यक है।

(१०) चन्द्र, केतु पंचम में हो तो केवल एक सन्तान होती है।

(११) बुध, शनि भी पंचम स्थान में गए हों तो केवल एक संतान समझनी चाहिए।

(१२) सातवें भाव में शुक्र गया हो तो पुत्र वहुत होते हैं।

(१३) पंचम भाव में केवल चन्द्रमा गया हो तो ३ कन्यायें, शुक्र गया हो तो ५ कन्यायें और शनि गया हो तो ७ कन्याएं होती हैं।

(१४) लग्न में राहु, पांचवें भाव में बृहस्पति और नवें भाव में शनि हो तो ६ पुत्र होते हैं।

(१५) बृहस्पति, चन्द्रमा और सूर्य के स्फुट जोड़ें। जो राश्यादि हो और उसका जो नवांश हो वही संख्या सन्तान की होगी।

(१६) यदि जन्म लग्न, पंचम स्थान, अथवा चंद्र राशि वृष, सिंह,

कन्या अथवा वृश्चिक हो तो सन्तान कम होती है ।

(१७. कर्क राशि का चन्द्रमा पंचम भाव में गया हो तो अल्प संतान-योग होता है ।

(१८) ग्यारहवें भाव में बुध, शुक्र या चन्द्रमा इन तीनों में से एक भी ग्रह गया हो तो कन्यायें अधिक होती हैं ।

सन्तानोत्पत्ति का समय

(१) लग्नेश और पंचमेश के स्फुट को जोड़कर जो राश्यादि अथवा नवांश आए, उस राशि और नवांश में अथवा उस राशि और नवांश के त्रिकोण में जब गोचर का बृहस्पति आता है, तब सन्तान की उत्पत्ति सम्भव होती है ।

(२) पंचमेश, चन्द्रमा से पंचमेश और बृहस्पति से पंचमेश की दशा-अन्तर्दशा में पुत्र-उत्पत्ति होने की सम्भावना होती है ।

(३) केवल बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में भी सन्तान उत्पन्न हो सकती है ।

(४) जन्म लग्नेश जब गोचर में (क) पंचमेश के साथ हो जाता है (ख) अपनी उच्च राशि में आ जाता है (ग) अपने ग्रह में आ जाता है (घ) पंचम स्थान में आ जाता है अथवा (ङ) पंचमेश जिस राशि में हो उस राशि में आ जाता है तो इन सब में से किसी भी समय पुत्र-जन्म सम्भव होता है ।

(५) लग्नेश, पंचमेश, सप्तमेश, पंचम भाव को देखने वाले ग्रह की तथा पंचमस्थ ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है ।

(६) बृहस्पति से पंचम स्थान का स्वामी जिस राशि अथवा नवांश में हो उस राशि अथवा नवांश से जब गोचर का बृहस्पति त्रिकोण में जाता है तो उस जातिका को सन्तान-सुख होता है ।

(७) जन्मकालीन चन्द्रमा जिस राशि में हो उसका स्वामी और उस चन्द्रमा से पंचम स्थान का स्वामी — इन दोनों के स्फुट जोड़कर

जो राशि आए उस राशि में अथवा उसके त्रिकोण में जब गोचर का बृहस्पति जाता है तो जातिका को पुत्र प्राप्त होना संभव होता है।

(८) पंचमेश, सप्तमेश और लग्नेश इन तीनों का योग जब-जब होगा तब-तब संतान-लाभ जानना चाहिए। अर्थात् गोचर में भ्रमण-वशात् जब-जब इन तीनों ग्रहों का योग लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम नवम और एकादश इन ६ संततिदायक स्थानों में से किसी भी स्थान में होता है तो निश्चय ही संतान लाभ होता है।

(९) शुक्र, चन्द्रमा और मंगल ये तीनों ग्रह यदि द्विस्वभाव राशि में गए हों तो जातिका को आयु के पूर्वार्द्ध भाग में सन्तान देते हैं।

(१०) लग्न शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो बाल्यावस्था में ही पुत्र सुख की प्राप्ति होती है। दशम भाव में शुभ ग्रह हो या वह भाव शुभ ग्रहों से देखा जाता हो तो यौवनावस्था में पुत्र-प्राप्ति होती है। इसी प्रकार यदि सप्तम भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो यौवन के अन्त में सन्तान-प्राप्ति जाननी चाहिए।

(११) यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो वृद्धावस्था में पुत्र-प्राप्ति होती है।

(१२) 'ज्योतिष रत्नाकर' के लेखक लिखते हैं—'गौण रूप से ऐसा देखने में आया है कि यदि पंचमेश केन्द्रगत हो तो जातिका को सन्तान का सौभाग्य कम अवस्था में ही प्राप्त होता है। इसी प्रकार यदि पंचमेश पणफर में अर्थात् २-५-८ वा ११वें स्थान में हो तो जातिका को सन्तान-सुख पूर्ण युवावस्था में होता है। यदि पंचमेश आपोक्लिम (३-६-९-१२) स्थान में गया हो तो वृद्धावस्था में सन्तान प्राप्ति जाननी चाहिए।

(१३) 'संतति समय विचार' के लेखक लिखते हैं—"पहले, तीसरे, पाँचवें, सातवें, नवें और ग्यारहवें स्थान में और विशेषकर १-५-७ और ११वें स्थान में जन्म लग्न और जन्म राशि से शनि

अथवा बृहस्पति के गोचरवशात् जाने से सन्तान होती है। दोनों ग्रहों के उक्त स्थानों में आने पर निश्चय ही गर्भ रहता है।"

(१४) जन्म कुण्डली में जब संततिदायक स्थानों में शनि हो तो उसी स्थान में जब गोचर का बृहस्पति आता है, तब संतान होती है।

(१५) जन्मकाल में शनि बलवान् होकर जिस राशि में गया हो उसी राशि में जब शनि आएगा, तब पुत्र-जन्म होगा। यदि शनि के साथ बृहस्पति भी उसी राशि में आ जावे तो अवश्य ही पुत्र-प्राप्ति हो।

संतान की मृत्यु

(१) पाँचवें भाव पर यदि पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो सन्तान-मृत्यु की संभावना होती है।

(२) पंचम भाव का स्वामी यदि पापग्रह के साथ हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि से रहित हो तो संतान की मृत्यु होती है।

(३) यदि पंचम भाव का स्वामी क्रूर और कमजोर नवांश में हो तो संतान की मृत्यु की संभावना रहती है।

(४) राहु जब पंचम भाव में हो और मंगल से देखा जाता हो तो वह संतान की प्रायः मृत्यु करता है।

(५) यदि पंचमेश अष्टमगत हो तो जातिका की किसी संतान की मृत्यु अवश्य होती है।

(६) यदि पंचमेश राहु के साथ हो तो पंचमेश की दशा में जिस संतान का जन्म हो उसकी आयु क्षीण होती है। परन्तु राहु की दशा में जन्म लेने वाली संतान दीर्घायु होती है।

(७) यदि पंचम स्थान और पंचमेश पाप मध्यगत हो और साथ ही बृहस्पति भी पाप ग्रह के साथ हो तो संतान की मृत्यु होती है।

(८) यदि पंचमेश तृतीय, षष्ठ या द्वादश भाव में गया हो और

साथ ही उस पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो संतति की मृत्यु होती है।

(६) यदि कन्या लग्न हो और उसमें सूर्य बैठा हो तथा साथ ही मंगल पंचमस्थ हो तो जातिका की कुल संतान एक के बाद एक मर जाती है।

(१०) शनि और मंगल अष्टम या सप्तम स्थान में हो तो संतान की मृत्यु होती है।

(११) यदि पंचम में सूर्य स्वगृही हो तो पहला पुत्र नष्ट होता है और उसके बाद की संतान जीवित रहती है।

(१२) पंचम भाव में सूर्य गर्भपात करवाता है। स्वक्षेत्री सूर्य में यह बात लागू नहीं होती।

(१३) मंगल पांचवें भाव में हो तो पुत्र अल्पजीवी होता है। परन्तु मेष या वृश्चिक का मंगल पंचम स्थानगत होने से केवल एक संतान अल्पायु और शेष दीर्घायु होती हैं।

(२४) प्रथम पुत्र का विचार पंचम से, दूसरे का सप्तम से, तीसरे का नवम से, चौथे का एकादश से, पांचवें का लग्न से, छठे का तीसरे से और सातवें पुत्र का विचार पंचम भाव से करना चाहिए। यदि संतति मरण का योग आवे और नवम भाव में पापग्रह की राशि हो, पाप ग्रह से युत वा दृष्ट हो तो तीसरी संतान की मृत्यु समझनी चाहिये। इसी प्रकार एकादश भाव में पाप ग्रह की राशि पाप ग्रह की स्थिति और दृष्टि चौथे बालक की मृत्यु बताती है।

संतान की मृत्यु का कारण—संतान की मृत्यु के कारणों का अनुमान लगाने के लिये पंचम भाव से आठवें भाव में गये हुए ग्रह का अध्ययन करना चाहिये।

(१) आठवें स्थान में (पंचम भाव से) सूर्य गया हो तो ज्वर-पीड़ा से, चन्द्रमा गया हो तो जल और शीत से, मंगल गया हो तो

शस्त्र से (ऑपरेशन आदि द्वारा) बुध गया हो तो शीतला रोग से, बृहस्पति गया हो तो पेट के विकार से, शुक्र गया हो तो पशु आदि हिंसक जन्तुओं से, शनि हो तो बाल ग्रह से, राहु हो तो वृक्ष आदि से केतु हो तो विकार से बालक की मृत्यु होती है।

(२) पंचम भाव में सूर्य गया हो तो पित्त रोग, ज्वर, विष और गर्भपात आदि कारणों से बालक की मृत्यु होती है।

(३) पंचम भाव में गया हुआ मंगल व्रण, शस्त्र, रुधिर विकार से संतान की मृत्यु करता है।

(४) पंचम भाव में शनि, राहु अथवा केतु कृमि, अग्नि, पत्थर, जल, आदि कारणों से संतान की मृत्यु करते हैं।

संतति की मृत्यु का समय—

(१) यदि पंचमेश अथवा बृहस्पति अथवा पंचम भाव को देखने वाला ग्रह ६-८ या १२ वें भाव का स्वामी हो, अथवा निर्बल हो अथवा ६-८-१२ वें भाव में बैठा हो तो ऐसी दशा में उस ग्रह की दशा अन्तर्दशा में संतान को क्लेश या मृत्यु होती है।

(२) निम्नलिखित चार स्फुटों को जोड़िये—

(i) पंचमेश का स्फुट, (ii) पुत्र कारक बृहस्पति का स्फुट, (iii) पंचमस्थ ग्रह का स्फुट, (iv) जिस ग्रह की दृष्टि पंचम स्थान पर पड़ती हो उसका स्फुट। इनके योग से जो राश्यादि आवें उस राशि और नवांश में जब गोचर का शनि जाता है तब संतान की मृत्यु अथवा क्लेश का समय जानना चाहिये।

(३) पंचम स्थान से आठवें स्थान में यदि सूर्य हो और संतति-मरण का तीव्र योग उपस्थित हो तो प्रसव के ६ महीने बाद बालक-बालिका की मृत्यु होती है। इसी प्रकार यदि चन्द्र आठवें हो तो ५ वर्ष की अवस्था में, मंगल हो तो ३ वर्ष की अवस्था में, बुध हो तो विवाह के बाद बृहस्पति हो तो १६ वर्ष की अवस्था में, शुक्र हो तो

युवावस्था में, शनि हो तो मध्य भाग की अवस्था के उपरान्त, राहु हो तो गर्भ में ही और केतु हो तो शस्त्र-पीड़ा से मृत्यु होती है।

माता-पुत्र का पारस्परिक सम्बन्ध

(१) यदि लग्नेश की दृष्टि पंचमेश पर पड़ती हो और पंचमेश भी लग्नेश को देखता हो तो पुत्र आज्ञाकारी और सेवक होता है।

(२) लग्नेश पंचमेश के घर में हो और पंचमेश नवमेश के घर में हो तो पुत्र को आज्ञाकारी और सेवक समझना चाहिये।

(३) यदि पंचमेश ६, ८ या १२ वें भाव में गया हो उस पर लग्नेश मंगल और राहु की दृष्टि भी पड़ती हो तो प्रायः पुत्र अपनी माता से घृणा करता है और यदा कदा गाली गलोज भी करता है।

(४) यदि बुध बृहस्पति और शुक्र पंचमस्थ हो अथवा पंचमस्थ राशि वृष, तुला या मिथुन-कन्या-धनु-मीन हो तो प्रायः संतान माता की आज्ञाकारी होती है।

सन्तान सम्बन्धी विशिष्ट योग

(१) **बंध्या योग**—(अ) जिस नारी के जन्मकाल में अष्टम स्थान में सूर्य या चन्द्रमा अपनी राशि में स्थित होवे तो कन्या (जातिका) बांझ होती है।

(ब) जिस स्त्री के जन्मकाल में शनि या मंगल की राशियों (१०-११-१-८) में चन्द्रमा+शुक्र सहित स्थित हो एवं पाप ग्रहों द्वारा देखा जाता हो तो वह स्त्री बांझ होती है।

(२) **काक बंध्या योग**—जिस स्त्री के जन्म काल में लग्न से अष्टम स्थान में चन्द्रमा, बुध अपनी राशि में स्थित होवे वह नारी काक बंध्या अर्थात् अपने जीवन में केवल एक बार प्रसूता है।

(३) **मृत प्रजा योग**—जिस कन्या के जन्मकाल में सप्तम सूर्य व राहु बैठा हो, उसको शनि देखता हो तो उस नारी के संतान पैदा होकर मर जाती है। यद्यपि यह योग लड़के-लड़कियों दोनों पर घटित

होता है फिर भी अनुभव में देखा गया है कि ऐसी स्थिति में जातिका के लड़के अवश्य मरते हैं, लड़कियाँ कभी-कभी जीवित रह सकती हैं।

जिस स्त्री के जन्मकाल में अष्टम स्थान में शुक्र वृहस्पति स्थित हो तो उस स्त्री को मृत संतान उत्पन्न होती है अर्थात् दोषों से वालक गर्भ में ही मर जाता है।

(४) **गर्भ स्राव योग**—जिस नारी के जन्मकाल में सातवें घर में मंगल वैठा हो, उसको शनि देखता हो तो वह नारी गर्भस्राव करने वाली होती है।

जन्म लग्न से अष्टम स्थान में शुक्र वृहस्पति, मंगल स्थित हो तो गर्भस्राव-योग होता है।

(५) **बहु पुत्र-पौत्रवती योग**—लग्न से चन्द्र, दशम में वुध, एकादश में रवि हो तो वह स्त्री निश्चय ही वहु पुत्र-पौत्रवती होती है।

कुण्डली गत कुछ उदाहरण

यह एक ऐसी महिला की कुण्डली है, जिसका विवाह हुए ११ वर्ष हो गए हैं। अभी तक कोई संतान नहीं हुई। देखिए :

कुण्डली संख्या-१०

(१) लग्न राहु से पीड़ित है।

(२) पंचम भाव में छठे घर का स्वामी बुध स्थित है।

(३) पंचम भाव में वुध के साथ क्रूर ग्रह सूर्य है जो अष्टम-भाव का स्वामी भी है।
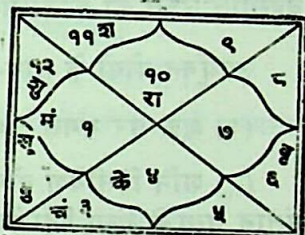
(३) पंचम भाव का स्वामी शुक्र अपनी उच्च राशि में है लेकिन वह दो पाप ग्रहों (शनि और मंगल) से घिरा हुआ है।

(५) बृहस्पति की पंचमेश पर पूर्ण दृष्टि है लेकिन बृहस्पति तीसरे और वारहवें भाव का स्वामी भी है। फिर भी एक सन्तान सम्भव है।

विशेष—महिलाओं की कुण्डली में लग्न में राहु उन्हें प्रायः वांझ बनाता है। यह अनुभव में बहुत बार देखा गया है।

यह एक प्रशासकीय महिला-अधिकारी की कुण्डली है। इसके कुल १८ संतानें हुईं जिनमें ९ अभी तक जीवित हैं। देखिए—

कुण्डली संख्या ११
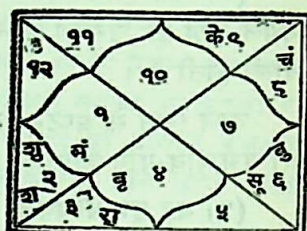
(१) पंचम भाव का स्वामी शुक्र पंचम भाव में ही है। यह शुभ है। शुक्र पर शुभ ग्रह चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि भी है।

(२) पंचम भाव का कारक बृहस्पति अपनी उच्चराशि में केन्द्र (सप्तम भाव) में गया है।

(३) चंद्र कुण्डली से पंचम भाव में मीन राशि है जिसका स्वामी बृहस्पति उच्च का केन्द्रस्थान में है।

उपर्युक्त योगों के साथ-साथ –

(१) शुक्र पर मंगल तथा राहु का पाप मध्यत्व है।

(२) शनि द्वितीयेश होकर मारक बना है जो काफी सीमा तक संतान मृत्यु के लिए जिम्मेदार है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बृहस्पति और पंचमेश (शुक्र) के वलवान् होने के कारण वहुसंतान लाभ हुआ लेकिन साथ ही पाप मध्यत्व शनि ने सन्तान की मृत्यु की।

कुण्डली संख्या ११

यह कुण्डली एक ४५ वर्षीया स्थूलकाया प्रधानाध्यापिका की है। विवाह किए २४ वर्ष हो गए। एक भी सन्तान नहीं हुई।

अध्ययन कीजिये –

(१) लग्न में क्रूर ग्रह संतान सुख में कमी करते हैं।

(२) पंचम भाव में शनि की उपस्थिति अशुभ है।

(३) पंचम भाव को अपनी पूर्ण दृष्टि से मंगल देख रहा है।

(४) वृहस्पति से सातवें स्थान में शनि स्थित है।

(५) छठे भाव का स्वामी शनि पाँचवें भाव में बैठा है।

(६) व्ययेश छठे स्थान में संतान-सुख में कमी करता है।

कुण्डली संख्या १२

यह भूतपूर्व महारानी इंदौर की कुण्डली है। Royal Horoscopes नामक पुस्तक से ज्ञात होता है कि महारानी साहिबा के तीन बार गर्भपात हुआ। अध्ययन करिए—

(१) पंचम भाव का स्वामी शनि बारहवें भाव में गया है।

(२) तीसरे भाव का स्वामी वृहस्पति लग्न में गया है।

(३) वृहस्पति पाप ग्रह राहु और शनि से घिरा हुआ है। ध्यान रहे कि वृहस्पति संतानभाव का कारक है।

(४) पंचमेश शनि पर किसी शुभग्रह की दृष्टि नहीं है।

(५) पंचम भाव से आठवें स्थान पर पाप ग्रह शनि है। और पंचमेश से आठवें भाव से पापग्रह मंगल गया है।

(६) पंचमेश शनि कुंभ के नवांश में भी गया है।

: ७ :

आप क्या बन सकती हैं ?

राजयोग : एक विवेचन, डाक्टर और सर्जन, जज और वकील, विधान सभा या लोकसभा की सदस्या, लेखिका और कवियत्री, नर्तकी, गायिका और अभिनेत्री, धर्म-दर्शन और साहित्य की अध्यापिका-लेक्चरर, व्यवसाय सम्बन्धी अन्य बातें।

राज योग : एक विवेचन

'राज' शब्द से अभिप्राय सामान्यतया ऐश्वर्य और सुख-सुविधा से है; राज्य प्राप्ति से नहीं। राजयोग का फल कुण्डली के बलाबल और देशकाल पर निर्भर करता है। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व महिलाओं की कुण्डलियों के राजयोग केवल उनके पतियों को फलदायी होते थे लेकिन आज स्थिति भिन्न है। स्त्री और पुरुष में लैंगिक दृष्टि के अतिरिक्त अन्य कोई अन्तर नहीं रह गया है। जीवन और व्यवसाय के किसी भी क्षेत्र में वे पुरुषों से पीछे नहीं रही हैं। जिन महिलाओं की कुण्डली में राजयोग उपस्थित होता है वे मंत्रियों, सरकारी अफसरों, विद्वानों, साहित्यकारों एव उच्च व्यापारियों की पत्नियाँ बनती हैं। इसके अतिरिक्त वे स्वयं भी बड़ी सरलता से राजनीति और उच्च सरकारी नौकरियों में सफलता प्राप्त कर सकती हैं। कतिपय राजयोगों का विवेचन यहाँ प्रस्तुत है–

(१) जन्म लग्न में बृहस्पति और सप्तम में चन्द्रमा स्थित हो तथा साथ ही दशम भाव में अपने वर्ग का शुक्र हो।

(२) बलवान् बृहस्पति प्रथम, चतुर्थ, सप्तम या दशम भाव में बैठा हो और पूर्ण चन्द्रमा अपनी पूर्ण दृष्टि से उसे देख रहा हो।

(३) जन्म कुण्डली के केन्द्र स्थानों (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह

स्थित हों और ३।६।११वें भावों में पापग्रह बैठे हों तथा साथ ही सप्तम भाव में पुरुष राशि गई हो।

(४) ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा और सप्तम भाव में बुध+शुक्र बैठे हों और बृहस्पति द्वारा दृष्ट हो।

(५) जन्म लग्न में उच्च का बुध स्थित हो और ग्यारहवें भाव में बृहस्पति गया हो। यह योग केवल कन्या लग्न की कुण्डली में ही सम्भव है।

(६) तीसरे भाव में बुध बैठा हो, षड्वर्ग में भी शुद्ध बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो और शुक्र जन्म लग्न में गया हो।

(७) जन्मकुण्डली में षड्वर्ग में शुद्ध, कम से कम तीन ग्रह उच्च के हों। यदि चार या पाँच ग्रह उच्च के हों तो योग बहुत प्रबल होता है। देखिए—

षड्वर्गशुद्धस्त्रिभिरेव मंत्री चतुर्भिरीशस्य तथैव पत्नी।
पंचादिभिर्दिव्यविमानभाजा त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ॥

(स्त्री० जा०)

भगवान् श्री कृष्ण की पत्नी रुक्मिणी की जन्मकुण्डली में उक्त योग स्पष्ट है—

(८) जन्म के समय कर्क लग्न का उदय हो, सातवें भाव में चन्द्रमा बैठा हो और केन्द्र स्थान पाप ग्रहों से रहित हो।

(९) बृहस्पति उच्च या स्वक्षेत्र राशियों में स्थित होकर नवें, पांचवें पहले, चौथे, सातवें या दसवें भाव में (किसी एक स्थान में) गया हो।

कुण्डली संख्या १४

(१०) पूर्ण चन्द्रमा चतुर्थ भाव में उच्च का हो और बृहस्पति द्वारा देखा जाता हो। यह योग केवल कुंभ लग्न की कुण्डली में उपस्थित रह सकता है।
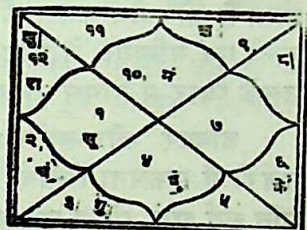
(११) चतुर्थ भाव में, अपनी राशि में बुध+बृहस्पति के साथ बैठा हो (बृहस्पति षड्वर्ग में शुद्ध होना चाहिए) और शुक्र द्वारा देखा जाता हो। मिथुन लग्न की जन्मकुण्डली में ही यह योग संभव है।

(१२) जन्म लग्न में स्थिर राशि हो जिसमें बृहस्पति बैठा हो, मंगल तीसरे या छठे भाव में गया हो और शुद्ध शनि ग्यारहवें भाव में स्थित हो।

(१३) अष्टम भाव में उच्च का (मेष राशि का) सूर्य बैठा हो, पूर्ण चन्द्रमा लग्न में गया हो और बुध दशम भाव में स्थित हो।

(१४) षड्वर्ग शुद्ध बलवान् सूर्य तीसरे भाव में गया हो और शनि छठे भाव में बैठा हो।

(१५) वृषभ लग्न हो, चन्द्रमा बुध के साथ बैठा हो या उससे देखा जाता हो तथा साथ ही लाभ भाव (एकादश स्थान) में शुक्र स्थित हो।

(१६) ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो, सप्तम भाव में शुक्र+बुध के साथ हो और बृहस्पति से देखा जाता है।

(१७) बृहस्पति या शुक्र अत्यन्त बली होकर सातवें भाव में बैठे हों, दशम भाव का स्वामी ६। ११। १। ४। ५। १०।२—इन स्थानों में बली होकर स्थित हो। इस योग की प्रशंसा में लिखा है कि ऐसे योग में जन्म लेने वाली स्त्री का मुख चन्द्रमा के समान होता है और नेत्र कमल की तरह। अत्यन्त रूपवती यह स्त्री सदैव रत्नों एवं मणियों से जटित महलों में रहती है और उसका पति उसके प्यार में पागल रहता है।

डाक्टर और सर्जन :— – किसी महिला को डाक्टरी या सर्जरी में सफलता मिलेगी या नहीं, इसके लिए उस की कुण्डली में **शनि सूर्य और मंगल का अध्ययन करना** चाहिए। ध्यान रहे कि

शनि मृत शरीर का कारक है, सूर्य दवाइयों का और मंगल का रक्त से सम्बन्ध है। अतः सूर्य, मंगल और शनि के उचित सम्बन्ध और दशम भाव के बलवान् होने पर कोई भी महिला डाक्टर हो सकती है।

शुक्र-मंगल का सम्बन्ध हो तथा सूर्य से दृष्ट हो तो सर्जन होने का परिचायक है।

गुरु+केतु योग होमियोपैथिक चिकित्सा-ज्ञान प्रकट करता है। शुक्र-चन्द्र का संयोग हो तथा सूर्य से दृष्ट हो तो जातिका को वैद्या समझना चाहिए।

जज और वकील - बुध, गुरु, द्वितीयेश और पंचमेश के अध्ययन से जज और वकील होने का निर्णय करना चाहिए।

तृतीयेश, षष्ठेश, बृहस्पति तथा दशम भाव बलवान् हो तो जातिका वकील होती है।

सप्तमेश नवम भावगत हो तथा नवमेश सप्तम स्थान में हो तो जातिका वकील होती है।

बुध+बृहस्पति अथवा राहु+बुध का योग कानून विशेषज्ञा, वकील आदि का सूचक है।

बारहवें भाव का स्वामी १ २ ४ ५ ९ १० वें भावों में से किसी एक भाव में गया हो, लग्नेश बलवान् हो, तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में सौम्य और क्रूर ग्रहों की राशियाँ हों, इन भावों में कोई ग्रह स्वगृही भी हो तो जज होने का योग बनता है।

मतान्तर से यदि सूर्य दशमेश का नवांशेश हो या दशमस्थ हो तो जातिका जज हो सकती है। बृहस्पति का भी यही फल समझना चाहिए।

विधान सभा या लोक सभा की सदस्या – किसी महिला की कुण्डली में यदि निम्नलिखित योग बलवान् हो तो वह राजनैतिक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकती है: –

(१) बलवान् चन्द्रमा लग्न में बैठा हो।

(२) राहु छठे, तीसरे या ग्यारहवें भाव में गया हो।

(३) मंगल तीसरे या छठे भाव में हो।

(४) लग्नेश अपनी उच्चराशि में गया हो या षष्ठेश, अपनी उच्च राशि में बैठा हो।

(५) लग्न में या छठे भाव म उच्च राशि का ग्रह गया हो,

(६) दूसरे या नवें घर में बलवान् वृहस्पति हो।

(७) छठे भाव म बलवान् पापग्रह गया हो।

(८) छठे भाव का स्वामी ग्यारहवें भाव में गया हो।

(९) दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव में गया हो।

(१०) ग्यारहवें भाव का स्वामी स्वगृही या बलवान् अथवा उच्च का हो।

(११) तीसरे और छठे भाव में पापग्रह गये हों तथा साथ ही बलवान् शनि दशम भाव में हो।

लेखिका और कवियत्री—(१) मंगल, मिथुन या कन्या में हो और वृहस्पति से देखा जाता हो।

(२) चन्द्र+बुध सातवें भाव में गये हों।

(३) मंगल वृष या तुला राशि में हो और शनि से देखा जाता हो।

(४) बुध+शुक्र अथवा बुध+सूर्य लग्न में हो।

(५) शुभ कर्क राशि में गया हो और बुध से देखा जाता हो।

(६) बलवान् बुध या वृहस्पति दशम भाव में हो।

(७) बलवान् बुध शुक्र से युत हो।

(८) सूर्य चन्द्रमा से युत द्वितीय, पंचम अथवा दशम में हो।

नर्त्तकी गायिका और अभिनेत्री—(१) तृतीयस्थ ग्रह सूर्य अथवा बुध के साथ हो;

(२) चन्द्रमा बुध के नवांश में सूर्य से दृष्ट हो;

(३) पंचम भाव बलवान् हो तथा शुक्र, बुध एव लग्नेश का योग हो;

(४) सूर्य मेष या सिंह राशि में हो, चन्द्र से देखा जाता हो;

(५) मंगल वृष या तुला राशि में हो और बृहस्पति से देखा जाता हो;

(६) शुक्र कर्क राशि में गया हो और मंगल से देखा जाता हो;

(७) बुध कर्क राशि में या सिंह राशि में गया हो, उस पर शुक्र या चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो।

धर्म, दर्शन और साहित्य की अध्यापिका, लेक्चरर—(१) शुक्र मिथुन या कन्या राशि में हो और बृहस्पति से दृष्ट हो;

(२) मंगल + बृहस्पति चौथे भाव में हो;

(३) बृहस्पति + शुक्र लग्न अथवा चौथे भाव में हो;

(४) बुध सिंह राशि में गया हो और बृहस्पति से देखा जाता हो ;

(५) बृहस्पति नवें भाव में हो और बुध और शनि से देखा जाता हो ;

(६) बृहस्पति और शुक्र का योग नवें भाग में हो,

(७) पंचम भाव में चन्द्र + बृहस्पति का योग हो तो महिला संस्कृत की लेक्चरर होती है,

(८) पंचम भाव में राहु हो तो वह अंग्रेजी भाषा की लेक्चरर बन सकती है।

व्यवसाय सम्बन्धी अन्य बातें—(१) महिलाओं की कुन्डलियों में बारहवें भाव का स्वामी १।२।४।५।६।१० वें भाव में गया हो तो नौकरी का योग बनता है। ऐसी अवस्था में सामान्य कोशिश से ही नौकरी प्राप्त हो सकती है।

(२) भाग्यस्थान में लाभेश बैठा हो तो उत्तम नौकरी का योग होता है।

३) दशम भाव पर चन्द्र-गुरु की दृष्टि महिला को गजेटेड सर बनाती है।

(४) यदि चर राशियों में अन्य राशियों की अपेक्षा अधिक ग्रह स्थित हों तो स्वतन्त्र व्यवसाय में लाभ होता है।

(५) यदि चन्द्रमा से केन्द्र में बुध, बृहस्पति और शुक्र में से कोई एक अथवा सभी ग्रह हों तो भी स्वतन्त्र व्यवसाय में लाभ हो सकता है।

(६) बुध बलवान् हो और लग्नेश निर्बल न हो तो वाणिज्य में लाभ होता है।

(७) दशमेश १-४-७-१०-९-५ वें भाव में गया हो और शुभ ग्रह देखते हों तो वाणिज्य में लाभ हो सकता है।

(८) बलवान् बुध छठे भाव से सम्बन्धित हो तो स्टैनो टाइपिस्ट होने का सूचक है।

परीक्षाओं में सफलता-असफलता

(१) वर्तमान समय में डिग्री प्राप्त करने और व्यवसाय (नौकरी) में सफल होने के लिए परीक्षा अनिवार्य है। इसमें सफलता-असफलता जानने के लिए महिलाएँ सदैव उत्सुक रहती हैं। ज्योतिष रत्नाकर' के अनुभवी लेखक के अनुसार दशम एवं द्वितीय-भाव इस विषय में विचारणीय है। बुध और बृहस्पति के शुभफल से भी परीक्षोत्तीर्ण होने में मदद मिलती हैं। मेरे विचार से इन सब बातों के साथ-साथ यदि नवम भाव का भी बलाबल देख लिया जाय तो फल कथन सत्य के बहुत निकट हो सकता है।

(२) यदि द्वितीय अथवा दशम भाव में शनि बैठा हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि नहीं हो तो जातिका के विद्याध्ययन और परीक्षा में सफलता प्राप्त करने में विघ्न-बाधायें उपस्थित हुआ करती हैं।

(३) दूसरे और दसवें भाव के स्वामी ६,८, १२ भाव में पड़ने पर पापाक्रांत होने पर या पाप मध्यगत होने से जातिका के विद्याध्ययन और परीक्षाओं में बाधाएं उपस्थित हुआ करती हैं।

(४) एक ज्योतिष-प्रेमी ने लिखा है कि तृतीयेश यदि उच्च घर में हो तो जातिका परीक्षा में स्वर्णपदक प्राप्त करती है।

(५) यदि विद्या देने वाले ग्रह की दशा-अन्तर्दशा विद्यार्थी जीवन में न पड़ती हो तो जातिका सुगमता से विद्याध्ययन नहीं कर सकती।

(६) राहु की दशा-अन्तर्दशा में प्रायः परीक्षा में असफल होने का डर रहता है।

कुण्डलीगत उदाहरण

कुण्डली संख्या १५

यह एक महिला डाक्टर की कुण्डली है। यह B.S.C. और M, B. B. S. है। सफलतापूर्वक डाक्टरी और सर्जन का कार्य कर रही है। स्वयं दमा से पीड़ित भी है, कोई सन्तान नहीं है। देखिये:—

(१) प्रथम और पाँचवें भाव के स्वामी मंगल+सूर्य का योग है।

(२) नवें भाव का स्वामी बृहस्पति सांतवें भाव में है।

(३) दसवें भाव को लग्न मानने पर पहले नवें और दसवें घर के स्वामी एक साथ नवें भाव में बैठे हैं।

कुण्डली संख्या १६

यह महिला लोक सभा की सदस्या है। यह बहुत बहुमत से विजयी हुई। उस समय गोचर में बृहस्पति उच्च का था, सूर्य केन्द्र में था, कुण्डली का भी अध्ययन करिये:—

(१) शनि छठे और साँतवें घर का मालिक होकर एकादश भाव में गया है
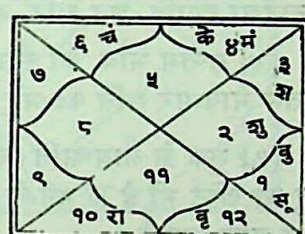
(२) सूय नवें घर म अपनी उच्चराशि में गया है। दूसरे और ग्यारहवें घर का स्वामी बुध उसके साथ है।

(३) बृहस्पति अष्टम भाव में गया है लेकिन अपनी राशि में है।

(४) छठे भाव में पापग्रह राहु गया है।

(५) उस समय शनि की महादशा में बुध का अन्तर चल रहा था।

यह कुण्डली पारितोषिक प्राप्त नर्तकी श्रीमती सावित्री गणेशम् की है। विद्यार्थी जीवन में ही इसके नृत्य से प्रभावित होकर इसके गुरू कोटा सुब्रह्मण्यम् शास्त्री ने घोषणा की कि यह लड़की कभी अपना नाम रोशन करेगी। इसने एक तेलगु अभिनेता से

कुण्डली संख्या १७
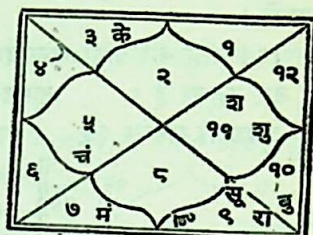
विवाह किया जो पहले ही एक स्त्री का पति था देखिए:—

(१) द्वितीय भाव केतु से पीड़ित है।

(२) बृहस्पति आठवें भाव में गया है। सूर्य और राहु उसके साथ है। शुक्र की दशा में उसने अपना प्रशिक्षण प्राप्त किया और सूर्य की दशा में यश और पुरस्कार प्राप्त किया। सूर्य यद्यपि आठवें भाव में गया है लेकिन वह चन्द्र लग्न का स्वामी है।

(३) ध्यान रहे वृषभ लग्न की महिलाओं को प्रायः सूर्य की दशा अन्तर्दशा ख्याति, धन और सुख देती है।

(४) सप्तम भाव का स्वामी मंगल छठे घर में बैठा है, साथ ही सप्तम भाव पर शनि की भी दृष्टि है।

(५) शुक्र के साथ शनि और बृहस्पति के साथ राहु है। उन पर केतु की दृष्टि भी है। मन के स्वामी चन्द्रमा पर शनि अपनी पूर्ण दृष्टि डाल रहा है।

कुन्डली संख्या १८
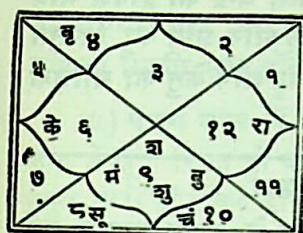
यह तेलगु तारिका शंकर मनची जानकी की कुण्डली है। केवल १६ वर्ष की अवस्था में ही इसने तेलगु तारिका के रूप में ख्याति प्राप्त करनी आरम्भ की। अभी इसने तमिल नाडू के मुख्यमंत्री से सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त किया है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यद्यपि अभी इसकी आयु लगभग ४२ वर्ष की है फिर भी यह युवा स्त्री की तरह आकर्षक लगती है। लड़की इसकी बहिन दीखती है, पुत्री नहीं।

(१) चन्द्रमा आठवें भाव म गया है जिस पर उच्च के वृहस्पति की पूर्ण दृष्टि है।

(२) सूर्य छठे भाव में गया है।

(३) नवें भाव का स्वामी शनि सातवें भाव में षष्ठेश मंगल के साथ है।

(४) शनि+शुक्र साथ-साथ बैठे हैं और दसवें भाव में राहु गया है।

(५) बुध लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

(६) राहु दशा में इसका भाग्योदय प्रारम्भ हुआ था।

एक अध्यापिका की कुण्डली साथ में दी है। जिसने चार वर्ष अध्यापन-कार्य करने के बाद त्यागपत्र दे दिया।

कुण्डली संख्या १६
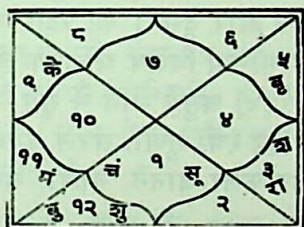
: ८ : भावफल विचार

रवि का द्वादश भावफल, चन्द्र का द्वादश भाव विवेचन, मंगल-बुध-गुरु-शुक्र और शनि का विस्तृत द्वादश भावफल-विवेचन, राहु और केतु का मौलिक भावफल विचार।

रवि का द्वादश भावफल

प्रथम भाव में सूर्य:—जिस नारी के जन्म के समय लग्न में सूर्य स्थित हो वह स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली, दुर्बल शरीर वाली, तीव्र रोगों से ग्रस्त, उपकार न मानने वाली, दूसरों के धन में रुचि रखने वाली और नीच जनों की सेवा करने वाली होती है। प्राय: ऐसी स्त्री बाल्यावस्था में रोगिणी, आंख में कष्ट वाली और धन-पुत्रादि के सुख से रहित होती है। यदि स्वराशि का या उच्च का सूर्य लग्न में हो तो सुख से युक्ता होती है।

(२) **द्वितीय भाव में सूर्य**—धन भाव में सूर्य हो तो नेत्र रोग वाली, परिवार के सुख से रहिता, मध्यम प्रकार के धनवाली, कड़वी बात कहने वाली और मित्र रहित होती है। यदि स्वोच्च या स्वराशि का सूर्य हो तो, धनादि सुख की भागिनी होती है।

(३) **तृतीय भाव में सूर्य**—तृतीय भाव में सूर्य स्थित हो तो बालिका अत्यन्त स्वस्थ और सुन्दर शरीर वाली, सदैव प्रसन्न रहने वाली, भाई-बहिन के सुखों से रहित, लेकिन पति-पुत्रादि के सुख से युक्त और दूसरों की रक्षा करने वाली होती है। ऐसी स्त्री के वक्ष का सौन्दर्य विशेष आकर्षक होता है।

(४) **चतुर्थ भाव में सूर्य**—जन्म के समय चतुर्थ स्थान में सूर्य हो तो वह स्त्री सुखी, सरल हृदय और सुन्दर पतिवाली, संगीत, शिल्प और कला जानने वाली, सर्वदा प्रसन्न और उच्च राजकीय अधि-

कारी की पत्नी होती है। प्रायः ऐसी स्त्री कम सन्तान वाली, साधु सन्यासियों और ब्राह्मणों की सेवा करने वाली होती है। ये फल सूर्य की स्थिति शुभ होने से होते हैं।

(५) **पंचम भाव में सूर्य**—जिस स्त्री के जन्म के समय पंचम भाव में सूर्य स्थित हो वह स्त्रियों में प्रधान, व्रत-उपवास करने वाली स्थूल मुखी और बड़े दाँतों वाली, पिता-माता की भक्ता, प्रिय वचन वोलने वाली, अल्प-सन्तान वाली और ब्राह्मणों की भक्ता होती है। कभी-कभी मेष और सिंह से भिन्न राशिस्थ पंचम सूर्य से बाल्यावस्था में रोगिणी, एक संतान वाली और धनहीना स्त्री भी देखी गई है।

(६) **षष्ठ भाव में सूर्य**—षष्ठ (शत्रु) भाव में सूर्य हो तो वह स्त्री शत्रु को जीतने वाली, सुन्दर अंगों वाली, परिजनों की रक्षा करने वाली, धन-पुत्रादि के सुख से युक्ता, उत्तम बुद्धि वाली और लोक मान्या होती है। वह अत्यन्त चतुरा, धर्म में तत्पर, उत्तम भाग्यवाली, और प्रिय स्वभाव वाली होती है।

(७) **सप्तम भाव में सूर्य**—जिस स्त्री के जन्म के समय सूर्य पति भाव में स्थित हो वह स्त्री अपने पति से तिरस्कृता, सम्पूर्ण सुखों से हीन, सदैव क्रोध के मूड़ में रहने वाली, कफ प्रकृति की, पाप कर्म करने वाली और असुन्दरी होती है। प्रायः ऐसी स्त्री कपिलनेत्रा होती है।

(८) **अष्टम भाव में सूर्य**—मृत्यु भाव में सूर्य बैठा हो तो स्त्री चंचल स्वभाव वाली, धन का त्याग करने वाली, रोगिणी, दुःशीला मलीना और पति के सुख से हीना होती है। प्रायः ऐसी स्त्री रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) की अस्तव्यस्तता से ग्रस्त होती है।

(९) **नवम भाव में सूर्य**—जिस नारी के जन्म के समय धर्म भाव में सूर्य स्थित हो वह साहसिनी, धर्मप्रिया, भाग्य में कमी पाने

वाली, वहुत शत्रुओं वाली, रोगिणी और वैभव से हीन होती है। ग्रन्थान्तर के अनुसार—

धर्मस्थेऽर्के धनैर्युक्ता सुकेशी सत्यवादिनी।
बाले रोगयुता मध्ये सुखिताऽन्त्ये च दुःखिता ॥

(स्त्री जातकम् २८।९)

(१०) **दशम भाव में सूर्य**—जिस स्त्री के कर्म भाव में रवि स्थित हो वह सदैव रोग से पीड़िता, कुकर्मिणी तेजोहीना, नाच गानों में विशेष प्रेम रखने वाली और कुछ अभिमानी होती है।

(११) **एकदश भाव में सूर्य**—जिस नारी की जन्म कुण्डली में लाभ भाव में सूर्य हो वह नारी पुत्र-पौत्र-युक्ता, इन्द्रियों को वश में रखने वाली, सर्वकलाओं में निपुणा, वन्धु वर्ग में माननीया, सुन्दरी, सुशीला, प्रसन्ना और क्षमाशीला होती है।

(१२) **द्वादश भाव में सूर्य**- जिस नारी के जन्म के समय व्यय भाव में सूर्य स्थित हो वह स्त्री अशुभ कार्यों में खर्च करने वाली, नम्रता रहित, शराब आदि मादक पदार्थों का पान करने पाली, भक्ष्याभक्ष्य का विचार न रखने वाली, शुचिता-रहित, और उद्धत स्वभाव व वृत्ति वाली होती है।

चन्द्र का द्वादश भाव फल

(१) **प्रथम भाव में चन्द्रमा**—जिस स्त्री के जन्म लग्न में शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा हो वह स्त्री गौर वर्ण वाली व सुस्वरूपा होती है किन्तु कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा हो तो वह रोगिणी, विवाद प्रिया, कृशांगी व कुवस्त्र धारण करने वाली होती है।

(२) **द्वितीय भाव में चन्द्रमा**—धन भाव में चन्द्रमा गया हो तो धन सम्पन्ना, नम्र स्वभाव वाली, पतिकार्य में निपुणा, धर्मशीला, सदैव दान करने को तत्पर, नीति युक्ता और ब्राह्मणों का आदर करने वाली होती है।

(३) तृतीय भाव में चन्द्रमा– जिस स्त्री के जन्म के समय सहज भाव में चन्द्रमा हो वह नारी कफ-वात और अतिसार रोग से पीड़िता कठोर वाक्य बोलने वाली सदैव क्रोध युक्त रहने वाली, नीति रहिता, कुसंगति करने वाली, कृपणा और कृतघ्ना होती है।

(४) चतुर्थ भाव में चन्द्रमा—जिस स्त्री के सुख भाव में चन्द्रमा बैठा हो वह गृहादिक सब सुखों से युक्ता, सुन्दरी, मधुर बोलने वाली, मांस-मछली में रूचि रखने वाली और यौन सुख को विशेष महत्व देने वाली होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण (निर्बल) हो तो रोगभय कहना चाहिए।

(५) पंचम भाव में चन्द्रमा—सुत भाव में चन्द्रमा हो तो वह स्त्री सुपुत्रवती, गुणवती, गौरवशालिनी, पुत्र-नौकर आदि के सुख से युक्त, रूपवती, पति की आज्ञा मानने वाली होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण हो अथवा अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो इससे विपरीत फल कहना चाहिए।

(६) षष्ठ भाव में चन्द्रमा– रिपु भाव में चन्द्रमा बैठा हो तो वह स्त्री द्वेषिणी, अविनयी, चंचला, रोग ग्रस्ता, कृश शरीरा और अल्प धनवती होती है। कहा भी है—

रिपुहन्त्री रिपौ चन्द्रे बाल्ये रोगभयान्विता।
तत्र पूर्णे स्वभोच्चादौ जाता सर्वसुखान्विता॥

अर्थात् षष्ठ भाव में चन्द्रमा हो तो वह स्त्री अपने शत्रुओं को जीतने वाली और बाल्यावस्था में रोगिणी होती है। यदि चन्द्रमा पूर्ण बली होकर कर्क या वृषभ में हो तो सब सुखों से युक्ता होती है।

(७) सप्तम भाव में चन्द्रमा— जिस नारी के जन्म के समय बलवान् चन्द्रमा पति भाव में स्थित हो वह स्त्री निश्चय ही अत्यन्त चतुर, अपने पति की प्रिया, धर्म और विवेक से कार्य करने वाली, श्रेष्ठ आचरण और उत्तम वाणी वाली कमनीया, पतिव्रता और

ऐश्वर्य सम्पन्न होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण हो तो पति-सुख से हीना कहना चाहिए।

(८) **अष्टम भाव में चन्द्रमा**—जिस स्त्री के अष्टम (मृत्यु) भाव में चन्द्रमा स्थित हो वह स्त्री निर्भया, निन्दित कर्म करने वाली रोग से ग्रस्त, क्रोध से युक्त और आचरणहीन होती है। ऐसी स्त्री के नेत्र, उरोज और जननेन्द्रिय सुन्दर नहीं होती। यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो बाल्यकाल में ही मरने की सम्भावना रहती है।

(९) **नवम भाव में चन्द्रमा**—जिस नारी के जन्म के समय नवम भाव में चन्द्रमा स्थित हो वह स्त्री क्षीण कटि वाली, सुन्दर सेवकों व पुत्रों वाली, बहुत धर्म करने वाली, स्त्रियों में चतुर, उत्तम भाग्यवाली और मन की बात समझने वाली होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण अथवा शत्रु नीच राशि में हो तो वह धर्म और सुख से रहित होती है।

(१०) **दशम भाव में चन्द्रमा**—जिस नारी के जन्म के समय दशम भाव में चन्द्रमा हो वह अनेक स्वर्ण आभूषणों को पहनने वाली, पति-पुत्र और धन से युक्त, कुल में श्रेष्ठ, दानी पुण्य-शीला और सत्यभाषणप्रिया होती है।

(११) **एकादश भाव में चन्द्रमा**—क्षीण अथवा पूर्ण चन्द्रमा एकादशभाव में गया हो तो वह स्त्री सब कार्यों में लाभ करने वाली, सुन्दरी, सौभाग्यवती, धन-पुत्र आदि के सुख से युक्ता, इन्द्रिय-निग्रही नम्र, दानी और नीरोग होती है।

(१२) **द्वादशभाव में चन्द्रमा**—व्यय भाव में चन्द्रमा हो तो वह स्त्री बहुत खर्च करने वाली, बाल्यावस्था में रोगिणी, क्षीण नेत्र वाली दुश्चरित्रा और विचित्र रूप वाली होती है। प्रायः ऐसी नारी पाप प्रकृति वाली, दीना, अन्यायकारिणी, क्षमाहीना व दरिद्रा होती है।

मंगल का द्वादश भावफल

(१) **प्रथम भाव में मंगल**—जिन नारी के जन्म काल में लग्न-वर्ती मंगल हो वह सदैव रक्त दोष स पीड़ित, गर्व युक्त भाग्यहीन, पराक्रमहीन, दांत में रोगवाली, कृष्ण वर्णा और पति से तिरस्कृत होती है ।

(२) **द्वितीय भाव में मंगल**—यदि धन भाव में मंगल स्थित हो तो वह नारी अल्प वाली, अपने कार्य में सदैव तत्पर, शरीर से दुबली, जुआरी की स्त्री, सुखभागिनी, क्षमाशीला, कामातुरा, कई पुरुषों की आश्रित और कुत्सित बुद्धि वाली होती है ।

(३) **तृतीय भाव में मंगल**—जिस स्त्री के तृतीय भाव में मंगल हो वह सौभाग्यवती, सदैव प्रसन्न रहने वाली, साधु-सन्तों में आदर भाव रखने वाली व उनकी लाड़ली, प्रभावशालिनी और रोग-रहिता होती है ।

ग्रन्थांतर से तृतीय भावस्थ मंगल वाली स्त्री कृशाँगी और भाइयों के सुख से रहित होती है। यदि नीच या शत्रु राशि का मंगल हो तो धनहीना और उच्च या स्वराशि का मंगल हो तो सब सुखों से युक्त कहना चाहिए ।

(४) **चतुर्थ भाव में मंगल**—जिस स्त्री के चतुर्थ भाव में मंगल गया हो वह नारी निन्दित कर्म करने वाली, सौख्य-रहिता, दुष्ट स्व-भाव वाली, सदैव क्रोध में रहने वाली, द्रव्य हीना और तिरस्कृता होती है। प्रायः ऐसी स्त्री दूसरों में आसक्त, कुबुद्धि और लोभ करने वाली होती है ।

(५) **पंचम भाव में मंगल**—पुत्र भावस्थ भौम वाली स्त्री प्रायः लज्जाहीन, पाप कर्म में दक्ष, कुपुत्रवती, बन्धुओं के सुख से विहीन, पापाचरण वाली और दुःखभागिनी होती है। यदि स्वोच्च या स्व-राशि का मंगल हो तो एक पुत्र होता है ।

(६) **षष्ठ भाव में मंगल**—शत्रु भाव में स्थित मंगल वाली स्त्री गुणवान पति से युक्ता, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाली, विभिन्न विद्याओं में दक्षा, उच्च और श्रेष्ठ लोगों में रहने वाली और रोग रहिता होती है। यदि मंगल वहुत ही निर्बल हो तो कुछ रोगभय कहना चाहिए।

(७) **सप्तम भाव में मंगल**—पति भावस्थ मगल होने पर नारी बाल-विधवा, कुरूपा, दुष्ट स्वभावा, ऐश्वर्य व गुण से हीना होती है। इसके अतिरिक्त वह स्त्री अन्य पुरुषों में आसक्त रहने वाली, चंचला और दुःख-भागिनी होती है। शुभ ग्रहों के प्रभाव से रहित मंगल होने पर ही विधवा होने की संभावना रहती है, यह विशेष विचारणीय है।

(८) **अष्टम भाव में मंगल**—अष्टम भावस्थ भौम वाली नारी प्रायः कृशांगा, विधवा, दरिद्रा, दुःखिनी, रोगिणी, हिंसाप्रिया और कांतिहीना होती है। ऐसी स्त्री का मरण दुर्घटना द्वारा होता है या उसके पति का मरण होता है।

(९) **नवम भाव में मंगल**—जिस नारी के जन्म के समय धर्म-भाव में मंगल हो वह स्त्री धर्म व भाग्य से हीना, सुन्दरी, रोगिणी, सज्जनों द्वारा तिरस्कृत; तामस-आहार करने वाली, चित्रादि कलाओं में निपुणा, लोक में प्रसिद्धा और अधिक परिजन वाली होती है।

(१०) **दशम भाव में मंगल**—जिस नारी के कर्म भाव में मंगल हो वह स्त्री धर्महीना, लज्जाहीना, शीलहीना, रतिप्रिया और बुद्धिहीना होती है। बलवान् और शुभ ग्रहों से दृष्ट भौम होने पर वह स्त्री अपने कुल में सबसे उत्तम, सभी कार्यों में निपुण, उच्च राजकीय अधिकारी की पत्नी और दूसरों का उपकार करने वाली होती है।

(११) **एकादश भाव में मंगल**—लाभ भाव में स्थित भौम वाली नारी अत्यन्त उत्तम व्यवहार वाली, बहुत लाभ वाली, अपने धर्म में

प्रीति रखने वाली, तृष्णाओं से रहित, सदैव अपने पति में आसक्त और सब कार्यों में कुशलिनी होती है।

(१२) द्वादश भाव में मंगल—जिस नारी की जन्मकुण्डली में व्यय भाव में मंगल हो वह अधिक खर्च करने वाली, विधवा या पति सुख से हीन, निर्बला, धन हीना, सदैव क्रोध में रहने वाली और परिवार वालों से विरोध करने वाली होती है। इसके अतिरिक्त वह स्त्री मद्यपान की शौकीन और कामातुर भी होती है।

बुध का द्वादश भाव फल

(१) प्रथम भाव में बुध—जिस नारी के जन्म के समय लग्न में बुध स्थित हो, वह नारी विशेष सुन्दरी, पतिमान्या, धर्म व नीति से युक्ता, धन-धान्य-सम्पन्ना, सत्य-भाषिणी, पण्डिता, धैर्यवती, सुशीला, अधिक संतान वाली, शिल्पकला जानने वाली और दानानुरागिणी होती है।

(२) द्वितीय भाव में बुध—कुटुम्ब भाव में बुध स्थित हो तो वह धनवती, रूपवती, माता-पिता आदि गुरुजनों की भक्ति वाली, शुद्ध आचरण वाली, यज्ञादि पर प्रीति रखने वाली तथा सुख और सन्तान से परिपूर्णा होती है।

(३) तृतीय भाव में बुध—जिस स्त्री के जन्मकाल में सहज भाव में बुध गया हो वह नारी पुत्रवती, माननीया, देवताओं और ब्राह्मणों की भक्त, समर्थ लोग अनुकूल, धनवती, थोड़े सहोदर वाली, कुछ कुटिलहृदया और केवल अपने कार्य को महत्व देने वाली होती है।

(४) चतुर्थ भाव में बुध—सुख भाव में बुध स्थित हो तो वह स्त्री श्रेष्ठ सुखों को भोगने वाली, अत्यन्त नम्र स्वभाव वाली, देवताओं और ब्राह्मणों की आराधना में तत्पर, अपने वंश में प्रसिद्धा, धर्मरता और नौकरों के सुखों को प्राप्त करने वाली होती है। इसके

अतिरिक्त वह अधिक संभोग चाहने वाली, दुबली, चंचल प्रकृति की, सहोदर सुख से रहित और हास्य प्रिया होती है।

(५) **पंचम भाव में बुध** - पुत्र भाव में बुध गया हो तो वह स्त्री कलहप्रिय, अधिक भटकने वाली, बुरे कर्म करने वाली, दरिद्रा और साधु सन्तों का त्याग करने वाली होती है। इसके अतिरिक्त मतान्तर से वह पुत्रवती, उत्तम पति वाली, सुन्दर और धन के सुखों को भोगने वाली होती है।

(६) **षष्ठ भाव में बुध**--रिपु भाव में बुध स्थित हो तो वह नारी प्रायः शत्रुपक्ष का नाश करने वाली, वैभवशालिनी, अल्पायु, कामकला में दक्ष, कुछ व्यसनी और परोपकार की इच्छुक होती है। यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि भी बुध पर हो तो कुछ रोग और शत्रु भय कहना चाहिए।

(७) **सप्तम भाव में बुध**—जिस स्त्री के जन्मकाल में पति भाव में बुध स्थित हो वह नारी अत्यन्त चतुर, विभिन्न शास्त्रों को जानने वाली, उत्तम पति के सुख से युक्त, नियम पालन को महत्त्व देने वाली और नम्र होती है। इसके अतिरिक्त वह अच्छी सन्तान से युक्ता, चंचल प्रकृति की और रूपवती होती है।

(८) **अष्टम भाव में बुध** –मृत्यु भाव में बुध हो तो नारी थोड़ी आयु वाली, सत्य बोलने वाली, दान करने वाली, और अल्प धनवती होती है। इसके अतिरिक्त वह एहसान न मानने वाली, धर्म से रहित, परिवार के लोगों के विरुद्ध और सदैव भयातुर रहती है।

(९) **नवम भाव में बुध**--जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में धर्म भाव में बुध गया हो तो वह स्त्री धर्म बन्धन युक्ता, विनयशील, भाग्य व कीर्ति से युक्ता कुशल, शान्ता और मधुर भाषिणी होती है। ऐसी स्त्री अपने पति को और व्रत उपवास आदि को विशेष महत्व देती है। बुध के पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर फल में विपरीतता आ जाती है।

(१०) **दशम भाव में बुध**--जिस नारी के कर्म भाव में बुध गया हो वह नारी धार्मिक विचारों वाली, अत्यन्त नम्र स्वभाव वाली, उत्तम भाग्य वाली, स्त्रियों में श्रेष्ठ, सत्य बोलने वाली, सुन्दरी और गुरुजनों की सेविका होती है। इसके अतिरिक्त वह पवित्र नदियों में स्नान करने वाली, पति मान्या, विवेकशीला और राजनीति समझने वाली होती है।

(११) **एकादश भाव में बुध**–जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में लाभ भाव में बुध स्थित हो वह कुछ-कुछ श्यामवर्णा, पुष्ट शरीर वाली, पतिव्रता, भाइयों के सुख से युक्त, सुलोचना, परिवार के सदस्यों को लाभ पहुँचाने वाली और धन के लेन-देन में चतुरा होती है।

(१२) **द्वादश भाव में बुध**--व्यय भाव में बुध हो तो रोगिणी, सदैव धन उपार्जन के लिए चिंतित रहने वाली, दान शीला, कुटिल हृदया, प्रभावरहिता और विवाद-प्रिया होती है।

गुरु का द्वादश भावफल

(१) **प्रथम भाव में गुरु**—जिस स्त्री के जन्म के समय लग्न में बृहस्पति हो तो वह अत्यन्त सुन्दर, सुबुद्धि वाली उत्तम आचरण वाली, पति को अत्यन्त प्रिय, रानी या रानी के समान प्रभावशाली, विधान सभा की सदस्या और धन-पुत्र और सुख से युक्त होती है।

(२) **द्वितीय भाव में गुरु**--जन्म के समय धन भाव में वृहस्पती गया हो तो स्त्री बहुत धन वाली, उत्तम पति वाली, उच्च कुलीना, प्रिय परिजनों से युक्ता, सुमति वाली, आदर, गुण, सुन्दर रूप और सब सुखों से संयुक्ता होती है।

(३) **तृतीय भाव में गुरु**–सहज भाव में गुरु गया हो तो वह नारी भाई-बहिनों से युक्त, कृपण, नीच बुद्धि वाली, अनुचित कार्य में धन खर्च करने वाली और पति प्रेम से रहित होती है।

(४) **चतुर्थ भाव में गुरु**--सुख भाव में बृहस्पति बैठा हो तो वह

स्त्री सब प्रकार के सुखों को भोगने वाली, वाहन सुख से युक्त, धनवान, लोक में मान्या, सुन्दर रूप वाली, उच्च पद पर पति को पहुँचाने वाली, सदा प्रसन्न रहने वाली और सब प्रकार के कार्यों में कुशल होती है।

(५) **पंचम भाव में गुरु**—सुत भाव में बृहस्पति गया हो तो स्त्री उत्तम बुद्धि वाली उत्तम पुत्रों से युक्त, प्रिय वचन बोलने वाली, उत्तम पति वाली, शास्त्र-पुराण के अर्थ को जानने वाली और राजकीय परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने वाली होती है।

(६) **छठे भाव में गुरु**—रिपु भाव में गुरु स्थित हो तो स्त्री रोग और शत्रु से रहित, सदैव सत्य बोलने वाली, सुकीर्ति वाली, घर के कार्य में कुछ आलस्य करने वाली होती है। यदि गुरु नीच राशि का या पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो स्त्री सदैव रोग से ग्रस्त रह सकती है।

(७) **सातवें भाव में गुरु**—सप्तम भाव में (पति भाव में) बलवान् गुरु हो तो स्त्री उत्तम पति वाली, विद्या और विनय-शीला शास्त्र को जानने वाली, विभिन्न विद्याओं में कुशल, यात्रा की शौकीन, सुबुद्धि वाली और विभिन्न प्रकार के सुखों से युक्त होती है।

(८) **अष्टम भाव में गुरु**—मृत्यु भाव में बृहस्पति बैठा हो तो वह स्त्री स्वभाव की चंचल, तीर्थों में घूमने वाली, धन और वस्त्र के अभाव से कष्ट सहने वाली तथा पति और पुत्र के सुख से वंचिता होती है।

(९) **नवम भाव में गुरु** धर्म भाव में बृहस्पति की उपस्थिति नारी को धर्म, धन, धान्य और सौभाग्य प्रदान करती है। जीवन में सब प्रकार के सुखों का वह भोग करती है। उसे उच्च अधिकारी पति मिलता है और वह उसे बहुत प्यार करता है।

(१०) **दशम भाव में गुरु**—अपनी कुण्डली में दशम भाव में गुरु

रखने वाली महिला वहुत धन, भूषरण, पति और पुत्रादि के सुख से युक्त होती है। वह राजनीति में सरलता से सफलता प्राप्त कर सकती है और गृह कार्य में भी इतनी ही निपुरण होती है।

(११) एकादश भाव में गुरु—लाभ भाव में स्त्री की कुण्डली में यदि गुरु गया हो तो वह स्त्री रानी या रानी के समान सम्पत्ति वाली, विधानसभा की सदस्या, धर्म बुद्धि वाली, सव प्रकार के सुखों से युक्त और अपने पति की प्यारी होती है।

(१२) द्वादश भाव में गुरु—व्यय भाव में बृहस्पति के रहने से वह स्त्री वहुत अधिक खर्च करने वाली, कुटिल हृदया, वुद्धि, मान और लज्जा से रहित, अत्यन्त चंचल स्वभाव की, पुरुष मित्रों वाली और सदैव घूमने की इच्छा रखने वाली होती है।

शुक्र का द्वादश भावफल

(१) लग्न में शुक्र—लग्न भाव में शुक्र गया हो तो स्त्री सुशीला, कुशल, सुन्दर गौर वर्णा, श्रीमती, उत्तम स्वभाव व स्वास्थ्य वाली, मधुर भाषिणी और सौभाग्यवती होती है। पुत्र सुख भी उत्तम प्राप्त होता है।

(२) द्वितीय स्थान में शुक्र—द्वितीय (धन) भाव में शुक्र वैठा हो तो नारी सव प्रकार के धन व आभूषण से युक्त, सुन्दरी, पण्डिता और सव कार्यों में कुशल होती है। वह निश्चय ही सत्कर्मी, भाग्य-वती, प्रख्यात और मृदुभाषिणी होती है।

(३) तृतीय स्थान में शुक्र—सहज भाव में शुक्र स्थित हो तो वह स्त्री दरिद्री, वन्धुओं से त्याज्य, पति से त्याज्य, दुष्ट स्वभाव वाली होती है। वह शरीर से दुवली लेकिन कामातुर होती है। उसे कृपणा, धन हीना और साधु जनों के अनिष्ट करने वाली समझना चाहिए।

(४) चतुर्थ स्थान में शुक्र—सुख भाव में शुक्र हो तो वह सब प्रकार के सुखों से युक्त, माता-पिता आदि गुरुजनों में भक्ति रखने वाली, सुशीला, सुभगा, सुन्दरी, दान करने वाली और पतिव्रता होती है। वह धर्म कार्यों में अत्यन्त निपुण, जितेन्द्रिया व अपने वंश की भूषण होती है।

(५) पंचम स्थान में शुक्र—सुत भाव में शुक्र हो तो वह स्त्री धन सम्पन्न, कन्या संतति अधिक, सत्संगी, कुल में श्रेष्ठ गिनी जाने वाली होती है। वह सुन्दर रूप वाली, पतिव्रता, सदैव प्रसन्न रहने वाली और हास्यमुखी होती है।

(६) छठे भाव में शुक्र—रिपु भाव में शुक्र गया हो तो स्त्री बहुत शत्रु वाली, पति प्रेम से वंचिता, कफ और वात रोगों से विशेष रूप से पीड़िता और शत्रुओं को जीतने वाली होती है। मतान्तर से ऐसी स्त्रो क्रोधो ईर्ष्यायुक्त, तीव्र स्वभाव वाली होती है और पति-पुत्रों से कलह करने वाली होती है।

(७) सप्तम भाव में शुक्र—जिस स्त्री के पति भाव में शुक्र गया हो वह अत्यन्त पतिप्रिया, शास्त्र-रता, धनवती, प्रभावशालिनी व सर्वमान्या होती है। ग्रन्थान्तर से ऐसी स्त्री अधिक काम वाली, सब कलाओं में कुशल, सुन्दरी, उत्तम पति वाली और स्वच्छ वस्त्रा-भूषणादि से युक्ता होती है।

(८) अष्टम भाव में शुक्र—जिस स्त्री के मृत्यु भाव में शुक्र बैठा हो वह सुन्दर नेत्र वाली, गर्विणी, धर्मवती, धन की चिंता करने वाली, सुशीला और अधिक जीने वाली होती है। वह दरिद्रा, दुःखी, परजनों से निन्दिता, उद्धत स्वभाव वाली भी होती है।

(९) नवम भाव में शुक्र—धर्म भाव में शुक्र गया हो तो वह नारी धन, वस्त्र और अन्न आदि से सम्पन्ना, धर्मपरायणा, लोगों की नेत्री, रानी के समान प्रभावशाली, साध्वी, पति की प्यारी, सब

प्रकार के सुखों को प्राप्त करने वाली और सन्तान से विशेष प्रेम रखने वाली होती है।

(१०) **दशम भाव में शुक्र**—कर्म भाव में शुक्र गया हो तो नारी श्रेष्ठ कर्मों से मान्या, धन-सम्पन्ना, बुद्धिमती, रोग रहिता, विधान-सभा और लोक सभा की सदस्या, सत्यभाषिणी और बहुत यश प्राप्त करने वाली होती है।

(११) **एकादश भाव में शुक्र**—लाभ में शुक्र गया हो तो उस नारी को अनेक शास्त्रों की पंड़िता, लाभवती, निर्दोषा, अनेक प्रकार से लोगों का पालन करने वाली, नृत्य कलाओं को जानने वाली, सुन्दर हास्यवाली और अत्यन्त सुन्दरी समझना चाहिए।

(१२) **द्वादश भाव में शुक्र**—जिस स्त्री के व्यय भाव में अर्थात् द्वादश भाव में शुक्र हो तो वह बहुत खर्च करने वाली, अपनी बाल्यावस्था में रोगिणी, दुबली, मलिन और कपटी स्वभाव वाली होती है। सुबुद्धि का प्रायः अभाव होता है।

शनि का द्वादश भावफल

(१) **प्रथम भाव में शनि**—जिस स्त्री के जन्मकाल में शनि लग्न में गया हो वह स्त्री निश्चय ही कुरूप व काले शरीर वाली, क्रोधी, भाई-बहनों के सुख से रहित, और रोगिणी होती है। वह दरिद्रा, कुशीला, व पति को परेशान करने वाली भी होती है। यदि शनि अपने गृह का, उच्च का हो या बृहस्पति की दृष्टि हो तो फलों में कुछ सौम्यता आ जाती है।

(२) **द्वितीय भाव में शनि**—स्त्री की कुण्डली में धन भाव में शनि गया हो तो वह दरिद्री, अपयशी, सुख रहित, रोगी, घातकी और लोगों के विरुद्ध बोलने वाली होती है। ग्रन्थांतर से वह अपनी प्रथम अवस्था में निर्धन और दुखी होती है लेकिन बाद में अपने उद्योग से धन और सुख प्राप्त करने में सफल होती है।

(३) **तृतीय भाव में शनि**—सहज भाव में शनि वैठा हो तो स्त्री छोटे भाई-बहिनों से रहित, बुद्धि और बल में अद्वितीया, स्वयं के परिश्रम से उपार्जित धन से परिवार का पालन करने वाली होती है। मतान्तर से वह स्त्री श्रेष्ठ, दक्ष, धन धान्य सम्पन्न, साधु-संतों से प्रशंसित और शरणागत लोगों का रक्षण करने वाली होती है।

(४) **चतुर्थ भाव में शनि**—स्त्री की जन्मकुण्डली में सुख भाव में शनि गया हो तो वह स्त्री मतिमन्द, चंचल, दरिद्री, नीच संगति करने वाली और दुष्ट स्वभाव की होती है। वह वात और पित्त रोग वाली, मलिन हृदया, वहुत आलसी, कुशीला और वहुत कलह-कारिणी भी होती है।

(५) **पंचम भाव में शनि**—पुत्र-स्थान में शनि विराजमान हो तो स्त्री संतान-सुख से रहिता, वहुत कन्याओं वाली, कुवुद्धि वाली, धन हीना और सदैव बीमार रहने वाली होती है। वह निर्दयी, पुत्रहीना, गर्विष्ठ, साधु-समागम से रहित और वेश्या समान दीखने वाली भी हो सकती है।

(६) **छठे भाव में शनि**—रिपु-भाव में शनि गया हो तो नारी वस्त्र और अंलकारों का सुख प्राप्त करने वाली, मन्दमति, पुत्रवती, गुणों को पहचानने वाली और पुत्रों की प्रिय होती है। मतान्तर से वह स्त्री शत्रु और रोग से रहिता, पुष्ठ शरीर वाली, सदैव प्रसन्न रहने वाली, धन प्रतिष्ठा और गुणों से युक्त तथा गुरूजनों की आज्ञा मानने वाली होती है।

(७) **सप्तम भाव में शनि**—स्त्री की कुण्डली में पतिभाव में शनि स्थित हो तो वह तलाकशुदा या विधवा, रोगी, कपटी, द्वेषी और शराव पीने की शौकीन होती है। वह सदैव निन्दित कार्य करने वाली होती है। पति का पूरा प्यार और सुख कभी नहीं मिलता।

(८) **अष्टम भाव में शनि**—मृत्यु भाव में शनि गया हो तो स्त्री आंखों में रोग वाली, पति और सन्तान-सुख से हीन, दुवली, संतुष्ट

न होने वाली और बहुत क्रोधी स्वभाव की होती है। वह अधर्मी, पापिनी और लोगों को धोखा देने वाली भी हो सकती है।

(९) **नवम भाव में शनि**—धर्म भाव में शनि स्थित हो तो नारी धर्महीना, गुरूजनों का अनादर करने वाली, कुत्सित पति वाली, निर्धना, घमण्डी और कपट वाली होती है। वह बहुत अधिक खर्च करने वाली, नम्रता से पूर्णतया रहित, बदमाशों के साथ रहने वाली व मूर्ख भी हो सकती है।

(१०) **दशम भाव में शनि**—कर्म भाव में शनि गया हो तो स्त्री रानी के समान प्रभावशाली और धनी, सन्तान सुख को प्राप्त करने वाली, शत्रु और रोग से रहित, सब कामों में अत्यन्त निपुण, और अल्प पितृ सुख प्राप्त करने वाली होती है। मतान्तर से वह कुकर्मी, बुरे व्यसन से युक्त दुष्ट लोगों की संगति करने वाली और दरिद्री होती है। ऐसे फल तभी मिलते हैं जब शनि नीच राशि में या शत्रु-राशि में गया हो।

(११) **एकादश भाव में शनि**—लाभ भाव में शनि गया हो तो स्त्री धनवती, पुत्रवती, निर्भया, सुन्दर शरीर वाली और हर कार्य में लाभ प्राप्त करने वाली होती है। वह सदा पतिव्रता, सदाचरण वाली सौभाग्यवती, पतिव्रता, अनेक प्रकार के आभूषण, वस्त्र, सवारी, धन धान्य आदि सुख से युक्त होती है।

(१२) **द्वादश भाव में शनि**— व्यय भाव में शनि बैठा हो तो स्त्री निर्दया, अत्यन्त आलसी स्वभाव की, नीच जनों की संगति करने वाली, धन हीना, अनुचित खर्च करने वाली, रोगिणी और कलह-कारिणी होती है। वह विचारहीना, रक्त-वात-कफ दोषी, व्यसनी, तिरस्कृत और विचित्र स्वभाव वाली भी होती है।

राहु का द्वादश भावफल

(१) लग्न में राहु—जिस नारी के जन्मकाल में राहु लग्न भाव में स्थित हो वह स्त्री बुरी देह वाली, शील रहित, अधिक रोग सहित मानहीना और अत्यन्त क्रोधी स्वभाव की होती है। वह पापिनी, लाल नेत्रवाली, चंचल स्वभाव वाली, दुर्बुद्धि और गुरूजनों का अनादर करने वाली होती है।

(२) धन भाव में राहु—जिस स्त्री की कुण्डली में द्वितीय भाव में राहु स्थित हो वह चोरी करने वाली, दूसरे के घर में रहने वाली, थोड़े धन वाली, घूमने वाली, सदैव संभोग के लिए लालयित, और वृथा बहुत बोलने वाली होती है। वह विधवा, दरिद्र और पाप कर्म करने वाली भी हो सकती है।

(३) सहज भाव में राहु- यदि तीसरे भाव में राहु स्थित हो तो नारी भाइयों से हीन, बहन के सुखों से रहित, प्रभावशाली, पुष्ठ देह वाली और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाली होती है। वह उत्तम पति वाली और उत्तम सन्तान वाली होती है।

(४) सुख भाव में राहु—चतुर्थ भाव में राहु बैठा हो तो स्त्री नीच पुरूषों का संग करने वाली, विदेशी धर्मों से प्रभावित, भाइयों के सुख से रहित, चुगली करने वाली, दुष्टा, एक संतान वाली और अधम पति की पत्नी होती है। वह प्रायः अस्वस्थ रहती है और उसे माता का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता।

(५) सुत भाव में राहु—यदि राहु स्त्री की कुण्डली में पंचम, भाव (पुत्र भाव) में गया हो तो वह स्त्री काम-तृप्ति चाहने वाली, ऐश्वर्यहीन, मोटे दांतों वाली; वेश्या के समान आचरण करने वाली, परिवार के लोगों से तिरस्कृत और दुःखी होती है। यदि पंचम भाव में राहु चन्द्रमा के साथ हो तो पुत्रहीना, कपटी मित्रों वाली और

कुबुद्धिवाली होती है। यदि राहु चन्द्रमा से युत, दृष्ट न हो तो एक पुत्रवाली होती है।

(६) रिपु भाव में राहु—षष्ठ भाव में राहु हो तो शत्रु और रोग से रहिता, धन, कीर्ति और उत्तम बुद्धि वाली और सब कार्यों में कुशल होती है। वह अत्यन्त मधुर वचन बोलने वाली, दयालु, शत्रुओं को जीतने वाली और पति को प्रिय होती है।

(७) पति भाव में राहु—जिस नारी के जन्म काल में राहु सप्तम स्थित हो वह स्त्री पतिहीन, कुरूपा और दुष्ट स्वभाव की होती है। अपने बन्धुओं और सुसराल वालों से तिरस्कृत, कृपण, कृतघ्न और विधवा होती है। वह अधम पति वाली और दुश्चरित्रा भी होती देखी गयी है। पति से कभी सुख नहीं मिलता।

(८) मृत्यु भाव में राहु—अष्टम भाव में राहु हो तो स्त्री रोगिणी, पापाचरण वाली, दुबली, धनवती और चोरी करने वाली होती है। वह विधवा और व्यभिचार में रत भी हो सकती है।

(९) धर्म भाव में राहु—नवम भाव में राहु स्थित हो तो नारी धर्मरहित, ईसाई और मुस्लिम धर्म में विशेष रूचि लेने वाली मांस खाने वाली, शराब पीने की शौकीन और व्यर्थ ही इधर-उधर घूमने वाली होती है। वह शत्रुओं और रोगों से भी सदैव पीड़ित रहती है।

(१०) कर्मभाव में राहु—दशम भाव में राहु गया हो तो स्त्री अधिक कामवासना वाली, दूसरे के धन को ठगने वाली, चंचला दुराचारिणी, ढीठ और सुख से रहित होती है। वह क्रोधी स्वभाव की, माता-पिता का अल्प सुख प्राप्त करने वाली, पति द्वारा तिरस्कृत और शत्रुओं का नाश करने वाली होती है।

(११) लाभ भाव में राहु—एकादश भाव में राहु स्थित हो तो स्त्री अत्यन्त सुन्दरी, नम्र वचन बोलने वाली, पति को प्रिय, अत्यन्त धनी, वाहन सुख प्राप्त करने वाली, प्रसन्नचित्त, नौकरों से सेवा

प्राप्त करने वाली और उत्तम पुत्रों को जन्म देने वाली होती है। वह सदैव सत्य बोलने वाली और सब कार्यों में कुशल होती है।

(१२) **व्यय भाव में राहु**—बारहवें भाव में राहु हो तो स्त्री धन और धर्म से हीन, दूसरों की बातों पर चलने वाली, बहुत खर्च करने वाली और पति सुख से रहित होती है। वह बुरे कामों में खास तौर से खर्च करने वाली, दुःख भोगने वाली, पारिवारिक सदस्यों द्वारा तिरस्कृत, आंखों की बीमारी से युक्त और पुत्रों से रहित होती है।

केतु का द्वादश भावफल

(१) **लग्न में केतु** हो तो स्त्री सदैव रोगी रहने वाली, क्रोधी स्वभाव की, कुछ असुन्दर और पति को अति कष्ट देने वाली होती है। यदि उस पर शुभग्रह की दृष्टि या योग हो तो पति, पुत्रादि के सुख से युक्त भी हो सकती है।

(२) **धन भाव** – में केतु के होने पर स्त्री निर्धन लेकिन परिवार के लोगों से विरोध करने वाली होती है। उसकी आंखों में रोग हो सकता है। वह क्रोधी स्वभाव की और जन्म स्थान से दूर रहने वाली होती है। शुभ ग्रह की दृष्टि से फल में सौम्यता आ सकती है।

(३) **सहज भाव में केतु**—हो तो स्त्री धनवती, बहुत साहस वाली, शत्रुओं को जीतने वाली, सुख और उत्तम संतान से युक्त, छोटे भाई के सुख से रहित होती है।

(४) **सुख भाव** में केतु गया हो तो उस स्त्री को माता का सुख नहीं होता। माता सदैव बीमार रहती है या बाल्यावस्था में ही मर जाती है। यौवनावस्था में उसे भी कष्ट उठाना पड़ता है और पिता का धन नष्ट होता है। वाहन सुख मुश्किल से मिलता है।

(५) **सुत भाव** में केतु बैठा हो तो नारी थोड़े पुत्रों वाली, सहोदर भाई-बहिनों को कष्ट देने वाली, झगड़ालू स्वभाव की,

विद्याध्ययन में अड़चनें प्राप्त करने वाली, कुबुद्धि से युक्त लेकिन घर के कार्यों में कुशल होती है।

(६) **रिपु भाव** में केतु गया हो तो उस स्त्री को शत्रु और रोग का स्वप्न में भी भय नहीं होता। वह कृषि भूमि की मालकिन गाय-भैंस रखने वाली, धनवान लेकिन तुच्छ हृदय वाली होती है।

(७) **पति भाव** में केतु स्थित हो तो उस स्त्री को सदैव यात्रा करने की इच्छा रहती है। शत्रु और रोग का भय रहता है। वह पति को सामान्यतया कष्ट देने वाली, सदैव परेशान और व्यवसाय में नुकसान उठाने वाली होती है।

(८) **मृत्यु भाव** में केतु हो तो उस स्त्री को गुप्तेन्द्रिय में रोग भय, पति को कष्ट लेकिन धन और वाहन का लाभ होता है।

(९) **धर्म भाव** में केतु हो तो स्त्री उत्तम पुत्रों वाली, रोग और शत्रुओं से हीन, नीच जातियों से धन लाभ करने वाली और तपस्या और दान करने में सदैव तत्पर रहती है।

(१०) **कर्म भाव** में केतु हो तो स्त्री जीवन भर कष्ट में रहने वाली, पिता के सुख से हीन और व्यवसाय में परेशानी का अनुभव करती है। यदि केतु कन्या राशि में स्थित हो तो वह धन-धान्य का पर्याप्त सुख प्राप्त कर सकती है।

(११) **लाभ भाव** में केतु गया हो तो नारी सब कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाली, सौभाग्यवती, प्रिय वचन बोलने वाली, सुन्दरी, ज्ञानवती और सब कार्यों में कुशल होती है।

(१२) **व्यय-भाव** में केतु गया हो तो स्त्री पैरों और आँखों में रोग वाली, अनावश्यक खर्च करने वाली, अशुभ कार्यों में धन गँवाने वाली, पति को कष्ट देने वाली लेकिन अपने शत्रुओं को जीतने वाली होती हैं।

: ९ :

प्रकीर्ण अध्याय

द्वादश लग्नों में मारक विचार, दशाफल के अनुभूत नियम, प्रथम रजोदर्शन में शुभ समय, प्रथम, रजोदर्शन में निषिद्ध काल, निषेक का शुभ समय, गर्भाधान का मूहर्त्त, प्रसव दिन की सही जानकारी, स्त्रियों का प्रिय रत्न-पुखराज।

द्वादश राशियों का विस्तृत विवेचन

मेष राशि—मेष राशि में जन्म लेने वाली स्त्री का स्वभाव कुछ क्रोधी होता है। उसका रंग गेंहुआ होता है। वह बाल्यावस्था में ही अपने माता-पिता से बिछुड़ जाती है अर्थात् उनका पूरा सुख प्राप्त नहीं करती। वह वात पित्त रोगों से पीड़ित रहने वाली और स्वभाव से कृपणा होती है। जीवन में विदेश-यात्रा करने का अवसर प्राप्त होता है। पति राजकीय अधिकारी या नेता होता है। संतान कई होती हैं लेकिन वास्ताविक सुख केवल तीन से मिलता है। जीवन में मुख्यतया तीन बार भय है। पहले तीसरे साल में अग्नि का, ७वें वर्ष में कुत्ते के काटने का और ३० वें साल में चोट लगने का। उक्त खतरों से बचने के बाद ६८ वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने की संभावना रहती है। इसकी मृत्यु पित्त दोष से या गिरने से अथवा विष खाने से भी हो सकती है।

वृष राशि—वृष राशि वाली स्त्री का रंग और आकृति सुन्दर होती है। इसे अच्छा पति प्राप्त होता है लेकिन परस्पर बहुत प्रेम नहीं रहता। यह स्थूल ओठ और स्थूल नाक वाली, कफ प्रकृति, धनवती और बहुत खर्च करने वाली होती है। यह दूसरे धर्मों का

बहुत आदर करती है और उन्हें मानती है। यह सब प्रकार के कार्य करने में कुशल होती है लेकिन अपने परिवार वालों की कोई चिंता नहीं करती है। संतान थोड़ी होती है। अपने समान स्त्री से सदा वैर-भाव रखती है। इसके नेत्र, पांव और गर्दन में पीड़ा रहती है। कार्तिक का महीना इसके लिए विशेष शुभ है। अपने सभी महत्वपूर्ण कार्य इसी अवधि में करने चाहिए। जीवन में तीन बार विशेष खतरा उठाना पड़ता है। सांतवें साल में जल में डूबने का, दसवें वर्ष में अग्नि से जलने का तथा सोलहवें वर्ष में वात-कफ रोग से पीड़ित होने का। इनसे बचने के बाद ७८ साल की आयु हो सकती है। मतान्तर से इसकी मृत्यु भूख से या परिश्रम से या जल से अथवा शूल रोग से हो सकती है।

मिथुन राशि—मिथुन राशि में जन्म लेने वाली स्त्री कफ वात और पित्त प्रकृति वाली, अल्प बुद्धि वाली और छोटे लेकिन पुष्ट शरीर वाली गौर वर्ण होती है। यह अपने धर्म में विशेष श्रद्धा रखती है और सदैव प्रिय वचन बोलती है। इसका स्वास्थ्य साधारण ही रहता है। इसके स्वयं के दोष से कई बार धन हानि होती है। पहले और सातवें साल में जल में डूबने का तथा २४वें साल में बीमारी का खतरा रहता है। इसकी आयु ७९ वर्ष की हो सकती है। बहुत रोगों से बचकर अन्त में त्रिदोष या जल से अथवा विष से इसकी मृत्यु होती है।

कर्क राशि—कर्क राशि में जन्म लेने वाली स्त्री अधिक कफ और वात वाली और गुप्त रोगिणी होती है। इसे अपने परिवार वालों से आदर और स्नेह नहीं मिलता। इसे सुयोग्य पति नहीं मिलता अथवा पति अनमेल होता है। संतान बहुत होती है। शत्रुओं पर यह सरलता से विजय प्राप्त कर सकती है। इसका स्वभाव अस्थिर होता है। यह सदैव दूसरों के धन को खर्च करने की इच्छा रखती है। इसके कमर में प्रायः दर्द रहता है। हृदय और नाक पर

तिल होता है। ३ पुत्र और २ कन्यायें इसे विशेष सुख देते हैं। इसे अपने तीसरे साल अग्नि का, ग्यारहवें साल जल का और अठारहवें वर्ष में बीमारी का भय रहता है। इसकी आयु ७० वर्ष तक हो सकती है। इसकी मृत्यु कफ या जलोदर रोग से या फांसी से भी हो सकती है।

सिंह राशि—सिंह राशि में जन्म लेने वाली स्त्री मोटी, चपटी नाक वाली, मांस खाने वाली, शक्ति सम्पन्ना और थोड़ी सन्तति वाली होती है। उसकी पित्त प्रकृति होती है और देश-विदेश में भ्रमण की बहुत शौकीन होती है। अपने बाहुबल से भी यह पर्याप्त धन पैदा कर सकती है। पति से प्राय: अनबन रहती है। मुंह पर तिल होता है। मतान्तर से इस राशि वाली स्त्री के कई पुत्र और तीन कन्यायें होती हैं। सातवें और ग्यारहवें साल में यह अस्वस्थ होती है। आयु ७० वर्ष की हो सकती है। इसकी मृत्यु पित्त रोग से, आपरेशन से अथवा विष से होती है।

कन्या राशि—कन्या राशि वाली स्त्री गौर वर्ण की, प्रिय वचन बोलने वाली और पुष्ट शरीर की होती है। यह सदैव अपने शरीर को स्वच्छ रखती है और उपयुक्त वेश-भूषा धारण करती है। यह सौभाग्यवती, अधिक कन्या-संतति वाली, घर के विविध कार्यों में कुशल, धर्मवती और परिजनों की प्यारी होती है। इसके पेट में प्राय: दर्द रहता है। पांच पुत्रों का उत्तम सुख इसे प्राप्त होता है। आठवें वर्ष इसे ऊपर से गिरने का भय है और तीसवें वर्ष लम्बी बीमारी का। उससे बचने पर ७० वर्ष की आयु हो सकती है। प्राय: आपरेशन से, पित्त रोग से या शोक संताप से मृत्यु होने की संभावना रहती है।

तुला राशि—तुला राशि में जन्म लेने वाली स्त्री छोटी गर्दन वाली, अतिशय चंचल स्वभाव की, माता-पिता आदि गुरुजनों की भक्त उपकार मानने वाली, धर्म शीला, घूमने वाली और पर्याप्त

धनवती होती है। वचपन से ही यह प्रिय वचन वोलने में कुशल होती है। उसके मस्तक पर प्रायः तिल होता है। शरीर में कभी-कभी दर्द रहा करता है। इसके लिए शनिवार सब तरह से शुभ और उत्तम है। इसके मित्र कम और शत्रु अधिक होते हैं। प्रकृति पित्त की होती है। सात संतानों के होने की संभावना रहती है। दूसरे वर्ष में अग्नि का और आठवें साल में जल का भय रहता है। इससे बचने पर ८० साल की आयु हो सकती है। इसकी मृत्यु प्रायः इष्ट-जन के वियोग से या उपवास से अथवा कफ-वात रोगों से होती है।

वृश्चिक राशि—वृश्चिक राशि में जन्म लेने वाली स्त्री लम्बे मुख और पेट वाली, पित्त प्रकृति की, पिंगल नेत्रों वाली और अतिशय खर्च करने वाली होती है। यह कुटिल स्वभाव की और धर्म को आडम्बर मानने वाली होती है। यही कारण है कि यह अपने पति को विशेष महत्व नहीं देती। प्रायः इसके दाँत और पेट में दर्द रहता है। गुरुवार इसको सब कामों के लिए सर्वोत्तम है। इसकी पीठ पर तिल होता है। गौर वर्ण की स्त्री से सदैव शत्रुता रखती है। इसके चार पुत्र और दो कन्यायें होने की संभावना रहती है। अपने जीवन में तीन बार इसे विशेष खतरा है। चौथे और तेरहवें वर्ष में बीमारी का और तीसवें साल में ऊपर से गिरने का। फिर इसकी आयु ६० वर्ष तक की हो सकती है। प्रायः अपने पापजनित रोग से, दुर्घटना से अथवा आपरेशन के बिगड़ने से इसकी मृत्यु होती है।

धनु राशि—धनु राशि में जन्म लेने वाली स्त्री स्थूल ओठ, स्थूल दांत और स्थूल नाक वाली, कफ वात प्रकृति, पुष्ट बाहु और जांघ वाली और ज्ञानवती होती है। यह कार्य करने में अत्यन्त कुशल लेकिन पति की विरोधिनी भी होती है। इसके पेट में प्रायः दर्द की शिकायत रहती है। यह औरतों के साथ सदैव शत्रुता रखती है। इसके लिए बुधवार और चैत्र का महीना सब कार्यों के लिए शुभ और उत्तम है। उसके अधिक सन्तान हो सकती है जिसमें ५ से

विशेष सुख मिलेता है। जीवन में एक बार ऊपर से गिरने की संभावना रहती है। दूसरे वर्ष आग का और १०वें वर्ष चोट का खतरा रहता है। इससे बचने पर ६० वर्ष की आयु हो सकती है। अन्त में सर्प से या मुख रोग से अथवा कफ रोग से मृत्यु होती है।

मकर राशि—मकर राशि में जन्म लेने वाली स्त्री दीर्घमुखी, छोटी नाक और वात प्रकृति वाली, भयभीत, कृपरणा और अल्प धन वाली होती है। इसके नेत्र हरिणी के समान होते हैं और स्वभाव अतिशय चंचल होता है। इसे सुयोग्य पति नहीं मिलता। इसके मुख और हृदय पर प्रायः तिल का चिन्ह होता हैं। पेट में दर्द की शिकायत जीवन भर रहती है। गुरुवार इसके लिए शुभ है। सन्तान बहुत हो सकती हैं लेकिन सुख केवल पांच से ही मिलता है। जीवन में कम से कम तीन बार खतरा आता है। सातवें साल में ऊपर से गिरने का, सोलहवें साल में हाथ के दर्द का, बीसवें साल में घाव का। इनसे बचने पर ६० वर्ष की आयु हो सकती है। इसकी मृत्यु प्रायः वात रोग से, अजीर्ण से या गिरने से होती है।

कुम्भ राशि—कुम्भ राशि में जन्म लेने वाली स्त्री क्रूर स्वभाव वाली, अपने कुल में श्रेष्ठ, वात-पित्त-प्रकृति वाली और सुन्दर नासिका वाली होती है। यह बहुत खर्च करती है और घर सेवकों से भरा रहता है। यह क्रोधी, लेकिन, पतिव्रता होती है। बालकों से इसका विशेष प्रेम रहता है। वायु विकार के कारण शरीर में दर्द रहने की शिकायत रहती है। शत्रु निश्चय ही अधिक होते हैं। बहुत सी संतानों में केवल ५ का सुख मिलता है। इसे ६वें वर्ष मकान से गिरने का और ३०वें वर्ष बीमारी का भय रहता है। इससे बचने पर आयु ८५ वर्ष की हो सकती है। प्रायः वमन, कफ अथवा उदर रोग से इस की मृत्यु होती है।

मीन राशि – में जन्म लेने वाली मीनाक्षी, स्थूल नाक वाली, कफ वात प्रकृति वाली, दाद-खुजली आदि चर्म रोगों से युक्त लेकिन

उत्तम पति वाली होती है। सुशीलता इसका विशेष गुण होता है। धर्म में श्रद्धा रखती है और धन का उत्तम सुख प्राप्त करती है। मंगलवार इसको सभी कार्यों के लिए विशेष शुभ है। स्वप्न वहुत देखती है। वहुत सी संतानों से केवल पांच का सुख मिलता है। जीवन में दो वार भय आता है। ११वें साल में जल का और ४२वें वर्ष में बीमारी का। इससे वचने पर ७० वर्ष की आयु हो सकती है। इसकी मृत्यु प्राय: शोणित विकार या चलने से या विष से अथवा विपरीत औषध से होती है।

द्वादश लग्नों में शुभाशुभ ग्रह

(१) **मेष लग्न** में वृहस्पति सर्वाधिक शुभ ग्रह है। सूर्य और मंगल भी शुभ फल देते हैं। शनि, बुध और शुक्र अशुभ कहे गए हैं। तीसरे और छठे घर का स्वामी होने के कारण बुध सर्वाधिक अशुभ ग्रह है।

(२) **नवें और दसवें** घर का स्वामी होने के कारण शनि वृष लग्न में सर्वाधिक शुभ ग्रह है। बुध, मंगल और सूर्य भी शुभ है। वृहस्पति, शुक्र और चंद्रमा को अशुभ कहा गया है। लेकिन शुक्र को सम ही समझना चाहिए।

(३) **मिथुन लग्न** में शुक्र सर्वाधिक शुभग्रह हैं। चन्द्रमा और बुध सम हैं एवं मगल सर्वाधिक अशुभ ग्रह है। बृहस्पति और सूर्य भी अशुभ फल देते हैं। चंद्रमा और बुध को सम समझना चाहिए।

(४) **कर्क लग्न** में बृहस्पति और मंगल शुभ हैं। शुक्र और बुध अशुभ फल देने वाले और शनि, चन्द्रमा और सूर्य सम फल प्रदान करते हैं।

(५) **सिह लग्न** में मंगल और सूर्य शुभ फल देते हैं। बुध, शुक्र अशुभ है। बृहस्पति, चंद्रमा और शनि सम हैं।

(६) **कन्या लग्न** के लिए केवल शुक्र अकेला सर्वाधिक शुभ है। चंद्र, मंगल और बृहस्पति अशुभ फल देते हैं। सूर्य, शनि और बुध को सम माना गया है।

(७) **तुला लग्न** में शनि सर्वाधिक शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध और शुक्र भी शुभ फल देते हैं। सूर्य, बृहस्पति और चंद्रमा अशुभ हैं। मंगल सामान्य शुभ फल ही देता है।

(८) **वृश्चिक लग्न** में चंद्रमा सर्वाधिक शुभ है। बृहस्पति और सूर्य भी शुभ फल देते हैं। शुक्र और बुध अशुभ कहे गए हैं। मंगल और शनि सम फल प्रदान करते हैं।

(६) **धनु लग्न** में मंगल और सूर्य शुभ है। शुक्र, शनि और बुध अशुभ फल देते हैं। बृहस्पति और चंद्रमा सम कहे गए हैं।

(१०) **मकर लग्न** में शुक्र सर्वाधिक शुभ ग्रह है। बुध और शनि भी शुभ फल देते हैं। मंगल, बृहस्पति और चंद्रमा अशुभ -फलदायी हैं। सूर्य सम है।

(११) **कुम्भ लग्न** में शुक्र सर्वाधिक शुभ है। सूर्य, शनि और मंगल भी शुभ फल देते हैं। बृहस्पति और चंद्रमा अशुभ फलदायी और बुध सम है।

(१२) **मीन लग्न** में. चंद्रमा और मंगल शुभ है। शनि, सूर्य, शुक्र और बुध को अशुभ समझना चाहिए। बृहस्पति इस लग्न में सम फल देने वाला ग्रह कहा गया है।

विशेष—शुभाशुभ ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में ही उनसे सम्बन्धित फलों की प्राप्ति होती है।

द्वादश लग्नों में मारक विचार

लग्न	मारक	लग्न	मारक
मेष	बुध, शनि	वृषभ	बृहस्पति, मंगल
मिथुन	मंगल, बृहस्पति	कर्क	शुक्र, बुध

सिंह	बुध, शुक्र	कन्या	मंगल, बृहस्पति
तुला	बृहस्पति	वृश्चिक	बुध, शुक्र और शनि
धनु	शुक्र, शनि	मकर	मंगल, बृहस्पति
कुम्भ	मंगल	मीन	बुध, शनि और शुक्र

दशाफल के अनुभूत नियम

(१) शनि में चंद्रमा तथा चंद्रमा में शनि दशाकाल आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त शोचनीय व्यतीत होता है।

(२) **बृहस्पति** की महादशा में शनि की अन्तर्दशा तथा शनि में बृहस्पति अशुभ व्यतीत होता है। पति से मनमुटाव रहता है।

(३) **मंगल** में शनि तथा शनि में मंगल दशाकाल रोग उत्पन्न करता है। प्रायः मासिक-धर्म सम्बन्धी रोग होते हैं।

(४) **शनि** में सूर्य तथा सूर्य में शनि अवश्य खराब व्यतीत होता है। परिवार में कलह रहती है और किसी वरिष्ठ सदस्य की मृत्यु होती है।

(५) **पाप ग्रह** की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा अशुभ फल देने वाली होती है। इस काल में धन हानि, शत्रु पीड़ा, भय और रोग होता है।

(६) **लग्नेश की दशा में** स्त्रियों को लोक में सम्मान, सुख, आरोग्य, यौन सुख, संतान और धन का लाभ होता है।

(७) **धन भावेश की दशा** में धन का लाभ, परिजनों में वैमनस्य और शरीर में रोग भय होता हैं।

(८) **तृतीयेश की दशा** में सहोदरों को शत्रु और रोग भय, अपने धन-मान की हानि और पति का देशान्तर गमन होता है।

(९) **चतुर्थेश** की दशा में स्त्री को घर में बन्धुओं का सुख, लाभ और हानि तथा मान और अपमान आदि बराबर रहता है।

(१०) **पंचमेश की दशा** में गुणों की वृद्धि, उत्तम बुद्धि, पति और पुत्रों को सुख तथा अनेक प्रकार के धन धान्य का लाभ होता है।

(११) **षष्ठेश की दशा में** रोग भय तथा धन, मान और सुख की हानि होती है ।

(१२) **सप्तमेश की दशा** में पति-वियोगादिजन्य कष्ट अथवा अपने शरीर में कष्ट और लोक में अपमान होता है।

(१३) **अष्टमेश की दशा** में शुभ फल नहीं होता है। धन, मान और कीर्ति की हानि तथा पति सुख भी अल्प होता है।

(१४) **नवमेश की दशा** में धर्म की वृद्धि, घर में मांगलिक कार्य, पति पुत्र आदि से सुख भूषण, वस्त्र और धन का लाभ होता है।

(१५) **दशमेश की दशा** में कार्य करने में उत्साह, परीक्षा में सफलता, मान-अपमानादि में समानता और माता-पिता से सुख होता है।

(१६) **एकादशेश की दशा** में यद्यपि सामान्य धन प्राप्ति होती है लेकिन अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति नहीं होती तथा लोक में वंचना, अपमान और अपने परिजनों में विरोध होता है।

(१७) **द्वादशेश की दशा** में स्त्रियों को अधिक खर्च, रोग का भय परिवार में कष्ट और सब कार्यों में हानि होती है।

(१८) जिस ग्रह की महादशा हो उससे ६।८ अथवा १२वें स्थान में गये ग्रह की अंतर्दशा प्रायः अशुभ जाती है। धन हानि और स्थान परिवर्तन होता है।

(१९) पाप ग्रह की महादशा में शुभ फलदायक ग्रह की अन्तर्दशा प्रारम्भ में अशुभ और अंत में उत्तम फल देती है।

(२०) शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा अवश्य ही उत्तम व्यतीत होती है। पति-पुत्रों और धन का सुखमिलता है।

(२१) शुभग्रहों की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा प्रारम्भ में शुभ फल देती है लेकिन उतरते हुए अशुभ फल प्रदान करती है।

(२२) **पापग्रह** की महादशा अपने शत्रु ग्रह से युक्त पापग्रह की अन्तदशा में निश्चय ही विपत्ति लाती है।

(२३) दशा प्रवेश समय का चन्द्रमा जिस राशि में गया हो, वह

राशि जन्मकुण्डली में जिस भाव में गई हो उस भाव जनित जो शुभाशुभ फल है, वह फल दशाकाल में होता है ।

(२४) शनि क्षेत्र में चन्द्रमा हो तो उसकी महादशा में सप्तमेश की अन्तर्दशा परम कष्टदायक होती है ।

(२५) शुक्र की महादशा में राहु की अन्नर्दशा के समय एक कीमती जायदाद बनती है जिसमें काला सामान (लोहा आदि) विशेष रूप से लगाया जाता है ।

(२६) शुक्र की महादशा में शुभ बृहस्पति की अन्तर्दशा शुभ है । बहुलाभ, धन और समृद्धि की प्राप्ति होती है । धर्म की ओर रूचि बढ़ती है और पुत्र प्राप्ति और पुत्र-प्रेम बढ़ता है ।

(२७) बृहस्पति की महादशा में शुभ बुध की अन्तर्दशा में चतुराई कार्यों में सफलता, धन से बंधु-सहेली समागम और परिवार के वृद्ध जनों में भक्ति बढ़ती है ।

(२८) बृहस्पति में सूर्य (शुभ) अच्छी तन्दुरुस्ती देता है, धन लाभ कराता है और दुश्मन का पतन करता है ।

प्रथम रजोदर्शन में शुभ समय

आद्यं रजः शुभं माघ-मार्ग-राधेश-फाल्गुने ।
ज्येष्ठ-श्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनो दिवा ॥१॥

अर्थात् माघ, अग्रहण, वैशाख, आश्विन, फाल्गुन, ज्येष्ठ और श्रावण, इन सात मासों में शुक्ल पक्ष में शुभ (बुध, गुरू, शुक्र और सोम) वारों में, शुभ लग्न में और दिन में स्त्रियों का प्रथम रजोदर्शन (पहले पहले मासिक धर्म) होना शुभ होता है ।

प्रथम रजोदर्शन में उत्तम-मध्याधम नक्षत्र—

श्रुतित्रयमृदु क्षिप्र ध्रुवस्वातौ सिताम्बरे ।
मध्यं च मूलादितिये पितृमिश्रे परेष्वसत् ॥ २ ॥

भाषार्थ—श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक और स्वाति इन नक्षत्रों में तथा साफ उजले वस्त्र पर प्रथम रजोदर्शन होना शुभ है। मूल, पुनर्वसु, मघा, विशाखा और कृत्तिका इन पाँच नक्षत्रों में प्रथम रजोदर्शन मध्यम है और अन्य सात नक्षत्रों में प्रथम रजोदर्शन अशुभ होता है।

प्रथम रजोदर्शन में निषिद्धि काल—

भद्रा में, निद्रा अवस्था में, संक्रान्ति के समय में, अमावस और रिक्ता (४-९-१४) तिथि में, सन्ध्या समय में, षष्ठी, द्वादशी और अष्टमी तिथि में, वैधृति योग में, रोग की अवस्था में चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहणकाल में और व्यतिपात योग में प्रथम रजोदर्शन शुभ नहीं होता है।

रजोदर्शन सम्बन्धी अन्य बातें—

(१) गडांत में यदि कोई स्त्री रजस्वला हो तो शीघ्र ही वैधव्य को प्राप्त करती है। ऐसी स्त्री संतान, धन सुख और वस्त्र आदि से रहित, कुल का नाश करने वाली दुष्टा होती है।

(२) यदि किसी स्त्री का रजोदर्शन सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्र ग्रहण के समय हो तो क्रमशः पिता तथा माता की मृत्यु होती है।

रजोदर्शन न होने पर क्या करें ?—यदि कोई नारी आयु के १८ वें वर्ष में होती हुई तथा उन्नत उरोजों वाली भी, रजोधर्म से युक्त न हो, तो किसी शुभ दिन उसे आदर पूर्वक एक अतीव सुन्दर आसन पर, श्वेत कपड़ों तथा स्वर्ण आदि भूषणों से सुसज्जित कर और उसके शुक्र (रज) स्थल को कुंकुम तथा गुलाब के पानी तथा अन्य सुगन्धित इत्र आदि से गीला करके तथा तीन दिन तक यह समझ कर कि वह वास्तव में ही रजोधर्म से युक्त है, उसको चतुर्थ दिन स्नान करवाया जाये और पाँचवें दिन शुद्ध तथा शुभ लग्न में उसका पति उसके पास जावे। ऐसा करने से तुरन्त उसे रजोदर्शन होगा और वह स्त्री अपने पति के लिए अच्छी सहधर्मिणी सिद्ध

होगी। वह संभोग के योग्य हो जायेगी तथा पति के साथ सब धर्म-कृत्यों (देव तथा पितृ अर्चन) के करने की अधिकारिणी हो जायेगी।

निषेक का शुभ समय—

स्त्री जब विवाह के बाद पहली बार ऋतुमती हो तो उसके अनन्तर होने वाला स्त्री-पुरुष का संभोग 'निषक' कहलाता है। उसके बाद होने वाले मासिक धर्मों के अनन्तर किया हुआ संभोग 'गर्भाधान' कहलाता है।

चन्द्र जब हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूला, शतभिषा, श्रवण, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद अथवा रेवती नक्षत्र में हो और लग्न पूर्ववत् शुद्ध हो तो उस समय किया हुआ निषेक बहुत शुभ होता है।

गर्भाधान में निषिद्धिकाल—

भाषार्थ—ऋतु शुद्ध होने के बाद पति तीनों प्रकार के गडान्त सातवों और जन्म तारा मूल, भरणी, आश्विन, रेवती और मघा नक्षत्र, सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण, व्यतीपात और वैधृति योग, माता-पिता का श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का पूर्वार्द्ध, उत्पात से पीड़ित नक्षत्र जन्म राशि से ८ वीं राशि वाला लग्न और पाप लग्न इन सबों को त्याग कर शुभमुहूर्त्त में अपनी स्त्री से संभोग करे।

भद्रा, षष्ठी, पर्व के दिन, रिक्तातिथि (४। ९। १४) सन्ध्या समय, मगल-रवि-शनिवार और ऋतु के आरम्भ से ४ रात—इनका गर्भाधान में त्याग करे।

तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा इन ११ नक्षत्रों में गर्भाधान शुभ होता है

गर्भाधान में लग्न शुद्धि—शुभ ग्रह (पूर्ण चंद्र, बुध, गुरु और शुक्र) लग्न से केन्द्र (१।४।७।१०) और त्रिकोण (५।९) स्थानों में हों, पाप ग्रह (क्षीण चंद्र, सूर्य, मंगल, शनि, राहु-केतु) ३, ११, ६ ठे स्थानों में हो, लग्न के ऊपर पुरुष ग्रहों (सूर्य, मंगल और गुरु) की

दृष्टि हो, चन्द्रमा और लग्न विषम राशि के नवांश में हो और रजो दर्शन से चतुर्थ आदि सम रात्रि (४।६।८।१०।१२।१४।१६) में गर्भाधान शुभ (पुत्र प्रद) होता है। चित्रा, पुनर्वसु पुष्य और अश्विनी नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम होता है।

ज्योतिष और परिवार नियोजन—स्त्रियों की जन्म राशि से ३।६।१०।११ वें स्थानों में चन्द्रमा हो और मंगल देखता हो तव गर्भधारण की विशेष संभावना रहती है। इस प्रकार यदि इस अवधि में संभोग से वचा जाए और वाद में संभोग किया जाय तो परिवार नियोजन में सहायता मिलती है। किसी भी वर्तमान पंचांग की सहायता से स्त्रियाँ इस प्रकार का चार्ट बना सकती हैं।

ज्योतिष से प्रसव काल जानना—प्रसव काल की जानकारी के लिये स्त्री के ऋतुकाल का स्मरण होना अत्यंत आवश्यक है। प्रायः समस्त गणना इसी आधार पर की जाती है।

प्रसव काल दर्शक कोष्ठक

ऋतु बेला	योग संख्या	प्रसव काल का मास
जनवरी	७	अक्टूबर
फरवरी	७	नवम्बर
मार्च	५	दिसम्बर
अप्रैल	५	जनवरी
मई	४	फरवरी
जून	७	मार्च
जुलाई	६	अप्रेल
अगस्त	७	मई
सितम्बर	७	जून
अक्तूबर	७	जुलाई
नवम्बर	७	अगस्त
दिसम्बर	६	सितम्बर

उदाहरण के लिये—किसी स्त्री को १० मार्च १९७२ को ऋतु काल हुआ और गर्भ रह गया तो उसका प्रसव काल इस प्रकार ज्ञात किया जा सकता है—

सर्वप्रथम कोष्ठक में से मार्च मास की योग संख्या लेवे जो कि ५ है। अब १० मार्च में इस संख्या को जोड़ दें। ध्यान रहे यह १० मार्च ऋतु काल का दिनांक है। अस्तु १०+५=१५ अब मार्च मास का प्रसव काल कोष्ठक से ज्ञात किया। वहाँ लिखा है—दिसम्बर। अतः कहना चाहिए कि १५ दिसम्बर १९७२ को प्रसव काल की पूरी संभावना है।

स्त्रियों का प्रिय रत्न: पुखराज

स्त्रियों के लिये गुरु ग्रह का विशेष महत्व है। स्त्री की कुण्डली में गुरु उस के पति का सदा सर्वदा के लिये कारक होता है। गुरु के बलाबल पर स्त्री के पति की आयु उसका धन तथा स्वभाव अधिकतर निर्भर करते हैं। इसके अतिरिक्त जिन बालिकाओं के विवाह में देरी हो उन्हें पुखराज अवश्य धारण करना चाहिये। क्योंकि विलम्ब से विवाह होने के कारणों में सप्तम भाव और बृहस्पति का निर्बल होना ही मुख्य होता है।

विश्व प्रसिद्ध महिलाओं की कुण्डलियाँ

फिल्म अभिनेत्री पद्म्श्री नरगिस

कुण्डली संख्या २०

महिला जासूस माताहारी
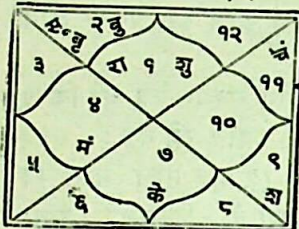
कुण्डली संख्या २१

श्रीमती केनेडी/श्रीमती ओनासिस

कुण्डली संख्या २२
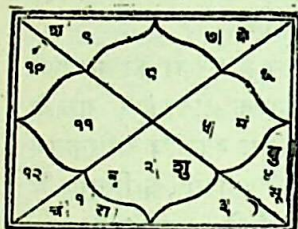
मलिका एलिजावेथ द्वितीय

कुण्डली संख्या २३

एक अत्यंत धनाढ्य महिला की कुण्डली जिसने राहु की महादशा में शनि के अन्तर में चालीस लाख रुपया खो दिया

कुण्डली संख्या २४
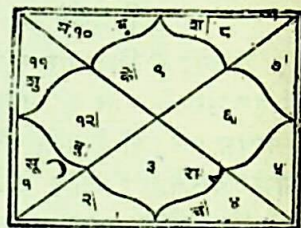
प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी
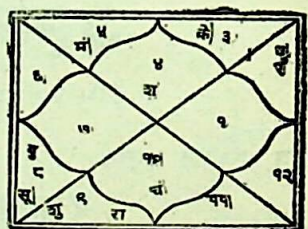
कुण्डली संख्या २५

श्रीमती भण्डार नायके (श्री लंका)
विश्व की प्रथम महिला प्रधान मंत्री

कुण्डली संख्या २६
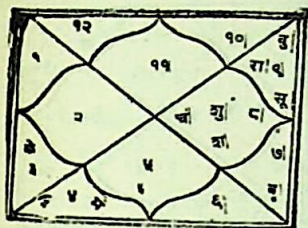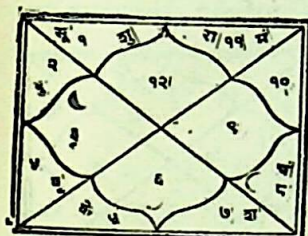
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

कुण्डली संख्या २७

श्री आनन्दमयी माँ

कुण्डली संख्या २८
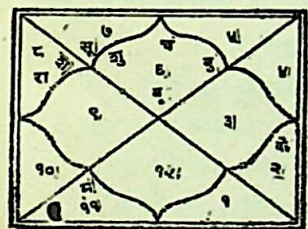
महारानी बड़ौदा

कुण्डली संख्या २९

सुश्री सूरज वाला

कुण्डली संख्या ३०

श्रीमती एनी बिसेंट
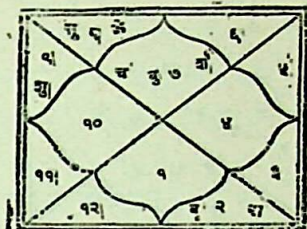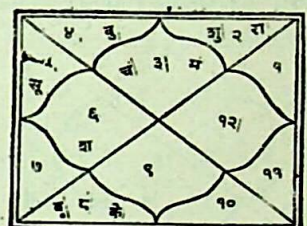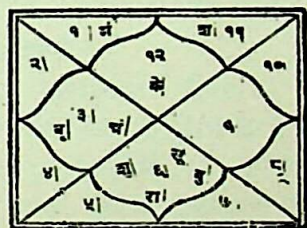
कुण्डली संख्या ३१

राजकुमारी मारग्रेट

कुण्डली संख्या ३२

एक रानी की कुण्डली (जो विवाह के बाद आठवें दिन ही विधवा हो गई
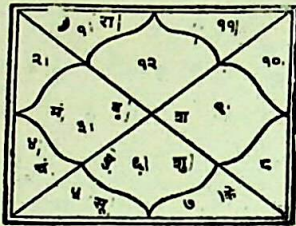
कुण्डली संख्या ३३

प्रसिद्ध दानशीला रानी वड़हर : १८ वर्ष की अवस्था में ही विधवा हो गई
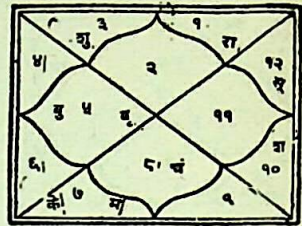
कुण्डली संख्या ३४

गायिका लता मंगेश्कर
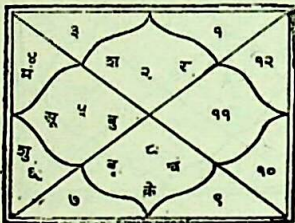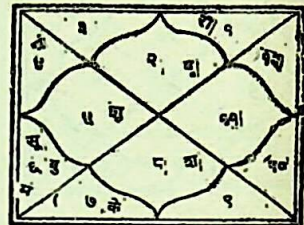
कुण्डली संख्या ३५

स्त्री जातक

(आचार्य नरसिंह दैवज्ञ द्वारा विरचित' जातकसारदीप के स्त्री जातकाध्याय में महिलाओं का विशद ज्योतिष शास्त्रीय विवेचन किया गया है। 'जातकसारदीप' का वृहतांश यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है)

स्त्रीपुरुषजातकयोः फलसाम्यवैषम्यचिन्ता

स्त्रीपुरुषयोः समानं योग्यादिदशा (ग्यं प्रदिशेत्) च पूर्वोऽक्तम्।
यद्यदयोग्यं स्त्रीणां तत्तत्सर्वं वदेत्स (त्त्व) नाथेषु ॥ १ ॥

स्त्री की जन्म कुण्डली से जो फल पुरुष के जन्म काल में कहे गए हैं वे सब फल स्त्रियों के भी जन्म काल में कहने चाहिएँ। जो भी योग, दशा आदि स्त्री की जन्म कुण्डली में हों, वह उनके पति के लिए भी कहने चाहिएँ।

वैधव्यादिकारकाणि स्थानानि

वैधव्यं निधनुर्गृ (नगृ) हे पतिसौभाग्यं सुखं च या(जा)मित्रे।
सौन्दर्यं लग्नगृहे विचिन्तयेत्पुत्रसंपदं नवमे ॥ २ ॥

स्त्री के जन्म कालिक आठवें स्थान से उनके पति के मरण का विचार करना चाहिए। सप्तम स्थान से पति के सुख सौभाग्य का विचार करना चाहिए। लग्न एवं चन्द्रमा से सौन्दर्य एवं शरीर सुख तथा नवम स्थान से पुत्र, संपदा आदि का विचार करना चाहिए।

अष्टमादिस्थानाश्रितग्रहफलम्

एषु स्थानेषु युवत्याः सौम्याः शुभदा बलान्विता ज्ञेयाः।
क्रूरास्तु नेष्टफलदा भवनेशविवर्जिताः सदा चित्यं (त्याः) ॥ ३ ॥

स्त्री की जन्म कुण्डली में अष्टम आदि स्थानों में यदि बलवान् शुभ ग्रह हों तो शुभ फलदायी होते हैं। यदि अष्टम स्थान में पाप ग्रह हों तो वे इष्टप्रद नहीं होते हैं तथा जिस भाव के वे स्वामी होते हैं उसे हानि पहुँचाते हैं।

लग्नचन्द्राश्रितराशिफलम्

पुरुषर्क्षे पुरुषांशे लग्नेन्द्वोः पाप[दृष्ट]युक्तयो[र्भ]न(व)ति ।
पुरुषाकृतिशीलयुक्ता भर्तुरयोग्याऽ[स]मंजसा कन्या ॥ ४ ॥
समराशौ समभागे लग्नेन्द्वोः स्त्रीगुणान्विता कन्या ।
सौम्ययुते दृष्टे वा सुभगा साध्वी सुविख्याता ॥ ५ ॥

यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा विषम राशि में हों तो स्त्री पुरुष के समान आकृति वाली व पुरुष स्वभाव से युक्त होती है। यदि लग्न एवं चन्द्रमा पाप ग्रहों से युत हों तो कुकर्म करने वाली और सद्गुणों से हीन होती है।

यदि लग्न एवं चन्द्रमा सम राशि में स्थित हों तो स्त्री पतिव्रता, सुन्दर, चरित्रवती और रूप गुणों से युक्त होती है। यदि इन स्थानों में शुभग्रहों की दृष्टि या युति हों तो स्त्री सौभाग्ययुक्त, साध्वी और सुविख्यात होती है।

लग्नचन्द्राश्रितत्रिंशांशफलम्

लग्नेऽन्द्वोर्यो बलवांस्तस्य त्रिंशांशकैः फलं वाच्यं ।
त्रिंशांशो बलवांस्तत्प्रोक्तफलानि सम्यगायान्ति ॥ ६ ॥

लग्न एवं चन्द्रमा के त्रिंशांश से स्त्री स्वभाव का वर्णन

लग्न अथवा चन्द्रमा में से जो स्थान बलवान हो उसके अनुसार स्त्री चरित्र आदि के फल का प्रतिपादन करना चाहिए। इन्हीं सब भावों के मध्य विभिन्न त्रिंशांश का फल इस प्रकार से कहा गया है।

भौमराशिगतत्रिंशांशफलम्

भौमर्क्षे भौमांशे कन्या मृ(सु)तसूतिका गुणैर्हीना ।
मन्दांशस्था प्रेष्या दुःशीला बहुविधा नारी ॥ ७ ॥
पुत्रवती जीवांशे बहुव्ययार्ता पतिव्रता कन्या ।
सौम्यांशे बहुमाया मलिनाचाराऽल्पसूतिः स्यात् ॥ ८ ॥
कन्याजननी कन्या शुक्रांशे जारभोगसन्तुष्टा ।
भानोरप्येवमेव त्रिंशांशफलं समादेश्यम् ॥ ९ ॥

(भौम राशियों के त्रिशांश का फल)

जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न तथा चन्द्रमा मेष या वृश्चिक राशियों में से किसी एक में स्थित हो और उसी काल में मंगल का त्रिशांश हो तो वह कन्या दुष्टा, गुणों से हीन और बिना विवाह के ही गर्भ धारण कर लेती है, विवाह से पूर्व ही पुरुष-संयोग से दूषित हो जाती है। शनि का त्रिशांश हो तो स्त्री दासी, दुष्ट स्वभाव वाली, मलिन तथा बहुत से दुर्गुणों से युक्त होती है। यदि बृहस्पति का त्रिशांश हो तो पुत्रवती, बहुत व्यय दान आदि करने वाली, पतिव्रता होती है, यदि बुध के त्रिशांश में जन्म हो तो ठगने वाली, मायाविनी, बुरे आचरण वाली एवं अल्प सन्तान वाली होती है। यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो पर-पुरुष से संभोग करने पर संतुष्ट होती है।

शुक्रराशिगतत्रिशांशफलम्

सितभवने भौमांशे दुष्टा खलप्रिया पतिद्वेष्या।
मन्दांशे च पुनर्भूर्मृतप्रजा रोगसंयुता नित्यम् ॥ १० ॥
रूपान्विता गुणाढ्या जीवांशे भर्तृपुत्रसम्पन्ना।
कुचरित्रा सौम्यांशे काव्यकलागेयसंतुष्टा ॥ ११ ॥
शुक्रांशे भोगवती विदग्धदयिता जगत्प्रिया ख्याता।
पापयुते बलहीने त्रिशांशे नैव पुष्टफलमेति ॥ १२ ॥

शुक्र राशियों के त्रिशांश का फल

स्त्री के जन्म काल में अगर वृष अथवा, तुला राशियों में लग्न अथवा चन्द्रमा स्थित हो और उस समय मंगल का त्रिशांश हो तो स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली, खल एवं बदमाश लोगों की प्रेमिका, पति से द्वेष करने वाली होती है। शनि का त्रिशांश हो तो पुनः विवाह करने वाली, मृत सन्तान वाली, रोगिणी तथा दुखी जीवन व्यतीत करती है। गुरु के त्रिशांश में रूप एवं गुणों से भरपूर, पति एवं पुत्रों से युक्त और बुध के त्रिशांश में जन्म हो तो स्त्री बुरे चरित्र की परन्तु काव्य कला एवं गायन आदि जानने वाली होती है। यदि

शुक्र का त्रिंशांश हो तो खाने पीने वाली और भोग विलास में रुचि रखने वाली सबको प्रिय लगने वाली तथा ख्यातिवती होती है। परन्तु त्रिंशांश यदि पापग्रहों से युत अथवा बलहीन हो तो उक्त फलों की पुष्टि नहीं होती है। यह बात सदा विचारणीय है।

बुधराशिगतत्रिंशांशफलम्

बुधभवने भौमांशे कन्या रजो[दू]षिताऽल्पपुत्रा स्यात् ।
मंदांशे कुव(क्लीव)समा मृतप्रजा वाऽन्यभर्तृ [सं]युता साध्वी ।१३।
पतिप्रिया वा जोवांशे क्षेत्रगते तुंगगे [च] जीवे स्यात् ।
सौम्यांशे कु(क)लाढ्या पशुभ[व]नभोगान्विता च शुक्रांशे ।।१४।।

बुध राशियों के त्रिंशाश का फल

लग्न अथवा चन्द्रमा मिथुन या कन्या इन दोनों राशियों में से किसी एक राशि में हो और उस काल में मंगल का त्रिंशांश हो तो कन्या दूषित रक्त वाली, अल्प पुत्रों वाली तथा कपटी होती है। शनि के त्रिंशांश में नपुंसक अथवा संतानहीन या मृत सन्तान वाली अथवा एक पति को छोड़कर दूसरे पति के साथ साध्वी बनकर रहती है। गुरु के त्रिंशांश में जन्म हो तो पतिप्रिया और सद्‌गुणों से विभूषित होती है। (यदि गुरु उच्च अथवा स्वक्षेत्री हो तो) बुध के त्रिंशांश में जन्म हो तो परिवार एवं कुल को शोभा बढ़ाने वाली और शुक्र के त्रिंशांश में हो तो कामुक एवं बहुत से पुरुषों से भोग करने वाली पशु, भवन तथा सुख साधनों से सम्पन्न होती है।

चन्द्रराशिगतत्रिंशांशफलम्

शशिभवने भौमांशे स्वच्छन्दा कामिनी विनष्टसुता ।
मन्दांशे पतिहीना कृच्छ्रेणोपजीवनं लभते ।। १५ ।।
अल्पसुताऽक्षीणयुता(गुणा) जीवांशे शिल्पिनी बुधस्यांशे ।
वन्ध्या मृतप्रजा वा शुक्रांशे स्त्रीषु इ(दु) ष्टतमा ।। १६ ।।

चन्द्रमा की राशि के त्रिशांश का फल

चन्द्रमा राशि में लग्न अथवा चन्द्रमा हो और उस समय मंगल

त्रिशांश हो तो स्त्री स्वच्छंद अर्थात् मुक्त विचरण करने वाली तथा नष्ट सतति वाली होती है। शनि का त्रिशांश हो तो पतिहीन और और तुच्छ तथा अभाव ग्रस्त जीवन व्यतीत करने वाली होती है। गुरु के त्रिशांश में जन्म हो तो वहुत से गुणों वाली और अल्प पुत्रों वाली होती है, बुध के त्रिशांश में हो तो चित्रकार, शिल्प विद्याओं की ज्ञाता होती है। किन्तु शुक्र के त्रिशांश में जन्म हो तो दुष्ट स्वभाव वाली वांझ तथा कुलटा के समान होती है।

सूर्यराशिगतत्रिशांशफलम्

वाचाटा रविभवने कुजभागे जारिणी विदेशरता।
कुशला कृशा दरिद्रा(राज्ञी जैवे) मन्दांशे जारवल्लभा ज्ञेया॥१७॥
पुरुषाकृतिशीलयुता सौम्यांशे कार्यचोरिणी कुलटा।
कुपतिप्रियाऽल्पसुता (पुत्रा) शुक्रांशे नित्यरोगिणाभिचरति।१८।

सूर्य की राशि के त्रिशाश का फल

सूर्य राशि सिंह में लग्न अथवा चन्द्र पड़े और उस काल में यदि मंगल का त्रिशांश तो स्त्री वकवाली तथा अवैध सन्तान को जन्म देने वाली और अपना देश त्यागने वाली होती है। बृहस्पति के त्रिशांश में हो तो कुशल, पतली और रानी के समानं परन्तु अल्प घन वाली होती है, शनैश्वर का त्रिशांश हो तो वह पर पुरूष गामिनी, और पुरूष आकुति वाली होती है। बुध का त्रिशांश हो तो कामचोर और पुरूषों के आचरण को अपनाने वाली (बीड़ी सिगरेट शराब भक्षण करने वाली – जुआ खेलने वाली) होती है। इसी प्रकार यदि शनि का त्रिशांश हो तो तो वह जिन पुरूषों के साथ भोग नहीं करना चाहिए (जेठ, श्वसुर, चाचा मामा आदि) उनके साथ भोग करने वाली, अल्प संतान वाली, तथा नित्य रोगिणी रहती है।

गुरुराशिगतत्रिशांशफलम्

जीवर्क्षे भौमांशे कन्या परिचारिणी सुविख्याता।
सौरांशे तु दरिद्रा कन्याजननी स्वतन्त्रनिरता स्यात्॥ १९॥

जीवांश तु धनाढ्या सौम्यांशे लोकपूजिता ललना ।
पुत्रवती शुक्रांशे सद्‌गुणयुक्ता पतिव्रता साध्वी ॥ २० ॥

गुरु की राशियों के त्रिशांश का फल

यदि लग्न या चन्द्रमा गुरु की राशि (धनु या मीन) में से किसी एक में स्थित हो और उस समय में मंगल का त्रिशांश हो तो कन्या, सेवाभावी और प्रख्यात होती है। शनि का त्रिशांश हो तो दरिद्र और दूसरों के साथ स्वतन्त्र होकर रति करने वाली होती है। गुरु का त्रिशांश हो तो धनवती और यदि बुध का त्रिशांश हो तो लोगों के बीच आदर प्राप्त करने वाली होती है। शुक्र का त्रिशांश हो तो पुत्रवती सद्‌गुणों से युक्त पतिप्रिया और साध्वी होती है। कुछ मतानुसार वह परपुरुषगामिनी एवं दुष्टा होती है।

शनिराशिगतत्रिशांक्षफलम्

मन्दर्क्षे भौमांशे दासी कुलटा मृतप्रजा कन्या ।
मन्दर्क्षे मन्दांशे नीचावाग(सक्ताऽ)तिदुर्भगा वनिता ॥ २१ ॥
भर्तृ प्रिया च सुभगा जीवांशे नैकताभि(सौख्यवि) ख्याता ।
भग्नव्रता च कुलटा बहुमाया सोमजस्यांऽशे ॥ २२ ॥
शुक्रांशे प्रभुशीला वन्ध्या वा रिन्रलोचना (प्राज्ञवल्लभा) वनिता ।
त्रिशांशफलमेवं वक्तव्यं दैवविद्भिरबलायाः ॥ २३ ॥

इति लग्नचन्द्राश्रितत्रिशांशफलम्

त्रिशांशफलस्यान्यत्रातिदेशः

चन्द्रार्कस्फुटयोगात्त्रिशांशफलं वि[नि]दिशेत्तस्य ।
लग्नेन्द्वोर्योगवशात्त्रिशांशफलं विनिर्दिशेदथ वा ॥ २४ ॥

शनि की राशियों के त्रिशांश का फल

इसी प्रकार लग्न तथा चन्द्रमा मकर या कुम्भ राशियों में से किसी एक राशि में हो और उसी काल में मंगल का त्रिशांश हो तो वह दासी, मृत सन्तान वाली एवं कुलटा होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो तो नीच पुरुष के साथ फँसी हुई होती है।

यदि बृहस्पति का त्रिशांश हो तो पतिप्रिया सौभाग्यवती तथा विख्यात नाम वाली होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो झूठ बोलने वाली, आचरणहीन व मायाविनी होती है। शुक्र का त्रिशांश हो तो बहुत शील वाली, विदुषी परन्तु वन्ध्या होती है।

कुत्सितभर्तृयोगः

शुद्धेऽग्ने (स्ते) दुर्बले यस्याः पापग्रहनिरीक्षिते।
सौम्यग्रहदृशा हीने भर्ता कापुरुषो भवेत् ॥ २५ ॥

क्लीवतुल्यपतियोगः

[बुधमं] दसुतंस्त (युतेऽस्ते) वा पतिः क्लीवसमो भवेत्।
वन्ध्या वा दुर्भगा वापि सा च नित्यं प्रवासिनी ॥ २६ ॥

प्रवासशीलभर्तृयोगः

सप्तमे चरराशौ च तदीये (शे) च [चरां]शके।
भर्ता प्रवासशीलः स्यात् स्थिरभे स्वगृहे च सन् ॥ २७ ॥
अस्तगेऽके(र्केऽ)रिभिर्दृष्टे तथा शत्रुनिरीक्षिते।
कन्ये (न्यै) व विधवा भूत्वा राजानमधिगच्छति ॥ २८ ॥

पतिकृतपरित्यागयोगः बालविधवायोगश्च

[अस्तगेऽर्के समुत्सृष्टा नवोढा विधवा कुजे।

विवाहाभावयोगः

कन्यैवापरिणीता स्याद्वृद्धा पापेऽक्षिते शनौ ॥ २८ ॥]

वैधव्ययोगः

[आग्नेयैस्त्रिभिरस्तस्थैर्विधवा स्यान्न संशयः।]

पुनर्विवाहयोगः

द्यूने शुभाशुभेर्युक्ते पुनर्भूः सा भविष्यति ॥ २९ ॥

वैधव्ययोगान्तरम्

अस्तगावारमन्दौ चेत्पाष(प)क्षे विधवा भवेत्।

वैधव्यादिप्राप्तिकालः

मासि वर्षेऽश्र(थ)वा हौ(वा)[रे]भागौरिवगच्छति(गैरप्येवमादिशेत्)३०

पतित्यागयोगः पतिवैरयोगश्च

बलहीनेऽस्तगे पापे सौम्यग्रहनिरीक्षिते।
भर्त्रा वियुज्यते नारी नीचारिस्थे [च] वैरिणी ॥ ३१ ॥

जारसक्तायोगः

ल[ग्न]न्योत्यम(न्यांशे) सितारौ चेज्जारसक्ता भवेद्वधूः।

पत्यनुज्ञया व्यभिचारयोगः

तथैव(द्युते)सप्तमे चन्द्रे दु(पुं)श्चरी(ली) पतिना सह(त्यनुज्ञया) ।३२।

मात्रा सह व्यभिचारयोगः

मन्दारार्क(रर्क्ष) विलग्नस्थौ शशिशुक्रौ यदा तदा।
वन्ध्या(मात्रा)भवति सा नारी(युक्ता)पंचमे(बन्धकी)पापदृग्युते(तौ)३३।

व्याधियोनियोगः

अर्क(स्त)राश्यंशगे भौमे सूर्यगे स्वां(जेऽस्तां शकेऽपि वा।
[कौजेऽस्तांशे मंद]ग्रे दृष्टे व्याधियोनिश्च दुर्भगा ॥ ३४ ॥

चारुयोनियोगः

[शुभग्रहयुते दृष्टे शुभग्रहनवांशके।
सप्तमे वल्लभा भर्तुश्चारुश्रोणी भवेद्वधूः ॥ ३५ ॥

कुत्सित एवं कापुरुष आदि पति योग

(१) यदि सप्तम भाव में कोई शुभ ग्रह न हो और उस भाव पर किसी भी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो उस कन्या का पति कापुरुष अर्थात् नामर्द होता है।

(२) यदि सप्तम स्थान में बुध अथवा शनि हो तो पति क्लीव (नपुंसक) होता है।

(३) यदि लग्न अथवा चन्द्रमा में सप्तम में चर राशि हो और सप्तमेश यदि चर राशि के नवांश में हो तो पति सदा ही परदेश में रहने वाला होता है। यदि सप्तम में स्थिर ग्रह या सप्तमेश स्थिर राशि के नवांश में हो तो पति अपने घर में रहने वाला होता है।

(४) यदि सप्तम स्थान में बहुत से पापग्रह स्थित हों या

सप्तमस्थ सूर्य को शुभ ग्रह देखते हों तो वह कन्या विधवा होती है। यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो कन्या दूसरा विवाह करती है।

(५) सातवें स्थान में सूर्य स्थित हो तो वह पति द्वारा त्यागी जाती है। अथवा उसका विवाह विच्छेद हो जाता है (परन्तु सूर्य यदि उच्च राशि का हो और शुभग्रहों से दृष्ट हो तो विवाह विच्छेद नहीं होता परन्तु स्त्री पति द्वारा उपेक्षित रहती है। इसी प्रकार सप्तम में मंगल हो तो कन्या बालविधवा या विवाह के कुछ समय के बाद राँड हो जाती है। यदि सप्तम स्थान में शनि स्थित हो तो कुंवारी रहकर वृद्धा हो जाती है।

(६) यदि सप्तम स्थान में बहुत से पापग्रह स्थित हों तो वह स्त्री अवश्य ही विधवा होती है। यदि शुभ अथवा अशुभ ग्रह मिश्रित रूप से सप्तम में स्थित हों तो वह विवाहित पति को छोड़कर फिर दूसरे पति को स्वीकार करती है।

(७) सप्तम स्थान में यदि नीच राशि गत शनि या मंगल की स्थिति हो तो वह कन्या निश्चित रूप से विधवा होती है।

(८) यदि किसी कुण्डली में मंगल शुक्र के नवांश में हो और शुक्र मंगल के नवांश में हो तो स्त्री पर-पुरुषों से सम्भोग करने वाली होती है।

(९) यदि स्त्री कुंडली में सप्तम स्थान में चन्द्रमा युक्त मंगल और शुक्र हो या चन्द्रमा मंगल व शनि की युति हो तो वह स्त्री पति की जानकारी में पर-पुरुष संसर्ग रखती है।

(१०) जिस स्त्री के जन्म काल में लग्न स्थान में शुक्र एवं चंद्रमा मंगल अथवा शनि की राशि में स्थित हों तो वह कन्या पर पुरुष गामिनी होती है। यदि इन ग्रहों पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो वह कन्या अपनी माता सहित पर पुरुषों से भोग करवाती है।

(११) जिस स्त्री के जन्मकालिक लग्न से सातवें स्थान में मंगल का नवांश का उदय हो और उसे शनि देखता हो तो उस स्त्री के

भग में रोग होता है। यदि उसी स्थान में शुभग्रह का नवांश हो तो स्त्री सुन्दर गुप्तांग वाली और अपने स्वामी को अतिप्यारी होती है।

अथ सप्तमराशिनवांशगतसूर्यादिफलम्

[सूर्येऽस्ते स्वांशकक्षेत्रेऽतिमृदुर्बहुकर्मकृत् ॥
चन्द्रेऽस्ते स्वांशकक्षेत्रे मृदुः कामवशः पतिः ॥ ३६ ॥
भौमेऽस्ते स्वांशकक्षेत्रे स्त्रीलोलो निर्ध(लःक्रोध)नः पतिः ॥
सौम्येऽस्ते स्वांशके क्षेत्रे भर्ता विद्वान्मतेत्सु(न्सुकौश)[लः] ॥३७॥
जीवेऽस्ते स्वांशकक्षेत्रे गुणवान् विजितेन्द्रियः ॥
शुक्रेऽस्ते स्वांशके क्षेत्रे कान्ता(न्तः) सौभाग्यवान् सुखी ॥ ३८ ॥
[यमेऽस्ते] स्वांशके क्षेत्रे वृद्धो मूर्खो भवेत्पतिः ॥

सप्तम स्थान गत राशि एवं नवांश फल

यदि सप्तम स्थान में सिंह राशि या सूर्य का नवांश हो तो उस का पति कोमल स्वभाव वाला व बहुत कार्य व्यस्त होता है। चन्द्रमा की राशि (कर्क) हो या चन्द्रमा का नवांश हो तो पति मृदु आचरण वाला परन्तु काम शक्ति में कमजोर होता है।

सातवें स्थान में मेष या वृश्चिक राशि हो अथवा मंगल का नवांश हो तो उस स्त्री का पति धनहीन क्रोधी और अन्य स्त्री पर आसक्त होता है। सप्तम भाव में मिथुन या कन्या राशि हो अथवा बुध का नवांश हो तो स्त्री का पति बहुत विद्वान् तथा सब कार्यों में चतुर होता है। सप्तम स्थान में धनु या मीन राशि हो अथवा बृहस्पति का नवांश हो उस स्त्री का स्वामी गुणी तथा जितेन्द्रिय होता है। सप्तम स्थान में वृष या तुला राशि हो या वहीं पर शुक्र का नवांश हो तो कन्या का पति सुन्दर एवं सबको प्रिय लगने वाला होता है।

सप्तम स्थान में यदि मकर या कुम्भ राशि हो या शनि का नवांश हो तो कन्या का पति मूर्ख तथा वृद्ध (अधिक आयु वाला) होता है।

इति सप्तमराशिनवांशगतसूर्यादिफलम्

लग्नगतसूर्यादिफम्

एवं सप्तमराशिस्थैर्ग्रहैर्न(हैः स्त्री)णां वदेत्फलम् ॥ ३९ ॥

अस्तराशिफलं प्रोक्तं ल[ग्नरा]शिफलं तथा ।

फलं भवति दंप (त्योर्बहुयोगे बलाद्वदेत् ॥ ४० ॥

लग्नगतशुक्रचन्द्रयोगफलमृत्

सौम्यक्षेत्रोदये चन्द्रे सार्धं शुक्रेण सा वधूः ।

सुखी पी (खे र) ता पतिद्वेष्या नित्यमस्थिरचारिणी ॥ ४१ ॥

लग्नगतबुधचन्द्रयोगफलम्

चन्द्रजौ(ज्ञौ) यदि लग्नस्थौ कु(क)लाढ्या ब्रह्मवादिनी (गुणसौख्यभाक्) ॥

लग्नगतबुधशुक्रयोगफलम्

ज्ञशुक्रौ यदि लग्नस्थौ सौम्यस्थानेकु(रूपा क)लाद्यु(यु)ता । ४२ ।

लग्नगतचन्द्रबुधशुक्रयोगफलम्

चान्द्रिचन्द्रसिता लग्ने बहुसौख्यगुणैर्युता ।

लग्नगतगुरुफलम्

जीवो लग्नेऽति(र्थ)संपन्ना पुत्रवित्तसुखप्रदा ॥ ४३ ॥

लग्नगतापापफलम्

क्षेत्रोच्चसंस्थिता लग्ने अशुभास्ते शुभप्रदाः ।

वैधव्ययोगान्तरम्

क्रूरेऽष्टमे च विधवा पापक्षेत्रे विशेषतः ।

वैधव्यप्राप्तिकालः

निधनेंऽशांशकपतेर्दशायां निश्चितं भवेत् ॥ ४४ ॥

सोमङ्गल्ययोगः

सौम्येऽष्टमस्थे कन्याया भर्तुः प्रागेव संमृतिः ।

पतिपत्न्योः समकालमरणयोगः

पापसौम्ययुते तस्मिन्समकाले तयोर्मृतिः ॥ ४५ ।

बलाबलं तयोर्ज्ञात्वा पुरुषेषु विजानता ४६ ॥

सप्तमाष्टमनवमगतशुभग्रहफलम्

भाग्यस्थाने स्थिते सौम्ये सप्तमे अष्टमेऽपि वा ।
भर्ता पुत्रसुखैः सार्धं दीर्घकालं च जीवति ॥ ४७ ॥
धनुःर्कर्कियमे लग्ने भर्तृ पुत्रादिदुःखदा ।

लग्नस्थ ग्रह फल

(१) जिस प्रकार स्त्री के सप्तम स्थान गत राशि तथा ग्रहों से उसके पति के विषय में कहा गया है उसी प्रकार लग्न गत राशि एवं ग्रहों से उसके विषय में भी फलादेश कहना चाहिए ।

(२) जिस स्त्री के लग्न में शुक्र व चन्द्रमा हो वह दूसरों से जलन रखने वाली, पति से द्वेष करने वाली परन्तु सुख से युक्त होती है ।

(३) लग्न में बुध और चन्द्रमा हो तो स्त्री सुधी, कलाकारी अथवा सजावट प्रिया, उत्तम गुणों वाली तथा कुल एवं खानदान की इज्जत को स्थिर रखती है ।

(४) शुक्र एवं बुध लग्न में हो तो स्त्री परम सौन्दर्य वाली विदुषी और कला प्रेमी होती है ।

(५) इसी प्रकार यदि लग्न में चन्द्रमा, बुध एवं शुक्र हो तो कन्या बहुत से सुखों का भोग करने वाली गुणवान और धनादि से युक्त होती है । इसी प्रकार लग्न में अकेला गुरु हो तो स्त्री को सम्पन्न घर, ससुराल, उत्तम गुणों वाला पति तथा प्रख्यात सन्तान प्राप्त होती है ।

(६) लग्न स्थान में यदि पाप ग्रह (शनि, मंगल, राहु, क्षीण चन्द्र) अपनी राशि या स्वोच्च राशि में हों तो शुभ फल करते हैं अन्यथा अशुभ फलदायक होते हैं ।

(७) जिस स्त्री के जन्मकालिक लग्न से अष्टम स्थान में क्रूरग्रह, अथवा पाप ग्रह हों अथवा अष्टमेश पाप क्षेत्र में हो तो वह विधवा होती है । अष्टमेश जिस ग्रह के नवांश में हो उस ग्रह की दशा में पति का मरण होता है ।

(८) यदि सौम्य यानि शुभ ग्रह अष्टम स्थान में हो तो स्त्री का मरण पति के साथ ही होता है। यदि पाप ग्रह अष्टम में और शुभ ग्रह द्वितीय स्थान में हो तो पति से पूर्व ही स्त्री का मरण होता है।

(९) यदि सप्तम, अष्टम और नवम में शुभ ग्रह स्थित हों तो स्त्री पति, पुत्र, धन एवं सौभाग्य से युक्त रहती है दीर्घायु भोगती है। यदि अष्टम में धनु, कर्क राशि हो और लग्न में शनि हो तो उसे पति एवं पुत्रों के द्वारा सुख प्राप्त होता है।

अल्पपुत्रयोग:

सिंहालिवृषकन्यासु चन्द्रे [वा स]ति पंचमे।
अल्पापत्यं विजानीयात्पुरुषेषु तथा वदेत् ॥ ४८ ॥
लग्नात्स्वाष्टमभाग(व) स्थैः पापैर्दुःखफलान्विता।
सौम्यग्रहैरसंमिश्रैः सर्वथा क्लेशमाप्नुयात् ॥ ४९ ॥

अल्प पुत्र योग

(१) यदि स्त्री की कुण्डली में पंचम भाव में शुभ ग्रह से युक्त चन्द्रमा, वृष, सिंह अथवा वृश्चिक राशि में हो तो स्त्री अल्प पुत्र वाली होती है। यदि शुभग्रह दृष्टि भी कर रहा हो तो पुत्र सन्तान कम ही होती है।

(२) स्त्री के अष्टम और द्वितीय भावों में यदि पापग्रह बैठे हों तो स्त्री का जीवन दुःखमय होता है। यदि शुभ ग्रहों का योग अथवा दृष्टि हो तो भी जीवन क्लेशकारक होता है।

बहुपुत्रयोग:

क्रूरग्रहे सुख(त)गते बहुप्रसवमादिशेत् ॥ ५० ॥

कन्याप्रसवयोग:

कन्याप्र[सूतिः स्त्रीग्रहाभ्यां युते सुते।

पुत्रप्रसवयोग:

पुंप्रसूतिः सुते युक्ते पुंराशौ पुरुषैर्ग्रहैः ॥ ५१ ॥

पूर्वोक्तफलस्य विवाहकालादावतिदेशः

[विवाहप्रश्नका]लेषु प्रोक्ता [क्त] मार्गं विचिन्तयेत् ॥ ५२ ॥]

वहुपुत्रयोग

(१) यदि चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह हों तो स्त्री की सन्तानें अधिक होती हैं।

(२) यदि पंचम स्थान में स्त्रीग्रह (चंद्र या शुक्र स्त्री राशि में हों तो कन्या सन्तान अधिक होती है।

मतान्तर : शनि एवं राहु की स्थिति में भी उपरोक्त फल घटित होते हैं।

सारावलियां

शुक्रासितौ यदि परस्परभागसंस्थौ
(शौक्रे च दृष्टिपथगावुदये घटांशे)
स्त्रीणामतीव मदनाग्निमद (दः) प्रवृद्धः
स्त्रीभिः स(श)मं च पुरुषाकृतिभिर्लभंते(भेत) ॥ ५३ ॥]

पुरुषिणीयोगः

रिक्तै वृं द्धे(वुंधे)न्दुभृगु[जै](र)विजे च मध्ये
शेषैर्बलेन सहितैर्विषमर्क्षलग्ने।
जाता भवेत्पुरुषिणी युवतिः सदैव
पुंश्चेष्टिताऽत्र चरविप (ति प्र)थित्य(ता)च लोके। ५४।

पुरुषिणी योग

(१) जिस स्त्री के जन्म काल में मध्यवली शनि हो और चन्द्रमा शुक्र, बुध ग्रह वल रहित हों और सूर्य, मंगल तथा बृहस्पति ये ग्रह वलवान हों तथा विषम राशि लग्न में हो तो वह स्त्री बहुत से पुरुषों द्वारा भोगी जाती है।

(२) जन्मकाल में शनि शुक्र परस्पर नवांश में हों, दोनों में परस्पर दृष्टि हो, अथवा शुक्र राशि (वृप या तुला) लग्न में हो और शनि का नवांश हो तो ऐसी कन्या युवावस्था आने पर अपनी सखी के साथ नकली लिंग के द्वारा कामाग्नि शान्त करती है अथवा अन्य प्रकार से अप्राकृतिक मंथुन करती है।

वैधव्ययोगभञ्जकप्रव्रज्यायोगः

क्रूरे जामित्रगते नवमे यदि खेचरो भवति नूनम् ।
प्रजज्य(व्रज्या)माप्नोति तदा नवमे(म)[स्थ]ग्रहसंभवोमै(वामे)वा॥५५॥

ब्रह्मवादिनीयोगः

दलिभे(लिभि)र्बुध[गुरु]शुक्रैः शशांकसहितैर्विलग्नो(ग्न)[गैः] समभे।
स्त्री ब्रह्मवादिनी स्यादनेकशास्त्रे(स्त्रा)[र्थकुशला च] ॥ ५६ ॥

ब्रह्मवादिनी योग

(१) यदि स्त्री की कुंडली में सप्तम भाव में पापग्रह हो तथा नवम भाव में कोई पापग्रह हो तो स्त्री सप्तमस्थ पाप ग्रह की दशा में संन्यासिनी बन जाती है।

(२) यदि स्त्री की कुंडली में बुध, गुरु शुक्र एवं चन्द्रमा बलवान हों और सम राशि लग्न में हो तो स्त्री ब्रह्मवादिनी अर्थात् बहुत से शास्त्रों की ज्ञाता, विदुषी विख्यात तथा मोक्ष प्राप्त करने वाली होती है।

इस प्रकार उपरोक्त सभी योगों का ध्यान स्त्रियों के विवाह काल, वरणकाल, कन्यादान में और प्रश्नकाल के समय रखना चाहिए।

वराहसंहितायां

लग्नगतसूर्यादिफलम्

मूर्तौ करोति दिनकृद्विधवां कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो द्द(द)रिज्ञां)द्राम्) ।
शु[क्रः]शशाङ्कत[न]यश्च गुरुश्च साध्वी-
मायुष्मतीं(युःक्षयं) च कुरुते नयनाभिरामां(ऽथ विभावरीशः) । ५७ ।

द्वितीयगतसूर्यादिफलम्

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमा
[दारिद्रचदुः]खमलि[नं] नार्यं (निय)तं द्वितीये ।
वित्तेश्वरा(री)मविधवां गुरुशुक्रसौम्या
नारीं प्रती(भू)ततनयां कुरुते शशांकः ॥ ५८ ॥

तृतीयगतसूर्यादिफलम्

सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये
कुर्युः सतीं बहुसुतां धनभागिनीं च ।
कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां
दुष्टं(मृत्युं) ददाति नियतं खलु सैंहिकेयः ॥ ५६ ॥

चतुर्थगतसूर्यादिफलम्

स्वल्पं पयः स्रवति सूर्यसुते चतुर्थे
दौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुते शशांकः ।
राहुः सपत्नि(त्न)सहितां क्षितिजोऽल्पवित्तां
दद्यात्कविः सुरगुरुश्च बुधश्च सौख्यम् ॥ ६० ॥

पञ्चमगतसूर्यादिफलम्

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ
चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च ।
राहुर्ददाति मरणं शनिरुग्ररोगं
कन्याप्रतीततनयां(सूतिमचिरात्) कुरुते शशांकः ॥ ६१ ॥

षष्ठगतसूर्यादिफलम्

षष्ठस्थितः शनिदिवाकरराहुभौमा(मा)
आयुर्धनं (कुर्युर्गुरुश्च) सुभगां कुरुते सु(श्वशरेषु) भक्ताम् ।
चन्द्रः करोति विधवासु(रामु)शना दरिद्रा(द्रां)
वेश्यां (मृद्धा) शशाकजगुरु(तनयः) कलहप्रियां च ॥ ६२ ॥

सप्तमगतसूर्यादिफलम्

सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्राः
कुर्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः ।
वैधव्यबन्धनगय(वध)क्षयचि (वि)त्तनाशं
व्याधिं प्रवासमरणं हि यथाक्रमेण ॥ ६३ ॥

अष्टमगतसूर्यादिफलम्

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं
मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः ।

सूर्यः करोति(त्य)विधवां सुभगां (सरुजं) महोजः
सूर्यात्मजो धनवतीं पतिवल्लभां च ॥ ६४ ॥

नवमगतसूर्यादिफलम्

धर्मास्थितौ कुजरवी सुखवित्तहीनां
जीवः सुकर्मनिरतां शशिजो भृगुश्च ।
[(धर्मे स्थिताः भृगुदिवाकरभूमिपुत्रा
जीवश्च धर्मनिरतां शशिजरुचरोगाम् ।)]
राहुश्च सूर्यतनयश्च करोति वन्ध्यां
कन्याप्रसू[ति]मथ वा(टनं) कुरुते शशांकः ॥ ६५ ॥

दशमगतसूर्यादिफलम्

राहुर्नभस्थ(स्त)लगतो विधवां करोति
पापे रतिं(ता) दिनकरश्च शनैश्चरश्च ।
भौमस्तु चाल्पतनयां (वित्तरहितां) कुलटां च चन्द्रः
श्टोस्ताय(शेषा ग्र)हा बहुसुतां(धनां) सुभगां च कुर्युः ॥ ६६ ॥

एकादशगतसूर्यादिफलम्

आये रविर्बहुसुतां धनिनीं शशांकः
पुत्रान्वितामविधवां रविजो धनाढ्ययाम् ।
राहुः करोति (त्य) विधवां भृगुजोऽर्थयुक्तां (क्ता
आ(मा) युष्मतीं कुज(सुर) गुरू (रुः) शशिजो धनाढ्याम् ॥६७॥

द्वादशगतसूर्यादिफलम्

अंते भृगु(गुरु)र्धनवतीं दिनकृद्दरिद्रां
चन्द्रो धनव्ययकरीं कुलटां च राहुः
साध्वीं गुरुः(भृगुः]शशिसुतो बहुपुत्रपौत्रां
अन्य(पान)प्रसक्तहृदयां रविजः कुजश्च ॥ ६८ ॥

श्लोक ५७ से ६८ का उल्लेख भाव फल विचार इस पुस्तक में है ।

सूर्यनक्षत्रात् चन्द्राश्रितनक्षत्रफलम्

सूर्यज्ञा(क्षा)त्त्रिषु मूर्ध्नि तापसहिता वक्त्रे तु सप्तर्क्षके
मिष्टान्नास्तनगांत(गत्रि) भे पतिरता हृद्धा(द्रा)मभे सौख्यभाक् ।

नाभौ च त्रिषु भेषु भर्तृसुखभाग्युग्मे रसर्क्षे सदा
कामार्ता हि भवेद्वधूश्च सततं [स्त्री]जन्म (जात) कोक्तं फलम् ॥६६॥

सूर्य नक्षत्र से चन्द्राश्रित नक्षत्र का फल

नारी चक्र में स्त्रियाकार रूप बना कर मस्तक पर तीन नक्षत्र दें, मुंह में सात नक्षत्र दें, ठोड़ी पर तीन नक्षत्र रखें, दोनों वक्षों पर चार चार नक्षत्र रखें, तीन नक्षत्र हृदय पर तथा तीन नक्षत्र गुप्तांग में रखें। अत्र स्त्री कुंडली में सूर्य स्थित नक्षत्र से शिर से नीचे की ओर गणना करें जिस स्थान पर भी चन्द्रमा द्वारा अधिकृत नक्षत्र आयेगा उसका फल निम्न प्रकार से कहा गया है –

सिर यानि माथे पर ही चन्द्र पड़े तो स्त्री हमेशा सन्ताप करने वाली होती है। यदि मुंह में नक्षत्र पड़े तो अच्छा भोजन और मिष्टान्न खाने वाली तथा सुखी होती है। ठोड़ी में पड़े तो उसे पति की चिन्ता रहती है। चूचियों में नक्षत्र पड़े तो वह पति का प्रेम प्राप्त करने में कुशल होती है। छाती या हृदय पर पड़े तो वह अत्यन्त हर्ष देती है। गुप्त स्थान में पड़े तो वह बहुत अधिक कामुक होती है।

विषकन्यायोगाः

यवनजातके

भद्रा तिथिर्मंदाऽऽश्लेषा शतभिक्क(वारुणं कृ)त्तिका तथा ॥
मन्दाररविवारेषु विषकन्या प्रजायते ॥ ७० ॥
द्वादशी वारुणं सूर्ये विशाखा सप्तमी कुजे ॥
मन्दाश्लेषाद्वितीया च विषकन्या प्रजायते ॥ ७१ ॥

त्रैलोक्यप्रकाशे

रिपुक्षेत्रस्थितौ द्वित्र(भर्तृ)लग्ने यत्र शुभग्रहौ ॥
क्रूरश्चैकस्तदा जाता भवेत्स्त्री विषकन्यका ॥ ७२ ॥

योगजातके

लग्ने सौरी रविः पुत्रे धर्मस्थो धरणीसुतः ॥
अस्मिन्योगे तु जाता स्त्री सा भवेद्विषकन्यका ॥ ७३ ॥

इति विषकन्यायोगाः

विषकन्यायोगापवादः

लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च ।
यू (द्यू) नस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषांगनाख्यम् ॥ ७४॥

विष कन्या योग

(१) जिस स्त्री का जन्म भद्रा तिथियों (२-७-१२) में रवि, मंगल और शनिवार को और आश्लेषा शतभिषा या कृत्तिका नक्षत्र इन सब के संयोग से हो तो वह कन्या निश्चय ही विष कन्या की प्रकृति की होती है ।

(२) द्वादशी तिथि हो, रविवार हो और शतभिषा नक्षत्र हो, सप्तमी तिथि मंगलवार हो और विशाखा नक्षत्र हो अथवा द्वितीया तिथि शनिवार और अश्लेषा नक्षत्र हो तो भी वह विषकन्या होती है ।

(३) पति के जन्म लग्न से षष्ठ भाव में या कहीं पर भी नीच राशि में एक शुभग्रह हो अथवा दो शुभ ग्रहों के मध्य एक पापग्रह हो तो उस स्त्री के द्वारा विष कन्या का जन्म होता है ।

(४) यदि लग्न में सूर्य शनि का योग हो, पंचम और नवम में यदि चन्द्रमा हो तो ऐसे योग में विष कन्याओं का जन्म होता है ।

(५) लग्न अथवा सप्तम में शुभग्रह हो या सप्तमेश हो तो उपरोक्त सभी विष कन्या योग भंग हो जाते हैं ।

वन्ध्यायोगः काकवन्ध्यायोगश्च

रन्ध्रगौ चन्द्रसूर्यौ चेद्विलग्नान्निजराशिगौ ।
बन्ध्याऽथ चन्द्रमा(भूमिजे) सौम्यौ(म्ये) काकबंध्या तदा भवेत् ॥७५॥

मृतपुत्रायोगः गर्भस्रवायोगश्च

मृतापत्या च शुक्रेऽज्यौ सासौरो गर्भस्रवा भवेत् ॥ ७६ ॥

वन्ध्या । काक वन्ध्या । मृत संतान योग ।

(१) लग्न से अष्टम स्थान में यदि स्व राशि गत सूर्य या चन्द्र हो या अष्टम में कर्क या सिंह राशि पड़ी हो तो उसमें सूर्य चन्द्र युत हो तो कन्या सन्तानहीन होती है ।

(२) यदि बुध राशि (मिथुन या कन्या) अष्टम भाव में पड़ी हो या कर्क राशि अष्टम में हो और उसमें चन्द्रमा बुध हो तो वह कन्या काकबन्ध्या होती है ।

(३) शनि अथवा मंगल की राशियों में से कोई भी लग्न में हो और चन्द्र शुक्र का भी संयोग तथा पापग्रह की दृष्टि लग्न में हो तो स्त्री अवश्य सन्तानहीन (बाँझ) होती है ।

(४) सप्तम भाव में सूर्य राहु का योग हो या अष्टम में शुक्र गुरु तथा राहु का योग हो और पंचम में कोई पाप ग्रह हो तो कन्या मृत सन्तान को जन्म देती है । (इसमें गर्भपात की स्थिति भी आती है ।)

अथ मेषादिराशिगतचन्द्रफलम्

अथ बृहज्जातके---

चन्द्रे अजस्थे वनिता प्रगल्भ(ल्भा) जाता च वै कृत्यपरा प्रधाना ।
पुत्रान्विता सत्यपरा कुलेष्टा स(सु) रूपगात्रा पतिवल्लभा च ।। ७७ ।।
वृषस्थिते रोहिणीवल्लभे च विनीतवेषा ब(बहु)शास्त्रदक्षा ।
पतिव्रता वित्तविवेकयुक्ता नारी भवेत्कामकलाविदग्धा ।। ७८ ।।

युग्मस्थिते शीतकरे विनीता भवेत्सुरूपा प्रियदर्शना च ।
नानार्थमानैः सहिता विदग्धा परोपकारातिरता सुनम्रा ।। ७९ ।।
कर्कस्थिते शीतकरे(रें)बुजाती(क्षी)
नारी भवेद्वि(त्पूज्य) तमा चके (जने) षु ।
संमानिनी बान्धवलोकमान्या
हतारिपक्षा द्विजदेवभक्ता ।। ८० ।।

सिंहस्थिते चन्द्रमसि प्रधाना नारी भवेच्छौर्यसमन्विता च ।
प्रियामिबा कृत्यपरा सुवस्त्रा उदारवेषा सुभगा च पुंसाम् ।।८१।।
कन्याश्रिते शीतकरे च जाता नारी भवेद्वित्तचतुष्पदाढ्या ।
जात्या हिता स्त्रीहितबन्धुवर्गा पतिव्रता पुत्रवती मनोज्ञा ।। ८२ ।।
तुलाधरस्थे धृतधर्मयोगा जाता भवेत्स्त्रीहितबन्धुवर्गे र्गा) ।

पतिव्रता पुत्रवती मनोज्ञा विवर्जिता क्रोधमनोभवाभ्याम् ॥ ८३ ॥
चन्द्रे अलिस्थे बहुगुप्तवेषा चलस्वभावा सुविलुप्तचेष्टा ।
हिता गुरूणां नियमैः समेता प्रभूतकेशा विजितारिपक्षा ॥ ८४ ॥
धनुर्धरस्थे शशिनि कृपाढ्या
नारी भवेद्वित्ततरा सभागा (ग्या) ।
मोम (जन) प्रिया प्राण (णि) हिताऽनुकूला
प्रियानना स्त्रीजननी विनीता ॥ ८५ ॥
चन्द्रे मृगस्थे विकरालदंष्ट्रा
नारी भवेच्छौर्यपरा मनोज्ञा ।
विद्याषि(र्जि) का सत्यपराऽतु(नु) रक्ता
प्रभूतकेशा विगताभिमाना ॥ ८६ ॥
घटास्थिते शीतकरे स (च) जांता नारी भवेच्चंद्रमसे (समा) नवक्त्रा ।
सदा सुशीला सुतवित्तयुक्ता शुभानुरक्ता प्र (द)यितानुकारी ॥ ८७ ॥
मीनाश्रिते शीतकरे नु (तु) जाता नारी भवेद्धर्मपरा सुशीला ।
यतेन्द्रिया सर्वकलासु दक्षा नवाभिरामा परमा धनाढ्या ॥ ८८ ॥
श्लोक ७७ से ८८ तक का पाठ महिलाएँ एवं ज्योतिष के अन्तर्गत विभिन्न राशियों का फल जैसा है ।

अथ मेषादिलग्नफलम्

मेषोदयेऽशुद्ध(द्धि) परा नृशंसा नारी भवेत्क्रोधपरा सदैव ।
श्लेष्माधिका निष्ठुरवाक्ययुक्ता सदा विरक्ता निजवन्धुवर्गा ॥८९॥
वृषोदये सत्यरता मनोज्ञा विनीतचेष्टा पतिवल्लभा च ।
नारी भवेत्सर्वकलासु दक्षा स्ववर्गरक्ता हितदेवभक्ता ॥ ९० ॥
तृतीयलग्नेऽतिकठोरवाक्या स्त्री कामसक्ता गुणवर्जिता च ॥ ९१ ॥
लग्ने कुलीरे च भवेत्प्रसूता नारी प्रभूता विनयैः समेता ।
बन्धुप्रिया साधुसुशीलयुक्ता प्रजान्विता सर्वसुखैः समेता ॥ ९२ ॥

सिंहस्य (स्थ)लग्ने जनिताऽतितीक्ष्णा भवेत्कफाढ्स(ढ्या) कलहप्रिया च
नानामयैः पुष्टशरीरगात्रा परोपकारे निरता सुवेषा ॥ ९३ ॥
कन्योदये स्त्री विनयाभिनीता सौभाग्यसौख्यैः सहिता च साध्वी ।
भवेत्स्ववर्गे बहुधर्मभक्ता जितेन्द्रिया सर्वकलासु दक्षा ॥ ९४ ॥
तुलाख्यलग्ने चिरकालवेषा भवेत्सुवन्ध्या प्रणयेन हीना ।
संगर्विता कान्तिविवर्जिता च कृष्णाधिका त्यागविवर्जिता च ॥ ९५ ॥
नारी भवेद्वृश्चिकलग्नजाता सुरूपगात्रा नयनाभिरामा ।
ख (सु)गण्यशीला च पतिव्रता च गुणाधिका सत्यपरा सदैव ॥ ९६ ॥
चापोदये या वनिता सु (प्र)जाता सा युद्धशौण्डा पुरुषानुकारा ।
शा श)स्त्रेषुसाध्या विधवा कठोरा निःस्नेहचित्ता प्रणयेन हीना ॥९७॥
मृगोदये स्त्री सुभगा च सत्या तीर्थानुरक्ता हतशत्रुपक्षा ।
प्रधानकृत्या प्रथिता सुकेशा गुणान्विता पुत्रवती सुशीला ॥ ९८ ॥
कुंभस्य(स्थ)लग्ने प्रमदाऽभिजाता पतिप्रिया बान्धवलोकमान्या ।
स्त्रीजन्मदक्षा क्षमता(जा)दिता च नित्ये गु(ग)णानां सुविरुद्धचेष्टा ।९९।
मीनोदये या प्रमदाऽभिजाता पतिप्रिया बान्धवलोकमान्या ।
सुनेत्रकेशा सुरविप्रभक्ता विद्यार्थिता (नी) प्रीतिकरी गुरूणाम् ।१००।

इति बृहज्जातके स्त्रीलग्नफलम्

मेष आदि लग्न का फल

मेष लग्न में उत्पन्न नारी शुद्ध स्वभाव की परन्तु दूसरे के ऊपर दोषारोपण करने वाली होती है । उसे क्रोध भी शीघ्र आ जाता है । उसकी प्रकृति पित्त प्रधान होती है, तथा वह बातचीत के दौरान कटु वाक्यों का प्रयोग करने में नहीं हिचकती है । अपने भाई बहनों से वह विरक्त रहती तथा परिवार में सबसे बड़ी होती है ।

वृष लग्न में जन्म लेने वालो स्त्री सत्य बोलने वाली, मन की जानने वाली, अच्छे और विनीत कार्य करने वाली, पतिप्रिया और सर्वकलाओं में दक्ष और अपने परिवार का हित चाहने वाली तथा

साधु देवता और विद्वानों का आदर करने वाली होती है।

मिथुन लग्न में नारी अति कठोर वाक्य बोलने वाली तथा व्यंग करने में चतुर होती है । ऐसी स्त्री गुणों से हीन, कार्य करने में असंतुष्ट, काम क्रीड़ा की शौकीन तथा परिवार से वैर मोल लेने वाली होती है ।

कर्क लग्न में उत्पन्न नारी अधिक सन्तान वाली होती है । इसके अन्दर अत्यधिक नम्रता होती है । वह साधु-सन्तों की सेवा में तत्पर, बन्धु वर्ग को प्रिय एवं शील स्वभाव युक्ता होती है । ऐसी स्त्री सुन्दर संतान वाली और सर्व-सुखों से सम्पन्न होता है ।

सिंह लग्न में उत्पन्न कन्या बहुत ही तेज मिजाज, व तीक्ष्ण स्वभाव वाली होती है । वह कफ विकार से युक्त, तथा कलह प्रिय स्वभाव की होती है । उसका शरीर नाना प्रकार के रत्नों से युक्त होता है, शरीर से पुष्ट परन्तु वह इष्टों की भलाई करने में भी पीछे नहीं हटती है । ऐसी स्त्री को अच्छे वस्त्रों में रहना अच्छा लगता है ।

कन्या लग्न में उत्पन्न स्त्री विनयशील एवं व्यवहार कुशल होती है । वह सादे स्वभाव की तथा सभी प्रकार सुख एवं सौभाग्य को प्राप्त करने वाली होती है । वह अपने परिवार एवं बन्धु वर्ग के प्रति स्नेहाधीन और बहुत सी कलाओं की जानकारी रखती है । कन्या लग्न में उत्पन्न नारी इच्छाओं का दमन करने वाली या जितेन्द्रिय होती है।

तुला लग्न में कन्या पुराने किस्म की वेश-भूषा धारण करने वाली तथा बहुत समय तक सन्तानहीन रहती है । उसे प्रणय सम्बन्ध रखने का अवसर नहीं मिलता है । वह कुछ घमण्डी और ओछे स्व-भाव की, कान्तिहीन तथा काले रूपरंग की होती है । वह संयम तथा त्याग से हीन होती है ।

वृश्चिक लग्न की नारी देखने में अति सुन्दर, बड़े शरीर वाली और प्रभावशाली व्यक्तित्व की होती है, उसका नाम विशेष प्रकार के

लोगों के मध्य लिया जाता है और वह अपने पर अनुरक्त रहती है। उसके अन्दर अनेक प्रकार के गुण होते हैं। वह सभी से सत्य व्यवहार रखने वाली होती है।

धनु लग्न में जन्मी कन्या अच्छी सन्तान को जन्म देती है। परन्तु वह युद्ध कुशल और पुरुषों का अनुकरण करने वाली या पुरुषाकृति के समान होती है। वह शास्त्रादि में रुचि रखने वाली वैधव्य को जल्दी प्राप्त होने वाली और कठोर स्वभाव की होती है। वह स्वयं भी स्नेह शून्य होती है और दूसरों से प्रेम पाने में असफल रहती है।

मकर लग्न में जन्मी कन्या भाग्य तथा सत्य बोलने वाली और घूमने फिरने की शौकीन होती है। वह शत्रुओं को पराजित करने वाली हो तो, ऐसी स्त्री विशाल आकृति की, अच्छे केश वाली, गुणवती, पुत्रवती और श्रेष्ठ शील स्वभाव वाली मानी जाती है।

कुम्भ लग्न में पैदा हुई नारी वड़े और सम्पन्न परिवार वाली और पतिप्रिया होती है। ऐसी स्त्री वन्धुओं में और समाज में पूजित होती है। ऐसी स्त्री कन्या सन्तान अधिक पैदा करती है। क्षमाशील, गुणवती परन्तु उलटे काम करने वाली होती है।

मीन लग्न में जन्म लेने वाली कन्या अभिजात वर्ग की पति प्रिया और समाज में प्रतिष्ठा पाने वाली और वन्धु वान्धवों की हितैषिणी होती है। उसके नेत्र वहुत सुन्दर, देवता ब्राह्मणों की भक्त तथा उच्च शिक्षा प्राप्त एवं गुरु वर्ग से प्रीत रखने वाली होती है।

A